वर्ष-1 | अंक -1 | विक्रम संवत 2081 | सितंबर 2024

सी-डैक
CDAC

सुधा

वार्षिक हिंदी पत्रिका

प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING, PUNE

राजभाषा गतिविधियाँ

सुधा

प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे
राजभाषा अनुभाग
एकदिवसीय
हिंदी सॉफ्टवेयर/टूल्स प्रशिक्षण कार्यशाला

एस. कृष्णन, आई.ए.एस.
सचिव
S. Krishnan, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Electronics &
Information Technology (MeitY)
Government of India

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे द्वारा वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **'सुधा'** के प्रथम अंक का प्रकाशन हिंदी दिवस के अवसर किया जा रहा है । इस पत्रिका के प्रकाशन से जहां एक ओर राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सही और सार्थक दिशा मिलेगी, वहीं कर्मचारियों की सृजनशीलता भी उभरकर सामने आएगी । मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से प्रगत संगणन विकास केंद्र, पुणे में राजभाषा पूरी तरह से पल्लवित और पुष्पित होगी और कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की प्रेरणा मिलेगी ।

'फले-फूले हिंदी – आगे बढ़े हिंदी' इसी कामना के साथ **'सुधा'** पत्रिका के प्रथम अंक के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

एस. कृष्णन

(एस. कृष्णन)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Digital India
Power To Empower

इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, 6, सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली–110003 / Electronics Niketan, 6, C.G.O. Complex, New Delhi-110003
Tel. : 011-24364041 • email : secretary@meity.gov.in

“जो लोग अच्छाई करने में स्वयं
को ज्यादा व्यस्त रखते हैं, वह
स्वंय को अच्छा बनने के लिए
समय नहीं निकाल पाते हैं।

-रवीन्द्रनाथ टैगोर”

ई. मगेश
महानिदेशक
E. Magesh
Director General

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
A Scientific Society of the Ministry of Electronics and Information Technology, Government of India

सी-डैक इनोवेशन पार्क
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, Panchavati
Pashan, Pune - 411008, India
फ़ोन / Tel:+91-20-2586 8080
फ़ैक्स / Fax: +91-20-2586 8081
ई-मेल / email: **dg@cdac.in / magesh@cdac.in**
www.cdac.in

संदेश

देश की सामासिक संस्कृति की वाहक है हिंदी। हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, अपितु यह भारत की आत्मा है। यह केवल कार्यालय में काम-काज की ही नहीं, अपितु जनसंपर्क और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में एक सशक्त कड़ी है।

प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) में राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए अनेकानेक सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं और हम तकनीकी रूप से भी भारतीय भाषाओं को सशक्त करते आ रहे हैं। भारतीय भाषाओं के साथ ही राजभाषा की तकनीकी समृद्धि के लिए सी-डैक के सभी केंद्रों द्वारा कई सारे अति महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर, साधन आदि विकसित किए गए हैं, जिनके उपयोग से केवल भारत में ही नहीं, अपितु विश्वभर में राजभाषा पूरी तरह पल्लवित और पुष्पित हो रही है।

यह जानकर हृदय पूरी तरह से आह्लादित है कि प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक), पुणे द्वारा वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **'सुधा'** के प्रथम अंक के प्रकाशन का शुभारंभ हिंदी दिवस के अवसर पर हो रहा है। यह सदा स्वागत योग्य पहल है। इससे कार्यालयीन प्रयोग में राजभाषा की ध्वजा और भी बुलंद होगी और कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति उत्साह का संचार होगा।

'हिंदी बने हर कार्यालय रूपी उपवन की भाषा - है मेरी यही अभिलाषा' इसी कामना के साथ **'सुधा'** पत्रिका के प्रथम अंक के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

ई. मगेश

(श्री ई. मगेश)

"जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई

- हरिवंशराय बच्चन"

कर्नल ए. के. नाथ (सेवानिवृत्त)
कार्यकारी निदेशक, पुणे
Col. A.K. Nath (Retd.)
Executive Director, Pune

सी-डैक इनोवेशन पार्क
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, Panchavati
Pashan, Pune - 411008, India
फ़ोन / Tel:+91-20-2586 8082
फ़ैक्स / Fax: +91-20-2586 8083
ई-मेल / email: asheet.nath@cdac.in
www.cdac.in

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) पुणे केंद्र की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'सुधा' के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित राजभाषा नीति एवं समय-समय पर जारी दिशा निर्देशों का अनुपालन करना हम सभी का संवैधानिक उत्तरदायित्व है। इस संबंध में, जनवरी 2024 में संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के माननीय सदस्यों द्वारा सीडैक पुणे केंद्र का निरीक्षण किया गया, जिसके दौरान कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए, जिस हेतु गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के प्रति सी-डैक पुणे पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

तकनीकी संस्थान होने के चलते, सी-डैक द्वारा तकनीकी क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं को सशक्त करने के लिए कई सारी महत्वपूर्ण पहल की गई हैं और अनवरत रूप से की जा रही है। हिंदी के साथ ही भारतीय भाषाओं को तकनीकी रूप से समृद्ध करते हुए कई सारे भाषा संबंधी साधन, सॉफ्टवेयर आदि भी विकसित किए जा रहे हैं, जिससे विश्व स्तर पर हिंदी के साथ ही भारतीय भाषाएं पल्लवित और पुष्पित हो रही हैं।

हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो सांस्कृतिक विविधताओं से भरे हुए इस देश को एक सूत्र में जोड़कर रख सकती है। राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आज हिंदी का महत्व विश्व भाषा के रूप में बढ़ रहा है। विश्व की बड़ी-बड़ी कंपनियां अब हिंदी को लेकर उत्सुक दिखाई देती हैं और अपने हर उत्पाद को हिंदी मे भी उपलब्ध कराने का प्रयास करती हैं। तकनीकी कार्यालय होते हुए भी सीडैक पुणे केंद्र में भी हिंदी का प्रयोग पहले की तुलना में कई गुना बढ़ गया है। हमारी पूरी कोशिश रहती है कि हम ज्यादा से ज्यादा पत्र व्यवहार एवं अन्य कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करें।

इस पत्रिका के अतिरिक्त सीडैक पुणे केंद्र में कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं भी स्थापित की गई हैं।

इस प्रकार के प्रकाशन और प्रोत्साहन से सीडैक के अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी लेखन को लेकर व्याप्त झिझक दूर होगी, जिससे कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा मिलेगा और उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का अवसर प्राप्त होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं प्रकाशन में सहयोगी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

असीत नाथ

कर्नल ए. के. नाथ (सेनि.)

"खुशी पाने का कोई भी रास्ता
नहीं है, बल्कि खुद खुश रहना
सबसे बड़ी खुशी होती है।

- महात्मा गौतम बुद्ध"

संपादक की कलम से

आप सबके समक्ष प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) पुणे की वार्षिक गृह-पत्रिका 'सुधा' का प्रवेशांक प्रस्तुत करते हुए, अत्यधिक हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

हिंदी के बहुत अधिक साहित्यिक या क्लिष्ट शब्दावली का कम से कम प्रयोग करते हुए, हिंदी के सरल एवं सहज प्रवाहमय रूप को अपनाना चाहिए तथा अपने सभी कार्य हिंदी में करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। सरल, सहज एवं सुगम हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग बिना किसी हिचकिचाहट के करने से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गुणात्मक प्रगति होगी।

काफी समय से बहुप्रतिक्षित 'सुधा' को साकार करने की पहल को पंख मिला और आज यह साहित्य की विभिन्न विधाओं को समेटे हुए आप सभी सुधी पाठकों पर सुधारस बरसाने के लिए आतुर है। इस पत्रिका के माध्यम से पुणे केंद्र के सुधी सदस्यों को अपनी सृजनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा को सबके समक्ष लाने का सुअवसर मिला है।

सी-डैक पुणे केंद्र में राजभाषा को पूरी तरह से सशक्त करने, सर्व सुलभ बनाने और पल्लवित-पुष्पित करने के लिए, केंद्र का राजभाषा अनुभाग सदैव प्रयासरत और सजग है। केंद्र में राजभाषा के सार्थक उपयोग को बढ़ाने के लिए कई सारे महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं और सुधा का प्रकाशन भी उन्हीं में से एक है।

यह पत्रिका अपनी इंद्रधनुषी छटा का रसास्वादन कराने के लिए विविधता को समेटे हुए है। तकनीकी संस्था में लेखों का संकलन अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है, विशेषकर जब यह पहली बार हो और लेखों की भाषा हिंदी हो। इसलिए, सभी की इच्छाओं का सम्मान करते हुए अनेक विधाओं को जोड़ने का निर्णय लिया गया, जिससे हर सदस्य के रुचिकर विषय या विधा का समावेश हो सके। इसमें कथा/कहानी, कविता, यात्रा संस्मरण, भाषा विमर्श, साहित्य यात्रा, तकनीकी लेख संकलन, कला (चित्रकारी) के साथ ही पारिवारिक स्तंभ को भी विशेष जगह दी गई है, जिससे सी-डैक पुणे केंद्र के कार्मिकों के साथ ही उनके पारिवारिक सदस्यों को भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा उजागर करने का सुअवसर प्राप्त हो सके।

संपादक मण्डल के सभी सदस्यों ने आगत लेखों को कई बार पढ़ा और एक-एक लेख पर विस्तृत चर्चा करके उसमें अपेक्षित संशोधनों के लिए रचनाकारों को उनकी रचनाएं वापस प्रेषित की गईं और संशोधित प्रति आने पर पुनः संपादक मण्डल के सभी सदस्यों ने एक-एक रचना पर विस्तृत चर्चा की। संपादक मण्डल द्वारा प्रत्येक रचना की मूल भावना को बनाए रखते हुए वर्तनी, व्याकरण आदि का संशोधन करते हुए रचनाओं को प्रकाशन हेतु स्वीकार किया गया है। कुछ रचनाएं इस बार प्रकाशन से वंचित रह गई हैं, उम्मीद करता हूँ कि अपेक्षित संशोधनों के पश्चात संभवतः आगामी अंक में उनका प्रकाशन हो सके।

इस पत्रिका में अपनी रचनाओं से योगदान देने वाले सभी सुधी रचनाकार बधाई के पात्र हैं तथा इसके सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल के सहयोग को नमन है। सी-डैक पुणे के कार्यकारी निदेशक महोदय के साथ ही उन सभी वरिष्ठ अधिकारियों, कर्मचारियों को हार्दिक आभार, जिनके सहयोग और मार्गदर्शन के बिना इस पत्रिका को साकार रूप में प्रस्तुत करना सफल नहीं हो पाता।

इस पत्रिका के विविध स्तंभों पर आप सुधी पाठकों के अमूल्य सुझाव का सहर्ष स्वागत रहेगा, क्योंकि आपके सुझाव इस पत्रिका को और समृद्ध करते हुए सार्थकता प्रदान करने की दिशा में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित होगी और सी-डैक पुणे केंद्र के सदस्यों को साहित्यिक गरिमा प्रदान करेगी।

भारतेंदु युग के प्रमुख स्तंभ साहित्यकार पं. प्रताप नारायण मिश्र के शब्दों में -

चहहु जु साँचो निज कल्यान। तौ सब मिलि भारत-संतान॥
जपो निरंतर एक जबान। हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान॥
तबहिं सुधरिहै जन्म निदान। तबहिं भलो करिहै भगवान॥
जब रहिहै निशि-दिन यह ध्यान। हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान॥

सुधा वार्षिक हिंदी पत्रिका

अंक - 1 | वर्ष - 1 | विक्रम संवत 2081 | सितंबर 2024

संरक्षक
कार्यकारी निदेशक/केंद्र प्रमुख
सी-डैक, पुणे
ई-मेल: edpo@cdac.in

प्रधान संपादक
डॉ. सुधीर कुमार मिश्र
संयुक्त निदेशक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: smishra@cdac.in

संपादक मण्डल
सुश्री लक्ष्मी पानट
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: lakshmip@cdac.in

सुश्री असीमा मिश्रा
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: asima@cdac.in

श्री अमित गुप्ता
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: gamit@cdac.in

सुश्री ऋचा रस्तोगी
वैज्ञानिक-एफ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: richar@cdac.in

सुश्री सायली गोडबोले
वैज्ञानिक-डी, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: sayalia@cdac.in

श्री प्रभाकर पाण्डेय
परियोजना अधिकारी, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: prabhakarp@cdac.in

सुश्री अस्मिता गारगोटे
प्रबंधक, मा.सं.वि., सी-डैक, पुणे
ई-मेल: asmitag@cdac.in

सुश्री जयश्री पोकळे
कार्यकारी व्यवस्थापक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: jayshreep@cdac.in

पत्रिका हेतु सुझाव
ई-मेल: sudha-pune@cdac.in

कला निर्देशक
श्री मनोज गोपीनाथ
प्रमुख तकनीकी अधिकारी-II,
सी-डैक, पुणे
ई-मेल: manoj@cdac.in

मुखपृष्ठ रचना
श्री किशोर पाटील
प्रमुख तकनीकी अधिकारी-I,
सी-डैक, पुणे
ई-मेल: kishorp@cdac.in

पुस्तिका संरचना एवं कलाकृती
श्री विवेकानंद पाटील
निजी सहायक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: vivekanandp@cdac.in

प्रशासनिक सहयोग
श्री श्रीनिवास पवनीकर
संयुक्त निदेशक (सं.नि.) सी-डैक, पुणे
ई-मेल: spownikar@cdac.in

डिजिटल संस्करण
श्री एग्नेलो जोसेफ रॉड्रिगो
वैज्ञानिक-इ, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: agnelor@cdac.in

श्री शशांक कुमार
निजी सहायक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: kshashank@cdac.in

संयोजिका
सुश्री सुनैना शर्मा
कार्यकारी व्यवस्थापक, सी-डैक, पुणे
ई-मेल: sunainas@cdac.in

राजभाषा अनुभाग
प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)
पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008 महाराष्ट्र (भारत)

अनुक्रमणिका

1. संपादकीय संवाद

कर्नल अशीत कुमार नाथ (से.नि.) के साथ 1

2. तकनीकी लेख संकलन

लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) के व्यावहारिक अनुप्रयोग - नेहा गुप्ता 4

ऑप्टिकल कैरेक्टर रेकग्निशन (ओसीआर) - मनीष कुमार गुप्ता 7

ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी: विकेंद्रीकृत, पारदर्शी तथा अपरिवर्तनीय - नितेश कुमार हरणे 11

अनुगा हाइड्रो और एचपीसी (उन्नत सक्षम कंप्यूटिंग) पर बाढ़ का पूर्वानुमान- गिरीषचंद्र येंडरगाये 15

सुरंग में वेंटिलेशन प्रणाली - डॉ. विकास कुमार एवं दीपक यादव 17

3. साहित्य यात्रा

पधारो म्हारे देश - किशोर पाटील 22

4. भाषा विमर्श

भाषा का अभिसरण - डॉ. अतिउर रहमान खान 25

मराठी भाषा : उत्पत्ति से वर्तमान तक का सफर - तेजस विलास मुर्डीव 28

हिंदी : भारत की धड़कन - सविता गौड़ा 30

5. यात्रा संस्मरण

हमारी कश्मीर यात्रा - तानाजी झेंडे एवं अरुण वर्मा 32

मेरा नाम बॉण्ड है- रस्किन बॉण्ड! - लक्ष्मी पानट 35

6. कविता

प्रियतम तुम आन मिलो - ऋचा रस्तोगी 37

संकल्प - अमित गुप्ता 38

जग-पाहुणे - राजेश कुमार मीणा 39

मानवता : समाज की अहम कड़ी - अक्षय फराकटे 40

खरोंच - दिबेंदु कर्मकार 41

जिंदगी की भाग-दौड़ - नीलिमा साहू 42

नारी - राजेश कुमार मीणा 43

7. कथा/कहानी

वर्क-फ्रॉम-होम एवं वर्क-फॉर-होम : मेरा अनुभव - असीमा मिश्रा 44

सिक्कों की यात्रा - समीर गोडांबे 46

मैं कौन हूँ? - राहुल बोराडे 48

8. चित्रकला

नारी शक्ति - किशोर पाटील 49

शनिवार वाड़ा - राहुल रानडे 50

गाँव- प्रशांत खैरनार 51

उस्ताद जाकिर हुसैन - विवेकानंद शिवशंकर पाटील 52

9. गैर-तकनीकी लेख संकलन

मानव संसाधन प्रबंधन (एच.आर.एम.): आपके संस्थान की धड़कन- जयश्री पोकळे 53

किले रायगड: भारत की ऐतिहासिक धरोहर - डॉ. दामोदर मगदूम 55

एक कथा - श्रीअन्न को अपनाने की - महेश मेनन 57

कथक नृत्य: आज और कल - अस्मिता गारगोटे 59

पसायदान - विश्व प्रार्थना - लक्ष्मी पानट 61

हिंदू : एक शब्द, धर्म या परंपरा - शुभांगनी असाटी 63

श्री गणपति पूजा, परंपरा एवं पद्धति - सायली गोडबोले 66

10. पारिवारिक स्तंभ

कविता - मेरी माँ - कु. देवांशी खरे, पुत्री श्री मनोज खरे 69

चित्रकारी - कु. श्रुति किशोर पाटील, पुत्री श्री किशोर पाटील 70

चित्रकारी - चि. आयुष बोराडे, पुत्र श्री राहुल बोराडे 70

चित्रकारी - कु. जिया रोशन सोभनी, पुत्री सुश्री दीप्ति सोभनी 71

चित्रकारी - कु. पूर्वा गोडबोले, पुत्री सुश्री सायली गोडबोले 71

चित्रकारी - चि. यायिन सिंह, पुत्र श्री योगेश सिंह 72

चित्रकारी - कु. लास्या येनिशेट्टी, पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी 72

चित्रकारी - कु. आरना गुप्ता, पुत्री श्री मनीष गुप्ता 73

चित्रकारी - चि. परम तांबे, पुत्र सुश्री प्रितम तांबे 73

11. पुरस्कार की योजनाएँ 74

12. प्रतियोगीता परिणाम-वर्ष 2023 78

संपादकीय संवाद
कर्नल अशीत कुमार नाथ (से.नि.) के साथ

मैं अस्मिता गरगोटे, प्रबंधक, मानव संसाधन, सीडैक मुख्यालय, सीडैक पुणे केंद्र की वार्षिक हिंदी पत्रिका सुधा के संपादकीय मण्डल की तरफ से आप सभी के समक्ष हमारे आदरणीय कार्यकारी निदेशक, पुणे के साथ हुई बातचीत का सारांश प्रस्तुत कर रही हूँ।

नमस्कार महोदय, सी-डैक कार्यकाल के दौरान आपका अनुभव कैसा रहा?

मुझे सी-डैक में विविध पदों पर कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरा सी-डैक का सफर कार्यकारी निदेशक कोलकाता के तौर पर शुरू हुआ। बाद में, मुझे कार्यकारी निदेशक, मुख्यालय और कार्यकारी निदेशक, पुणे की भी जिम्मेदारी सौंपी गई। इन भूमिकाओं को बखूबी निभाने के कारण मुझे कुछ समय के लिए सी-डैक महानिदेशक का अतिरिक्त प्रभार भी सौंपा गया, जो कि अत्यधिक महत्वपूर्ण और संवेदनशील भूमिका थी। इन सभी भूमिकाओं को निभाते वक्त विभिन्न विचारों, प्रवृत्तियों, संस्कारों और संस्कृतियों वाले व्यक्तियों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। सभी सहकर्मियों ने अपने बहुमूल्य अनुभवों, तकनीकी जानकारियों एवं कार्यशैलियों से मेरे दृष्टिकोण को और भी समृद्ध किया। इन्हीं की वजह से मैं यह सभी जिम्मेदारियाँ प्रभावी ढंग से और आत्मविश्वास के साथ निभा पाया। इसी दौरान मैंने यह अनुभव किया कि लोगों के साथ आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए, इसका कोई सुनिश्चित तरीका नहीं है और ना ही आप इसे पूर्वनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि उनके साथ बौद्धिक स्तर पर जुड़कर उनके व्यक्तिगत जीवन के उद्देश्य को संगठन के उद्देश्य के साथ जोड़कर ही संगठन को सफलता की ओर बढ़ा सकते हैं।

महोदय, हम सभी जानते है कि सी-डैक के विकास में आपका योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है। कृपया हमें इस पर आपके नजरिए से अवगत कराएँ?

मुझे अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण कार्य प्रणालियों की पहल करने का अवसर मिला। इसमें मेरे केंद्र के विभागाध्यक्षों, कार्यक्रम निदेशकों और टीम सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन सभी के सहयोग से ही मैं “प्रौद्योगिकी हस्तांतरण नीति” (ToT Policy),

व्यावसायीकरण नीति (Commercialization policy) और नैशनल क्वांटम टेक्नोलॉजी रोडमैप जैसी योजनाओं की पहल कर पाया।

इसके अलावा, प्रशासनिक और तकनीकी विभागाध्यक्षों के सहयोग से हम सी-डैक पुणे के वित्तीय लक्ष्य एवं तकनीकी कुशलता को नई ऊंचाईयों तक पहुँचा सके। हमने सभी विभागों की गतिविधियों को उनके वित्तीय लक्ष्य के साथ जोड़ दिया और उनके सफलता का मूल्यांकन भी उसी आधार पर किया है। इसके हमें बहुत-ही बेहतरीन परिणाम मिले हैं। आज की तारीख में सभी विभाग अपने छह महीनें का वित्त संचय पूर्व निर्धारित करके ही अपनी गतिविधियों को करते हैं।

सी-डैक में अपने कार्यकाल के दौरान, आपको किन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

प्रत्येक लीडर इस बात से सहमत होगा कि न्यायिक चुनौतियों का प्रबंधन किसी भी संगठन के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है, और मैं इस मामले में अपवाद नहीं हूँ। न्यायिक चुनौतियाँ प्रायः कर्मियों के खराब प्रबंधन से उत्पन्न होती हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि संगठन चलाते समय सभी को खुश रखना भी संभव नहीं है। संगठन के दृष्टिकोण को प्राथमिकता देना ही सबसे महत्वपूर्ण होता है।

व्यक्तिगत शत्रुता, गलतफहमी और असहयोग प्रायः संगठन के भीतर कई समस्याओं का कारण बन जाते हैं। टीमो में काम करते समय, प्रोफेशनल बने रहना अति आवश्यक है। हालाँकि सभी के साथ दोस्ती का व्यवहार बनाए रखना संभव नहीं है, लेकिन कम-से-कम एक-दूसरे को समझने का प्रयास तो करना ही चाहिए। आखिरकार, टीमवर्क ही सफलता की कुंजी है।

महोदय, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आपने काफी काम किया है। सी-डैक में प्रौद्योगिकी के भविष्य को आप कैसे देखते हैं?

सी-डैक में प्रौद्योगिकी का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है; सुपरकंप्यूटिंग, एनएलपी, हार्डवेयर एण्ड सोल्यूशन्स और ई-गवर्नेंस सोल्यूशन्स, इन सभी क्षेत्रों में सी-डैक अग्रसर है। साथ ही साथ क्वांटम टेक्नोलॉजी, एआई और एमएल में तेजी से आते हुए सुधार को भी सी-डैक बहुत-ही अच्छी तरीके से अपना रहा है। सी-डैक शोध अनुसंधान की राह पर चलते हुए सारी उन्नत टेक्नोलॉजी का हाथ थामे हुए है। स्वास्थ्य सेवा, साइबर सुरक्षा और डेटा विश्लेषण जैसे अन्य क्षेत्रों में सी-डैक ने अपनी छाप छोड़ी है।

इसके अलावा कर्मचारियों के कौशल विकास की तरफ ध्यान केंद्रित करना भी सभी संस्थाओं का प्रमुख दायित्व होना चाहिए। सी-डैक इसके प्रति बहुत-ही सजग और प्रयत्नशील है, जिसके परिणामस्वरूप नई टेक्नोलॉजी की ओर कर्मचारियों का रुझान हमेशा बना रहता है। आने वाला समय निःसंदेह सी-डैक की परिबद्धता का प्रमाण होगा और प्रोद्योगिकी जगत के मानचित्र पर सी-डैक अग्रणी बनकर उभरेगा।

महोदय, आप सी-डैक में काम करने का संतोषजनक पहलू क्या मानते हैं?

सी-डैक के कार्यकाल के दौरान मुझे बहुत सारी प्रोद्योगिकी के बारे में जानने का मौका मिला, जैसे कि हाई परफॉर्मेंस कम्प्यूटिंग (एचपीसी), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ), मल्टी-लिंगुअल एण्ड हेरिटेज कम्प्यूटिंग, एजुकेशनल टेक्नोलॉजी आदि।

इससे पहले, मुझे क्वांटम टेक्नोलॉजी के बारे में कम जानकारी थी, लेकिन जैसे-जैसे मैं इस क्षेत्र में काम करता गया, मेरी रुचि इसकी तरफ और भी ज्यादा बढ़ने लगी। और आज इस टेक्नोलॉजी के प्रति मेरा आकर्षण इस कदर बढ़ गया है कि मैं सेवानिवृत्त होने के बाद भी क्वांटम टेक्नोलॉजी में योगदान देना जारी रखूँगा। मुझे सी-डैक के सभी सदस्यों का जो सहयोग एवं समर्थन मिला, वह तकनीकी उपलब्धियों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण रहा।

जैसा की आप जानते आप जानते है, आज सी-डैक में चार अलग-अलग पीढ़ी के लोग कार्यरत हैं। आप इन सभी कर्मचारियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

आज की पीढ़ी या कहें कि युवाओं में संयम की कमी है। वह बहुत-ही अधीर और आत्म-केंद्रित है। मैं बस उनको यह सलाह देना चाहूँगा कि हर कार्य का एक तरीका होता है और उसका जो भी परिणाम है या फल है, वो सही समय आने पर ही मिलता है। बस धैर्य से उसका

इंतजार करने की जरूरत है। जैसे पेड़ लगाने के बाद, उसमें फल या फूल एक सुनिश्चित समय पर ही आते हैं। बस वैसे-ही, आपके कार्य का फल भी एक सुनिश्चित समय पर मिलेगा; या हो सकता है आने वाली पीढ़ी को मिले। इसलिए मैं श्रीमद्भगवद्गीता के निष्काम कर्म के विचार "कर्म करो, कर्ता मत बनो" को बढ़ावा देना चाहूँगा । कड़ी मेहनत करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन जो भी कार्य कर रहे हैं, वो क्यों और किस लिए कर रहे हैं? इसके प्रति सजग रहना भी उतना ही जरूरी है। आपका कार्य बस संस्था की बड़ी तस्वीर का एक छोटा-सा हिस्सा है, आपके छोटे कार्य से संस्था की बड़ी तस्वीर किस प्रकार प्रभावित होती है, यह आप जितनी जल्दी समझ जाएँगे, उतना ही आप संघटन की सफलता में हाथ बटाएँगे।

सेवनिवृति के बाद आपकी क्या योजनाएँ हैं?

बेशक, मैं एचपीसी और क्वांटम कम्प्यूटिंग जैसे क्षेत्रों में अपना योगदान देना जारी रखूँगा, जिनसे पिछले कुछ वर्षों में मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इसके अलावा व्यक्तिगत तौर पर मैं मानता हूँ कि जीवन बहुत-ही सुंदर है; कल्पना से परे है। अभी भी बहुत कुछ अनुभव करना बाकी है। व्यावसायिक स्तर पर व्यस्त होने के कारण मैं अपनी ट्रैकिंग, बैडमिंटन और संगीत (गिटार बजाना) जैसे रुचियों की तरफ शायद ध्यान नहीं दे पाया, मगर अब जीवन की दूसरी पारी शुरू करते समय मैं इन सभी गतिविधियों का पूरी तरह से आनंद लेना चाहूँगा, जो मुझे मानसिक और शारीरिक स्तर पर तंदुरुस्त रहने में मदद करेंगी और साथ ही, समाज के साथ जुड़ने का अवसर भी प्रदान करेंगी।

अंत में आप हमारे पाठकगण को क्या संदेश देना चाहेंगे।

सर्वप्रथम सी डैक कर्मियो को मैं ये बताना चाहूँगा कि सी-डैक 1988 में स्थापित हुआ, जो कि समय के साथ एक बहुत-ही बेहतरीन संगठन के रूप में विकसित हुआ है। सी-डैक समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है और प्रमुख अग्रणी अनुसंधान केंद्र के रूप में उभरकर आया है। इस प्रतिष्ठित संस्थान में कार्य करते समय हर एक कर्मचारी को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी इस संगठन के प्रगति में क्या भूमिका निभाना अपेक्षित है और वास्तविकता में उसने क्या योगदान किया है? यह मानसिक आलेखन (मेंटल अकाउन्टिंग) करना हर एक कर्मचारी की जिम्मेदारी है। उसके बाद, जो भी 'डेफिसिट' या त्रुटि होगी, उसे सुधारना, और उसके प्रति कार्य तत्पर रहना, बहुत-ही आसान होगा।

दूसरा, मैं यह कहना चाहूँगा कि हमेशा अपनी तुलना खुद से करें। हर बार अपना एक बेहतरीन रूप दुनिया के सामने पेश करने की कोशिश करें। दूसरों से तुलना करना हमेशा बेवजह संघर्ष और असंतोष को जन्म देता है और हमारे संस्थान की नींव कमजोर करता है जिसकी हमारे पूर्व अधिकारियों ने बड़ी मेहनत से इतनी सुंदर रचना की है । यही नकारात्मक सोच आपकी प्रगति में रोक लगा देती है, इसीलिए आप टीम का हिस्सा बनें, अपनी और कभी-कभी दूसरों की और ऊपर से सौंपी जाने वाली अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ भी बखूबी निभायें।

अंततः यह कहना चाहूंगा कि अपनी याददाश्त का सदुपयोग करें, जितना हो सके उसका इस्तेमाल अच्छी घटनाओं और अनुभवों को सँजोने के लिए करो ना कि अप्रिय घटनाओं को याद कर व्यर्थ ही दुखी हो । मैंने अक्सर यह एहसास किया है कि हम जो बातें अस्तित्व में नहीं है या घटी ही नहीं है, उनकी कल्पना करके अपने आप को दुखी करते हैं। इसलिए मैं मानता हूँ कि आप अपनी खुशी के शिल्पकार हैं। आपके विचार ही आपकी किस्मत तय करते हैं, इसलिए हमेशा सकारात्मक सोच रखें, खुश रहें और खुशियाँ बाटें..

तकनीकी लेख संकलन

लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) के व्यावहारिक अनुप्रयोग

नेहा गुप्ता

लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) तेजी से इंटरनेट युग में सबसे अधिक प्रचारित नई तकनीकी खोज में से उत्तम बन रहे हैं। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि जेनेरिक-एआई 2032 तक 1.3 खरब डॉलर का बाजार बन जाएगा, क्योंकि अधिक उपयोगकर्ता चैटजीपीटी, बिंग चैट और गूगल बार्ड जैसे जेनेरिक एआई समाधानों के साथ प्रयोग कर रहे हैं। हालाँकि, प्रारंभिक अवस्था में एलएलएम के उपयोग के मामलों को अभी भी परिभाषित किया जाना बाकी है।

सामग्री निर्माण

भाषा मॉडल का एक बहुत बड़ा सामान्य उपयोग सामग्री निर्माण करना है। एलएलएम उपयोगकर्ताओं को ब्लॉग और लेखों से लेकर लघु कथाएँ, सारांश, स्क्रिप्ट, प्रश्नावली, सर्वेक्षण और सोशल मीडिया पोस्ट जैसी लिखित सामग्री तैयार करने में सक्षम बनाता है। इन आउटपुट की गुणवत्ता प्रारंभिक संकेत में दिए गए विवरण पर निर्भर करती है। यह ध्यान देने योग्य है कि सोरा, डाल-ई, मिडजर्नी और स्टेबल डिफ्यूजन जैसे उपकरण भी हैं, जो उपयोगकर्ताओं को लिखित संकेत के आधार पर चित्र और वीडियो बनाने की अनुमति देते हैं।

सामग्री सारांश

एलएलएम संक्षिप्त रूप से पाठ के लंबे हिस्सों को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे शोध पत्र, समाचार लेख या किताबें भी। इससे समय की बचत होती है और आपको प्रमुख बिंदुओं को जल्दी समझने में मदद मिलती है।

ग्राहक सहायता (चैटबॉट और आभासी सहायक)

ए.आई. आभासी सहायक ग्राहकों को सेवाओं और उत्पादों के बारे में प्रश्न पूछने, धनवापसी का अनुरोध करने और तुरंत शिकायतों की रिपोर्ट करने में सक्षम बनाते हैं। अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए, यह मानव सहायता एजेंट की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता को समाप्त करता है और कर्मचारियों के लिए यह दोहराए जाने वाले समर्थन कार्यों को स्वचालित करता है।

पाठ अनुवाद (Text Translation)

एलएलएम के लिए सबसे सरल व्यावहारिक अनुप्रयोगों में से एक लिखित पाठ्य का अनुवाद करना है। एक उपयोगकर्ता चैटबॉट में पाठ निवेश कर सकता है और उसे किसी अन्य भाषा में अनुवाद करने के लिए कह सकता है तथा एलएलएम समाधान स्वचालित रूप से पाठ का अनुवाद करना शुरू कर देगा। शोधकर्ता यह भी ध्यान देते हैं कि GPT-4 यूरोपीय भाषाओं का अनुवाद करते समय सबसे प्रभावी है, लेकिन "कम-संसाधन" या "दूरस्थ" भाषाओं का अनुवाद करने में उतना सटीक नहीं है।

अभिगम्यता उपकरण

एलएलएम का उपयोग वीडियो के लिए वास्तविक समय में शीर्षक बनाने, संकेत भाषा का अनुवाद करने और छवियों के लिए ऑडियो विवरण उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है, जिससे विकलांग व्यक्तियों के लिए अभिगम्यता में सुधार हो सकता है।

यहाँ कुछ व्यावहारिक उदाहरण दिए गए हैं कि वे वास्तविक दुनिया पर कैसे प्रभाव डाल रहे हैं:

बाजार अनुसंधान और विश्लेषण

एलएलएम ग्राहकों की भावनाओं को समझने, रुझानों की पहचान करने और बाजार के कार्य व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए पाठ और सोशल मीडिया के बड़े डेटासेट का विश्लेषण कर सकते हैं।

डेटा विश्लेषण और रिपोर्टिंग

एलएलएम कई बड़े डेटा सेट से सारांशित करने और निष्कर्ष निकालने की क्षमता रखते हुए डेटा में छान-बीन कर सकते हैं और स्वचालित रूप से रिपोर्ट उत्पन्न कर सकते हैं। इससे न केवल विश्लेषकों के समय और प्रयास की बचत होती है, बल्कि यह उत्पादों, सेवाओं, बाजारों, प्रतिस्पर्धियों और ग्राहकों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए बाजार अनुसंधान करने के लिए एक उपयोगी उपकरण भी बनाती है।

साइबर सुरक्षा और धोखाधड़ी का पता लगाना

एलएलएम ऑनलाइन सुरक्षा को बढ़ाते हुए धोखाधड़ी गतिविधि, फिशिंग प्रयासों और अन्य साइबर खतरों की पहचान करने के लिए पाठ डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं। अब तक कई साइबर सुरक्षा विक्रेताओं ने खतरे का पता लगाने के लिए तकनीक के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया है।

कोड और स्क्रिप्ट उत्पादन (Code and Script Generation)

एलएलएम में न केवल प्राकृतिक भाषा उत्पन्न करने की क्षमता रखता है, बल्कि जावास्क्रिप्ट, पाइथन, पीएचपी, जावा और सीशार्प जैसी भाषाओं में कोड उत्पन्न कर सकता है।भाषा मॉडल की कोड निर्माण क्षमताएं गैर-तकनीकी उपयोगकर्ताओं को मूल कोड उत्पन्न करने की क्षमता प्रदान करता है। हालाँकि यह बुनियादी चुनौतियों का समाधान करने वाली सरल परियोजनाओं के लिए कोड लिख सकता है, लेकिन यह अधिक जटिल कार्यों को संबोधित करने के लिए संघर्ष करता है। प्रोग्रामर को कार्यक्षमता और सुरक्षा मुद्दों के लिए कोड की दोबारा जांच करनी चाहिए।

एलएलएम का उपयोग मौजूदा कोड को डीबग करने या यहाँ तक कि संबंधित दस्तावेज तैयार करने में भी मदद करता है। इसके चलते, इन सभी कार्यो को मैन्युअल रूप से करने में समय बर्बाद नहीं करना पड़ता।

संगीत और कला उत्पादन

एलएलएम रचनात्मक अभिव्यक्ति के नए रूपों को बढ़ावा देते हुए संगीत रचनाएँ बनाने में मदद कर सकते, गीत उत्पन्न कर सकते हैं या संकेतों और शैलियों के आधार पर दृश्य कला भी बना सकते हैं।

व्यक्तिगत शिक्षण साधन

एलएलएम व्यक्तिगत शिक्षण शैलियों और रुचि के आधार पर शैक्षिक सामग्री और गतिविधियों को अनुकूलित करके अद्वितीय शिक्षण अनुभव बना सकते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एलएलएम अभी भी विकास के चरण में हैं और सटीकता और पूर्वाग्रह के लिए उनके आउटपुट की समीक्षा और संपादन किया जाना चाहिए। हालाँकि कार्यों को स्वचालित करने, संचार में सुधार करने और रचनात्मकता में तेजी लाने की उनकी क्षमता निर्विवाद है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ रही है, हम भविष्य में एलएलएम के और भी अधिक नवीन और व्यावहारिक अनुप्रयोगों की उम्मीद कर सकते हैं।

ऑप्टिकल कैरेक्टर रेकग्निशन (ओसीआर)

मनीष कुमार गुप्ता

ओसीआर एक प्रौद्योगिकी है, जो कंप्यूटर को मानव भाषा के लिखे हुए पाठ को समझने और पढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। यहाँ तकनीक डिजिटल दस्तावेज, फोटो, या स्कैन की गई छवियों में लिखे हुए पाठ को चिन्हित करने के लिए उपयोग की जाती है। ओसीआर का प्रमुख उद्देश्य अद्भुत गति और सुस्त त्रुटि-मुक्तता के साथ लिखे हुए पाठ को पहचानना है, जिससे यह सीधे डिजिटल फॉर्मेट में परिवर्तित किया जा सकता है।

ओसीआर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, जैसे कि वाणिज्यिक कार्यालयों, बैंकिंग सेक्टर, शैक्षणिक संस्थान और सरकारी संगठनों में। यहाँ हिंदी में ओसीआर का उपयोग कई क्षेत्रों में हो रहा है।

पहले तो, ओसीआर वित्तीय संस्थानों में व्यापारिक दस्तावेजों को स्वचालित रूप से स्कैन करने और उनमें से जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, बैंक चेक, निवेश डेटा, खाता विवरण और अन्य संबंधित वित्तीय दस्तावेजों को ओसीआर के माध्यम से प्रोसेस किया जा सकता है।

दूसरे, शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी विभागों में भी ओसीआर का व्यापक उपयोग होता है। इससे परीक्षा के परिणाम, अनुप्रयोग पत्र, और अन्य दस्तावेजों को आसानी से स्कैन किया जा सकता है और डिजिटल रूप में संग्रहित किया जा सकता है।

वैसे तो, ओसीआर की विशेषताएँ अद्वितीय हैं, लेकिन यहाँ कुछ मुख्य लाभ दिए गए हैं:

- **समय की बचत:** ओसीआर द्वारा स्कैन किए गए दस्तावेजों को स्वचालित रूप से प्रोसेस किया जा सकता है, जिससे समय की बचत होती है। इस डेटा को आसानी से खोजा और उपयोग किया जा सकता है।
- **त्रुटि की कमी:** ओसीआर सिस्टम में मान्यताएँ और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त त्रुटि संशोधन के एल्गारिदम का उपयोग किया जा सकता है, जो मान्यता को बढ़ाता है।
- **स्वचालित संसाधन संचय:** बड़े वित्तीय और कानूनी दस्तावेजों के स्वचालित संग्रहण और प्रबंधन में सहायक है। यह मैन्युअल डेटा एंट्री को कम करता है और समय की बचत करता है।

भारतीय सरकारी विभागों में ओसीआर का उपयोग कई अहम क्षेत्रों में किया जा रहा है, जिससे डेटा को स्वचालित रूप से प्रोसेस किया जा सकता है और विभिन्न सरकारी विभागों की कार्यवाही में तेजी और गोपनीयता आती है।

- **आवेदन प्रपत्रों की प्रसंस्करण (Application Form Processing):** भारतीय सरकारी विभागों में विभिन्न योजनाओं और योजनाओं के लिए आए आवेदन प्रपत्रों को स्वीकृत करने और प्रसंस्करण करने की आवश्यकता होती है। ओसीआर इस कार्य को बहुत सरल बना देता है। यह आवेदन पत्रों से जानकारी को स्वचालित रूप से पढ़ता है, जैसे कि नाम, पता और अन्य विवरण, जो कि आवेदक के डेटाबेस में स्वचालित रूप से एंट्री की जा सकती है। इससे प्रक्रिया का समय और मानव संसाधन बचाया जा सकता है और समाज को तेजी से सेवा प्रदान की जा सकती है।
- **विवादों और अपराधों के मामलों का प्रसंस्करण:** सरकारी विभागों में विवादों और अपराधों के मामलों का प्रसंस्करण एक

महत्वपूर्ण कार्य है। ओसीआर का उपयोग केस फाइलों, प्रमाणपत्रों आदि में लिखे हुए पाठ को पहचानने में किया जा सकता है। इससे विभागीय कर्मचारियों को समय की बचत होती है और वे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

- **आवेदनों की गोपनीयता और सुरक्षा (Privacy and Security of Applications):** सरकारी विभागों में आवेदनों की गोपनीयता और सुरक्षा का मामला अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। ओसीआर विशेष रूप से ऐसे सुरक्षा प्रोटोकॉल्स को अपनाता है जो डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता को सुनिश्चित करते हैं। यह एन्क्रिप्टेड फाइलों और डेटा के रूप में प्रसंस्कृत किया जा सकता है, जिससे कि केवल अधिकृत व्यक्ति ही उन्हें एक्सेस कर सकें।
- **सार्वजनिक दस्तावेजों का संग्रह:** सरकारी विभागों में सार्वजनिक दस्तावेजों का संग्रह और रिकॉर्ड कार्य एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। ओसीआर दस्तावेजों को डिजिटल रूप में संचित करने और संग्रहित करने में मदद करता है।

भारतीय सरकारी विभागों में ओसीआर का उपयोग:

ओसीआर एक प्रौद्योगिकी है, जो विभिन्न क्षेत्रों में अनेक कार्यों को सुगम और संवेदनशील बनाती है। भारतीय सरकारी विभागों में भी ओसीआर का उपयोग कई क्षेत्रों में किया जा रहा है, जिससे सार्वजनिक सेवाओं को प्रभावी बनाने में मदद मिलती है। यहाँ कुछ उपयोग क्षेत्रों के बारे में विस्तार से बताया गया है:

- **सार्वजनिक योजनाएँ और कार्यक्रम:** सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के तहत अनेक दस्तावेज और आवश्यक फार्म होते हैं। इन दस्तावेजों को स्कैन करके उनमें लिखे हुए पाठ को ओसीआर के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। इससे सरकारी विभाग या उपक्रम के लाभार्थियों की पहचान और डेटा संग्रह कार्य सरल हो जाता है।
- **शिक्षा और अध्ययन:** शैक्षिक संस्थानों में छात्रों की प्रवेश प्रक्रिया, रिजल्ट और अन्य दस्तावेजों को ओसीआर के माध्यम से डिजिटल रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इससे शैक्षणिक प्रक्रिया में सुधार होता है और डेटा के संग्रह में सहायक होता है।
- **आवेदन पत्र और नागरिक सेवाएँ:** सरकारी नौकरियों, पासपोर्ट, आधार कार्ड, वोटर आईडी और अन्य नागरिक सेवाओं के लिए आवेदन पत्र को ओसीआर के माध्यम से स्कैन किया जा सकता है। इससे आवेदन प्रक्रिया में तेजी लाई जा सकती है और इसे अधिक सुचारू बनाए रखा जा सकता है।
- **वित्तीय संस्थान:** वित्तीय संस्थानों में बैंक चेक, क्रेडिट कार्ड, लेन-देन और अन्य वित्तीय दस्तावेजों को ओसीआर के माध्यम से स्कैन किया जा सकता है। इससे लेन-देन प्रक्रिया में तेजी, सुरक्षा और विश्वसनीयता मिलती है।

इन सभी क्षेत्रों में ओसीआर का उपयोग सरकारी कार्यों को सुगम बनाता है और सेवाओं को जनता के लिए अधिक पहुंचने योग्य बनाता है। यह तकनीकी उपाय सरकार को तकनीकी उन्नति में भी मदद करती है और सेवाओं को बेहतर बनाने में सहायक होती है।

अतः ओसीआर का प्रयोग भारतीय सरकारी विभागों में दस्तावेजों को सुलभ बनाने के लिए किया जा सकता है।

भारतीय भाषाओं के लिए कई ओसीआर टूल उपलब्ध हैं, जो विभिन्न आवश्यकताओं और प्लेटफॉर्मों को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं। भारतीय भाषाओं के लिए एक नवीनतम और व्यापकता से उपयोग किया जाने वाला ओसीआर टूल गूगल का टेस्सेरैक्ट ओसीआर इंजन है। टेस्सेरैक्ट कई भारतीय भाषाओं का समर्थन करता है, जैसे कि हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु, गुजराती, कन्नड, मलयालम, पंजाबी आदि। यह छवियों और स्कैन किए गए दस्तावेजों से सही पाठ प्राप्त करता है।

इसके अलावा, कई अन्य संगठनों और कंपनियों ने भारतीय भाषाओं के लिए विशेष रूप से विकसित

ओसीआर टूल और प्लेटफॉर्म भी उपलब्ध किए हैं। इनमें से कुछ विकल्प हैं:

- सी-डैक ओसीआर: प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) द्वारा विकसित, चित्रांकन ओसीआर एक ऐसा उपकरण है, जो कई भारतीय भाषाओं की छवियों से पाठ पहचानता है। चित्रांकन ओसीआर नीचे दिखाए गए लिंक पर ऑनलाइन उपलब्ध है:
- https://chitrankan.ebhasha.in/
- ब्रोशर के साथ चित्रांकन ओसीआर की जानकारी नीचे दिए गए लिंक पर उपलब्ध है:
- https://www.cdac.in/index.aspx?id=product_details&productId=ChitrankanOCRforIndianlanguages
- एडोब एक्रोबेट ओसीआर: एडोब एक्रोबेट ओसीआर फंक्शनैलिटी प्रदान करता है जो भारतीय भाषाओं का समर्थन करता है, जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता स्कैन किए गए पीडीएफ और छवियों से पाठ निकाल सकते हैं।
- ऑनलाइन ओसीआर टूल: कई ऑनलाइन ओसीआर टूल भी भारतीय भाषाओं का समर्थन करते हैं, जैसे कि i2ocr.co, freeocr.net/, और onlineocr.net/। ये प्लेटफॉर्म विभिन्न भारतीय भाषाओं के लिए पाठ प्राप्ति सेवाएं प्रदान करते हैं।
- मोबाइल ऐप्स: एंड्रॉइड और आईओएस प्लेटफॉर्म पर कई मोबाइल ऐप्स उपलब्ध हैं जो भारतीय भाषाओं के लिए ओसीआर का समर्थन करते हैं। गूगल लेंस, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस लेंस और एडोब स्कैन जैसे ऐप्स भारतीय भाषाओं के पाठ पहचान के लिए ओसीआर फंक्शनैलिटी प्रदान करते हैं।

यह सूची विभिन्न आवश्यकताओं, भाषा समर्थन, सटीकता और आपके उपकरण या प्लेटफॉर्मों के साथ संगतता के आधार पर इन ओसीआर टूल्स का अन्वेषण और मूल्यांकन करने के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से ध्यान दें कि मेरे इस अंतिम अपडेट के बाद ओसीआर प्रौद्योगिकी में नवीनतम उन्नतियाँ और नई रिलीज हो सकती हैं, इसलिए इस क्षेत्र में नवीनतम विकास कार्यों की जांच करना उचित होगा।

हिंदी में ओसीआर का विकास करने के लिए नवीनतम तकनीकों का विस्तृत विवरण के अंतर्गत आपको यहाँ पांच प्रमुख तकनीकों के बारे में जानकारी मिलेगी:

- **डीप लर्निंग:**
  - डीप लर्निंग एक प्रमुख तकनीक है जो ओसीआर के विकास में बड़ा परिवर्तन लाई है। इसमें शामिल नेटवर्क्स, जैसे कि आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क्स (एएनएन), कनवोल्यूशनल नेटवर्क्स (सीएनएन), और लॉंग शॉर्ट टर्म मेमोरी (एलएसटीएम) का उपयोग किया जाता है।
  - डीप लर्निंग मॉडल्स को बड़े डेटासेट पर प्रशिक्षित किया जाता है, जो कि विभिन्न फॉन्ट्स, छवियों की गुणवत्ता और स्थानों के साथ सामग्री को शामिल करते हैं।
  - डीप लर्निंग के माध्यम से बनाए गए ओसीआर मॉडल्स छवियों से पाठ को स्वचालित रूप से पहचानते हैं और निकालते हैं।
- **विजन ट्रांसफॉर्मर (वीआईटी):**
  - वीआईटी नवीनतम और अद्वितीय ओसीआर तकनीक हैं, जो छवियों से पाठ को पहचानने में सक्षम हैं।
  - यह उपकरण छवियों को पैचों में विभाजित करता है और ट्रांसफॉर्मर ब्लॉक का उपयोग करके उन्हें प्रोसेस करता है।
  - वीआईटी मॉडल्स परिवर्तनात्मक स्व-ध्यान तकनीक का उपयोग करते हैं, जो विभिन्न पैचों के बीच संबंधों को समझने में मदद करता है।
- **लेवल-लाइन स्थानांकन (लाइन-स्तरीय स्थिति निर्धारण):**
  - यह तकनीक हिंदी ओसीआर में पाठ की बेहतर स्थिति को अनुमानित करती है, जिससे ओसीआर प्रक्रिया में संवेदनशीलता में सुधार होता है।

- लेवल-लाइन स्थानांकन तकनीक को उपयोग करके ओसीआर मॉडल्स को बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलती है, खासकर जब स्थानांकन कम्प्यूटेशनली अधिक चुनौतीपूर्ण होता है।

- **मुद्रित भाषा प्रोसेसिंग तकनीकों का उपयोग:**
  - एनएलपी तकनीकों का उपयोग करके ओसीआर मॉडल्स को पाठ के संदेश को समझने में मदद मिलती है, जिससे वे स्थानांकित पाठ को ठीक से प्रस्तुत कर सकते हैं।
  - एनएलपी तकनीकों के उपयोग से ओसीआर मॉडल्स भाषा की सार्थकता को समझने में सक्षम होते हैं और भाषा के साथ संबंधित विभिन्न कार्य को पूरा करने में सहायक होते हैं।

- **अनुप्रयोगी शिक्षा (अनसुपर्वाइज़ लर्निंग):**
  - अनुप्रयोगी शिक्षा के उपयोग से ओसीआर मॉडल्स को बिना मानक डेटा के ट्रेन किया जा सकता है।
  - यह तकनीक ओसीआर प्रक्रिया को और अधिक उन्नत और उपयोगी बनाती है, क्योंकि इसमें पूर्वानुमान और समय-बचाव के लाभ होते हैं।

ये पांच नवीनतम तकनीक हैं, जो हिंदी ओसीआर के विकास में उपयोग किए जा रहे हैं। इन तकनीकों का सम्मिलित उपयोग करके उन्नत ओसीआर समाधान विकसित किए जा रहे हैं जो छवियों से हिंदी पाठ को सही ढंग से पहचानते हैं।

ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी : विकेंद्रीकृत, पारदर्शी तथा अपरिवर्तनीय

नितेशकुमार हरणे

परिचय:

जब भी हम ब्लॉकचेन के बारे में पढ़ते या सुनते हैं तो सबसे पहले दिमाग में बिटकॉइन ही आता है। कई लोगों का यह भी मानना है कि बिटकॉइन का मतलब ही ब्लॉकचेन है। तकनीकी तौर पर कुछ हद तक यह बात सही भी है कि बिटकॉइन भी एक ब्लॉकचेन ही है। यही ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी की बुनियाद है। लेकिन ब्लॉकचेन और बिटकॉइन या क्रिप्टोकरेंसी में यह फर्क है कि ब्लॉकचेन एक तकनीक है, जबकि बिटकॉइन या क्रिप्टोकरेंसी एक एप्लीकेशन है जो ब्लॉकचेन के डिस्ट्रिब्यूटेड टेक्नोलॉजी पर आधारित है। यही वह पहला सिस्टम था, जिसके बाद ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी को और कई दिशा में विकसित करने की प्रेरणा मिली थी। इसके बाद ब्लॉकचेन को सिर्फ लेनदेन और लेजर सिस्टम तक सीमित न रखकर इसे आम एप्लीकेशन बनाने में इस्तेमाल कर इसका दायरा बढ़ाने पर कार्य किया गया।

ब्लॉकचेन एक विकेंद्रीकृत (Decentralized) डेटाबेस या लेजर है जिसमें परस्पर जुड़े ब्लॉकों की एक श्रृंखला शामिल होती है, जिनमें से प्रत्येक में लेनदेन (Transaction) की एक सूची होती है। ये ब्लॉक क्रिप्टोग्राफिक रूप से एक साथ जुड़े हुए एक श्रृंखला बनाते हैं, इसलिए इसका नाम "ब्लॉकचेन" है। ब्लॉकचेन की विकेंद्रीकृत प्रकृति मध्यस्थों की आवश्यकता को समाप्त कर देती है, जिससे सुरक्षा और पारदर्शिता के साथ पीयर-टू-पीयर लेनदेन सक्षम हो जाता है।

ब्लॉकचेन का इतिहास:

क्रिप्टोग्राफर डेविड चाउम ने सबसे पहली बार अपने 1982 के शोध प्रबंध पत्र में ब्लॉकचेन जैसे सिस्टम की

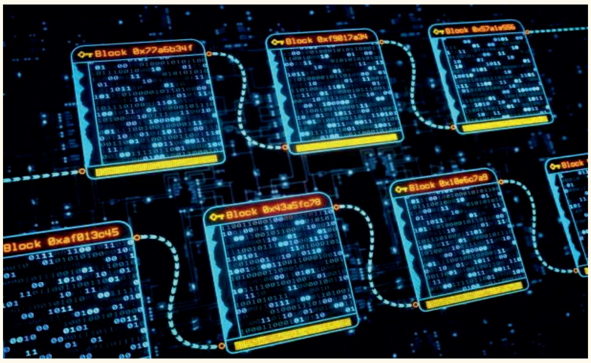

संकल्पना सुझाई थी। बाद के दौर में इसी संकल्पना के आधार पर ब्लॉकों की क्रिप्टोग्राफिक रूप से सुरक्षित श्रृंखला यानी ब्लॉकचेन पर काम का वर्णन 1991 में स्टुअर्ट हैबर और डब्ल्यू स्कॉट स्टोर्नेटा द्वारा किया गया था। वास्तव में इन्ही दोनों को ब्लॉकचेन तकनीकी का जनक कह सकते हैं।

2008 में, सातोशी नाकामोतो नामक अज्ञात व्यक्ति ने "बिटकॉइन: ए पीयर-टू-पीयर इलेक्ट्रॉनिक कैश सिस्टम" के शीर्षक तले एक श्वेतपत्र के माध्यम से बिटकॉइन को दुनिया के सामने पेश किया। 2009 में कोड लिखकर इसे अमल में लाया गया और पहला एप्लीकेशन बिटकॉइन तैयार हुआ, जिसका लक्ष्य केंद्रीकृत नियंत्रण से मुक्त विकेंद्रीकृत (distributed) डिजिटल मुद्रा प्रणाली बनाना था। इसके मूल में, ब्लॉकचेन एक वितरित खाता यानी लेजर है जो सभी लेनदेन को सुरक्षित, पारदर्शी और अपरिवर्तनीय तरीके से रिकॉर्ड करता है। इस क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन के आने के बाद डिजिटल दुनिया में ब्लॉकचेन ने एक क्रांति ला दी। यह तकनीकी दुनियाभर में आम जनता तक प्रसिद्ध हो गई है।

वर्ष 2014 में ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी ने एक नया मोड़ लिया और ब्लॉकचेन तकनीक को मुद्रा से अलग किया गया और ब्लॉकचेन 2.0 का जन्म हुआ। वित्तीय

संस्थानों और अन्य उद्योगों ने अपना ध्यान डिजिटल मुद्रा से ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकियों के विकास पर केंद्रित करना शुरू कर दिया। इसी क्रम में, 2015 में एथेरियम फ्रंटियर नेटवर्क लॉन्च किया गया, इस प्रकार जिससे डेवलपर्स को स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट और डीएपी (Decentralized Applications) लिखने में सक्षम बनाया गया जिन्हें लाइव नेटवर्क पर डिप्लॉय किया जा सकता है। उसी वर्ष लिनक्स फाउंडेशन ने हाइपरलेजर प्रोजेक्ट लॉन्च किया और फिर इसके बाद ब्लॉकचेन दुनिया की सबसे भरोसेमंद तकनीकी के रूप में उभरने लगी।

ब्लॉकचेन क्या है और कैसे काम करता है?

ब्लॉकचेन एक डिस्ट्रिब्यूटेड लेजर सिस्टम होता है, लेकिन यह केंद्रीकृत (centralized) नहीं बल्कि विकेंद्रीकृत सिस्टम पर आधारित है। जिसमें ट्रांजैक्शन या इनफॉरमेशन एक से ज्यादा मशीनों पर एक साथ स्थापित किया जाता है, जिससे सूचना में भेद होने की संभावना ना के बराबर होती है। हर कंप्यूटर के पास एक लेजर जमा होता है। इन सभी कंप्यूटर को नोड कहा जाता है । जब ज्यादातर 'नोड' एक ट्रांजैक्शन को अप्रूव कर देते हैं, तो उस ट्रांजैक्शन को ब्लॉक में लिखा जाता है और एक नया ब्लॉक श्रृंखला में जोड़ दिया जाता है। यह विकेंद्रीकृत तकनीक है, अर्थात एक सिस्टम से पूरी चेन कनेक्ट नहीं होती, बल्कि चेन के सभी सिस्टम एक दूसरे से कनेक्ट होते हैं। इसलिए इसे पीयर-टू-पीयर नेटवर्क कहा जाता है।

ब्लॉकचेन इनफॉरमेशन को रिकॉर्ड और डिस्ट्रीब्यूट करने की अनुमति देता है, लेकिन इसे एडिट नहीं किया जा सकता है। ब्लॉकचेन इंफॉर्मेशन को ग्रुप में संकलित करता है और इस ग्रुप को ब्लॉक कहा जाता है और यह ब्लॉक मिलकर एक श्रृंखला तैयार करते हैं जिसे ब्लॉकचेन कहा जाता है। हर ब्लॉक में सीमित स्टोरेज क्षमता होती है, और जब वह ब्लॉक सूचनाओं से भर जाता है तो पहले बने हुए ब्लॉक के साथ जाकर जुड़ जाता है और इस तरह एक चेन तैयार हो जाती है।

ब्लॉकचेन नेटवर्क में प्रत्येक ब्लॉक में एक हैश (विशिष्ट पहचानकर्ता), वैध लेनदेन (ट्रांजैक्शन) और पिछले ब्लॉक का क्रिप्टोग्राफिक हैश होता है, जो हर ट्रांजैक्शन पर जनरेट होता है। पिछला ब्लॉक हैश ब्लॉकों को एक साथ जोड़ता है और किसी भी ब्लॉक को बदलने या दो मौजूदा ब्लॉकों के बीच एक ब्लॉक डालने से रोकता है। यानी किसी ब्लॉक में भी छेड़छाड़ करना हो तो उसे सिर्फ उस ब्लॉक की हैश ही नहीं बदलनी होगी, बल्कि उसके पहले वाले सभी यानी श्रृंखला के सभी ब्लॉक की हैश वैल्यू को बदलना होगा, जो कि एक तरह से असंभव है।

ब्लॉकचेन तकनीक को आम रोजमर्रा के उदाहरण से समझने के लिए मान लीजिए 5 मित्र आपस में कई लेनदेन (ट्रांजैक्शन) करना चाहते हैं तो किसी एक केंद्रीय व्यवस्था जिसमें आसानी से छेड़छाड़ कर डेटा को बदला जा सकता है ऐसी व्यवस्था का उपयोग न कर ये सभी 5 मित्र अपने पास एक लेजर रखते हैं। जब भी कभी इनके बीच कोई ट्रांजैक्शन होता है तो ये पांचों अपनी-अपनी लेजर में उस ट्रांजैक्शन को आपसी सहमति से अपडेट करते हैं। यानी हर लेजर में जो ट्रांजैक्शन लिखी जाएगी वो सभी के संज्ञान में होगी और एक जैसी रहेगी जिससे बाद में छेड़छाड़ की संभावना नहीं रहेगी।

एक बार लिखी हुई ट्रांजैक्शन बदली नहीं जा सकती या मिटाई नहीं जा सकती, बल्कि अगली ट्रांजैक्शन उसकी अगली चेन में अपडेट की जा सकती है। इस प्रकार न केवल डेटा से छेड़छाड़ की संभावना समाप्त हो जाती है, बल्कि सुरक्षित और पारदर्शी भी हो जाती है। अब इसमें आपसी सहमति को कंसेंसस कहा जाता है, 5 मित्रों को 'नोड' कहा जाएगा, और जिन नियम और शर्तों के तहत वह ट्रांजैक्शन करते हैं, उसे स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट कहा जाएगा।

ब्लॉकचेन के प्रकार:

ब्लॉकचेन मुख्य रूप से चार प्रकार में विभाजित है- सार्वजनिक, निजी, कंसोर्टियम और हाइब्रिड ब्लॉकचेन। हम प्रत्येक के अलग-अलग महत्व को समझेंगे।

सार्वजनिक ब्लॉकचेन एक अनुमति-रहित डिस्ट्रिब्यूटेड लेजर सिस्टम का प्रतिनिधित्व करती है, जो किसी के भी शामिल होने के लिए खुली होती है। यह प्रत्येक भागीदार को नेटवर्क में समान स्तर प्रदान करता है और कोई भी व्यक्ति लेनदेन सत्यापन और माइनिंग कार्यों में संलग्न होकर अधिकृत नोड बन सकता है। सार्वजनिक ब्लॉकचेन की पारदर्शिता और खुलापन अद्वितीय है,

जो प्रत्येक नोड को लेजर तक पारदर्शी पहुंच प्रदान करता है।

निजी (private) ब्लॉकचेन यह प्रतिबंधित वातावरण जैसे बंद नेटवर्क के तहत काम करता है। ये ब्लॉकचेन छोटे हैं और अपने सार्वजनिक समकक्षों की तुलना में अधिक नियंत्रित सेटिंग प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अनुमति प्राप्त (permissioned) या एंटरप्राइज ब्लॉकचेन जैसा उपनाम दिया गया हैं। चूंकि वे छोटे नेटवर्क पर काम करते हैं, इसीलिए लेनदेन सत्यापन (transaction verification) तेज गति से होते हैं।

हाइब्रिड ब्लॉकचेन निजी और सार्वजनिक ब्लॉकचेन की विशेषताओं को मिलाता है। इस प्रकार की ब्लॉकचेन बिज़नेस संगठनों को एक अद्वितीय ढांचा स्थापित करने की अनुमति देती है जहाँ एक निजी, अनुमति-आधारित प्रणाली एक सार्वजनिक, अनुमति-रहित प्रणाली के साथ सह-अस्तित्व में होती है। नतीजतन, हाइब्रिड ब्लॉकचेन एक लचीला दृष्टिकोण प्रदान करता है। हॉस्पिटल के पेशेंट इन्फॉर्मेशन रिकॉर्ड और ड्रग सप्लाई चेन सिस्टम हाइब्रिड ब्लॉकचेन के उत्तम उदाहरण हैं।

कंसोर्टियम ब्लॉकचेन निजी और सार्वजनिक दोनों ब्लॉकचेन के तत्वों को जोड़ती है। इस प्रकार के ब्लॉकचेन को विकेंद्रीकृत नेटवर्क पर कई संगठनात्मक सदस्यों के सहयोग से अलग किया जाता है। इसलिए एक कंसोर्टियम ब्लॉकचेन सामूहिक शासन और साझा जिम्मेदारियों की विशेषता वाली एक अनूठी संरचना प्रदान करता है। आईबीएम फूड ट्रस्ट कंसोर्टियम ब्लॉकचेन का एक प्रमुख उदाहरण है।

ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क:

ब्लॉकचेन की इसी तकनीकी का उपयोग कर विविध प्रकार के ब्लॉकचेन सिस्टम तैयार किए गए, जिसमें क्रिप्टोकरेन्सी, एथेरेयम, हाइपर लेजर इसके मुख्य फ्रेमवर्क हैं।

बिटकॉइन: जैसा की हम सभी जानते हैं, यह एक क्रिप्टोकरेंसी है और यह ब्लॉकचेन डिस्ट्रिब्यूटेड तकनीक पर आधारित है जिसे किसी एक व्यक्ति, समूह या इकाई के नियंत्रण से बाहर वित्तीय लेनदेन या ट्रांजैक्शन करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह वित्तीय लेनदेन में विश्वसनीय तीसरे पक्ष की भागीदारी (बैंक) की आवश्यकता को खत्म कर देता है। इसमें लेनदेन को सत्यापित करने वाले खनिकों (miners) को पुरस्कृत किया जाता है और इसे कई एक्सचेंजों पर खरीदा जा सकता है।

एथेरियम:एक विकेंद्रीकृत ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म है जो एक पीयर-टू-पीयर नेटवर्क स्थापित करता है, जो एप्लिकेशन कोड को सुरक्षित रूप से निष्पादित और सत्यापित करता है, जिसे स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट कहा जाता है।

हालाँकि एथेरेयम एक अनुमति-रहित (permissionless) ब्लॉकचेन सिस्टम है, जिसके नेटवर्क से किसी भी उपयोगकर्ता को जुड़ने की अनुमति प्रदान की जाती है। इसीलिए इसके विस्तार में या ऐसे अनेक एप्लीकेशन जिसमें आइडेंटिटी एक प्रमुख मुद्दा है, इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। सबके लिए कॉमन होने की वजह से इसमें गोपनीयता के हनन की संभावना ज्यादा थी।

हाइपरलेजर: प्लेटफॉर्म सबसे नवीनतम और लिनक्स फाउंडेशन द्वारा होस्ट किया गया एक ओपन सोर्स ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क है। यह एक अनुमति प्राप्त

(Permissioned) ब्लॉकचेन है यानी सभी भाग लेने वाले सदस्यों की पहचान ज्ञात और प्रमाणित है। यह लाभ स्वास्थ्य सेवा, आपूर्ति शृंखला, बैंकिंग, लैंड रिकॉर्ड और बीमा सहित उद्योगों में विशेष रूप से उपयोगी है, जहाँ डेटा को अज्ञात संस्थाओं के सामने उजागर नहीं किया जा सकता है।

ब्लॉकचेन नेटवर्क के प्रमुख घटक:

ब्लॉक: ब्लॉक कंटेनर होते हैं जिनमें वैध लेनदेन रिकॉर्ड होते हैं। प्रत्येक ब्लॉक में पिछले ब्लॉक का एक क्रिप्टोग्राफिक हैश और इस ब्लॉक का हैश होता है जो एक साथ जुड़े ब्लॉकों की एक शृंखला बनाता है।

ट्रांजैक्शन (लेनदेन): ये ब्लॉकचेन नेटवर्क पर प्रतिभागियों के बीच डिजिटल संपत्ति या सूचना के हस्तांतरण का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रामाणिकता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक लेनदेन को क्रिप्टोग्राफिक रूप से हस्ताक्षरित किया जाता है।

नोड: नोड एक कंप्यूटर या डिवाइस जिसके माध्यम से प्रतिभागी ब्लॉकचेन नेटवर्क में भाग लेता है। ब्लॉकचेन नोड्स एक दूसरे के साथ संचार करते हैं। नोड सभी लेनदेन की पूरी प्रतिलिपि रखता है। इसमें लेनदेन को मान्य करने, स्वीकार करने और अस्वीकार करने की क्षमता होती है।

स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट: यह एक ऐसा अनुबंध है जो अनुबंध की शर्तों को स्वचालित रूप से लागू करने के लिए कोड किया गया है। एक बार जब कुछ शर्तें पूरी हो जाती हैं, जैसे कि भुगतान प्राप्त होना या एक विशिष्ट तिथि पर पहुंच जाना, तो अनुबंध मध्यस्थों की आवश्यकता के बिना स्वयं निष्पादित (execute) हो जाता है।

लेजर: एक विकेंद्रीकृत डेटाबेस है जो सभी लेनदेन डेटा को कालानुक्रमिक क्रम में संग्रहीत करता है। यह पारदर्शिता और अपरिवर्तनीयता सुनिश्चित करते हुए ब्लॉकचेन पर निष्पादित सभी लेनदेन का रिकॉर्ड रखता है।

कंसेंसस एल्गोरिदम: कंसेंसस यानी सर्वसम्मति एक प्रोटोकॉल है जो विकेंद्रीकृत नेटवर्क में सभी नोड्स को लेनदेन की वैधता पर सहमत होने और ब्लॉकचेन की अखंडता को बनाए रखने में सक्षम बनाते हैं।

ब्लॉकचेन तकनीक के अनुप्रयोग:

आपूर्ति शृंखला प्रबंधन: हाइपरलेजर का उपयोग निर्माता से अंतिम उपभोक्ता तक माल की आवाजाही को ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है, जिससे आपूर्ति शृंखला में पारदर्शिता, अपरिवर्तनीयता और प्रामाणिकता सुनिश्चित होती है।

हेल्थकेयर: हाइपरलेजर गोपनीयता और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए, रोगी के रिकॉर्ड और मेडिकल डेटा के सुरक्षित भंडारण और साझाकरण को सक्षम बनाता है।

वित्त: हाइपरलेजर वित्त में एप्लिकेशन प्रदान करता है, जिसमें भुगतान, व्यापार वित्त और परिसंपत्ति टोकनाइजेशन शामिल है, जो वित्तीय लेनदेन में दक्षता और सुरक्षा प्रदान करता है।

ब्लॉकचेन तकनीक की कार्यक्षमता, पारदर्शिता और अभेद्यता ने डिजिटल जगत में एक नयी क्रांति ला दी है। इसके बाद से इस तकनीक ने बैंकिंग, पब्लिक रिकॉर्ड्स, लैंड डील जैसे क्षेत्रों में बदलाव किए हैं। बैंकिंग और पब्लिक रिकॉर्ड्स में सबसे बड़ी चुनौती है रिकॉर्ड को सुरक्षित रखने की पारदर्शिता और किसी भी तरह की छेड़छाड़, जालसाजी को रोकने की ब्लॉकचेन की प्रक्रिया में इन सभी चुनौतियों का समाधान शामिल है।

अनुगा हाइड्रो और एचपीसी (उन्नत सक्षम कंप्यूटिंग) पर बाढ़ का पूर्वानुमान

गिरीषचंद्र येंडरगाये

परिचय:

बाढ़ का पूर्वानुमान एक महत्वपूर्ण पहलू है, खासकर बाढ़ों के खतरे के अधीन स्थानों में आपदा प्रबंधन में। उन्नत मॉडलिंग तकनीकों का उपयोग करके उन्नत सक्षम कंप्यूटिंग (एचपीसी) संसाधनों के साथ बाढ़ के जोखिम का पूर्वानुमान करने की हमारी क्षमता को प्रभावी ढंग से बढ़ाता है। इस लेख में, हम क्यों करते हैं पूर्वानुमान, अनुगा हाइड्रो मॉडलिंग की प्रक्रिया और इसे एचपीसी प्रणालियों पर कैसे चलाया जाता है, की प्रक्रिया को अन्वेषित करेंगे।

पूर्वानुमान की महत्ता

- **जीवन की रक्षा:** बाढ़ के पूर्वानुमान से लोगों की जीवन की रक्षा की जा सकती है। सही समय पर बाढ़ के आसार का पता लगाने से लोग सुरक्षित स्थानों पर पहुंच सकते हैं।
- **आपातकालीन प्रबंधन:** बाढ़ के पूर्वानुमान सही समय पर आपातकालीन प्रबंधन कार्रवाई करने में मदद करता है। सरकार और संबंधित अन्य संगठन तत्परता से काम कर सकते हैं और अवस्था को नियंत्रित कर सकते हैं।
- **संपत्ति की सुरक्षा:** बाढ़ के पूर्वानुमान से संपत्ति को नुकसान से बचाया जा सकता है। सही समय पर चेतावनी मिलने पर लोग अपनी संपत्ति को सुरक्षित स्थान पर ले जा सकते है।

अनुगा हाइड्रो का परिचय :

अनुगा हाइड्रो एक मुफ्त और ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर पैकेज है जिसमें जल गतिज कम गहराई वाले समीकरणों को मॉडल करने के लिए उच्च क्षमता है, जो कि नदीय बाढ़, तूफानी तटवार और सुनामी जैसी जलवायुविज्ञानिक आपातकालीन घटनाओं का पूर्वानुमान करने के लिए उपयुक्त बनाता है।अनुगा के अधिकांश घटक पाइथन ऑब्जेक्ट-ओरिएंटेड प्रोग्रामिंग भाषा में लिखे गए हैं। गणनात्मक रूप से तकनीकी घटक की संरचनाओं के साथ सीधे काम करने के लिए सी रूटिन्स में पाइथन नमपाई संरचनाओं के साथ लिखे गए हैं।

अनुगा हाइड्रो के तकनीकी तत्व:

- **भूमिगत डेटा संग्रहण:** बाढ़ के पूर्वानुमान के लिए सही भूमिगत डेटा का संग्रह एक महत्वपूर्ण तकनीकी तत्व है। अनुगा हाइड्रो मॉडलिंग में, विभिन्न भौगोलिक जानकारी जैसे कि जलस्तर, जलधारा, और भूमि की ढाल को मापा जाता है।
- **हाइड्रोलॉजिक डेटा विश्लेषण:** अनुगा हाइड्रो मॉडलिंग में हाइड्रोलॉजिक डेटा के विश्लेषण के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसमें वर्षा, जलस्तर, और जलवायु के तत्वों का अध्ययन शामिल होता है।
- **मॉडलिंग और सिमुलेशन:** बाढ़ के पूर्वानुमान के लिए अनुगा हाइड्रो मॉडलिंग में मॉडलिंग और सिमुलेशन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यहाँ विभिन्न भौगोलिक प्रक्रियाओं को मॉडल किया जाता है और उनका सिमुलेशन किया जाता है, ताकि बाढ़ के प्रभाव को समझा जा सके।

अनुगा हाइड्रो मॉडलिंग और सिमुलेशन की प्रक्रिया:

इस मॉडल में अध्ययन के क्षेत्र के ऊपर भूगोल को ध्यान में रखते हुए विभिन्न स्रोतों से पानी को रूढ़कता, ऊपरी डिस्चार्ज और कोस्टल ज्वारों जैसे विभिन्न स्रोतों से भरा जाता है। मॉडल गणितात्मक वातावरण के अंदर भौतिक क्षेत्र की गुणधर्मों की नकल करता है। पानी के प्रवाह को प्रभावित करने वाले पैरामीटर गणनात्मक वातावरण के अंदर सेट किए गए हैं, ताकि बाढ़ की

भराई का पूर्वानुमान किया जा सके। बाढ़ की पूर्वानुमान के लिए अनुगा मेश-आधारित मॉडलिंग का उपयोग करता है। मेश निर्माण में टेरेन डेटा के आधार पर एक 2डी या 3डी ग्रिड बनाया जाता है। यह ग्रिड वह स्थानिक डोमेन का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ बाढ़ के गतिविधि का सिमुलेशन किया जाएगा। मेश विश्लेषण सुनिश्चित करता है कि मेश टैरेन विशेषताएँ सही ढंग से प्रतिनिधित्व करती हैं और विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरणीय चरो को अच्छी तरह से पकड़ती हैं। अनुगा में बाढ़ मॉडलिंग का आधार शैलो वॉटर समीकरण होता है। ये समीकरण जल के प्रवाह को वर्णित करते हैं और वह भी ऊंचाई और गति के विभिन्न बिंदुओं को लेकर।

समीकरण का विस्तार विशेषज्ञता और जल निर्धारण के विशेषज्ञता की स्थानिकता का अध्ययन करता है। समीकरणों को एक संबंधित संदर्भ में प्रस्तुत करके, प्रत्येक स्तर पर जल की ऊंचाई का बेहतर प्रतिनिधित्व मिलता है। अनुगा मॉडलिंग में, शैलो वॉटर समीकरणों को समाधान करने के लिए अनुक्रमिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जो विभिन्न समय-सीमाओं और स्थानिक संदर्भों में जल की ऊंचाई को प्रस्तुत करता है।

एचपीसी (उन्नत सक्षम कंप्यूटिंग) पर निष्पादन:

- **प्रोसेसिंग प्रोसेसर की आवश्यकता:** अगर आप एक अच्छे मेश का उपयोग कर रहे हैं। मेश की अंतराल को आधा करने पर, त्रिभुजों की संख्या 4 गुणा बढ़ जाती है और टाइमस्टेप आधा हो जाता है, इसलिए सामान्यत: मेश की अंतराल को आधा करने से दौड़ने का समय लगभग 8 गुणा बढ़ जाता है। इसे कम करने का एक तरीका यह है कि आप अपनी सिमुलेशन को पैरेलल में चलाएं और अधिक प्रोसेसर का उपयोग करें, ताकि गणना लागत को फैलाया जा सके।

- **प्रोसेसिंग संसाधनों का उपयोग:** एचपीसी संसाधनों का उपयोग अनुगा हाइड्रो मॉडलिंग को कुशलतापूर्वक निष्पादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डेटा प्रोसेसिंग में बड़े मात्रा में डेटा को एकत्रित और पूर्व-प्रोसेस किया जाता है, जो मॉडलिंग के लिए आवश्यक होता है।

एचपीसी संसाधनों से तेजी से और प्रभावी रूप से मॉडलिंग प्रक्रिया को पूरा किया जाता है।

- **एचपीसी पर पैरेलल संस्करण:** एचपीसी पर एमपीआईरन का उपयोग करके विभिन्न कोरों पर मेश त्रिभुजों को वितरित करते हुए अनुगा हाइड्रो पैरेलल में चल सकता है। यह कंप्यूटेशनली महंगा और जटिल हो सकता है, लेकिन पैरेललीकरण विश्वसनीय निर्णयों को प्रदान करता है और विस्तृत विश्लेषण के लिए पर्याप्त समय प्रदान करता है।

यह सभी प्रक्रिया को नीचे चित्र में दर्शायी गई है।

सुरंग में वायु-संचार प्रणाली का अध्ययन

डॉ. विकास कुमार एवं दीपक यादव

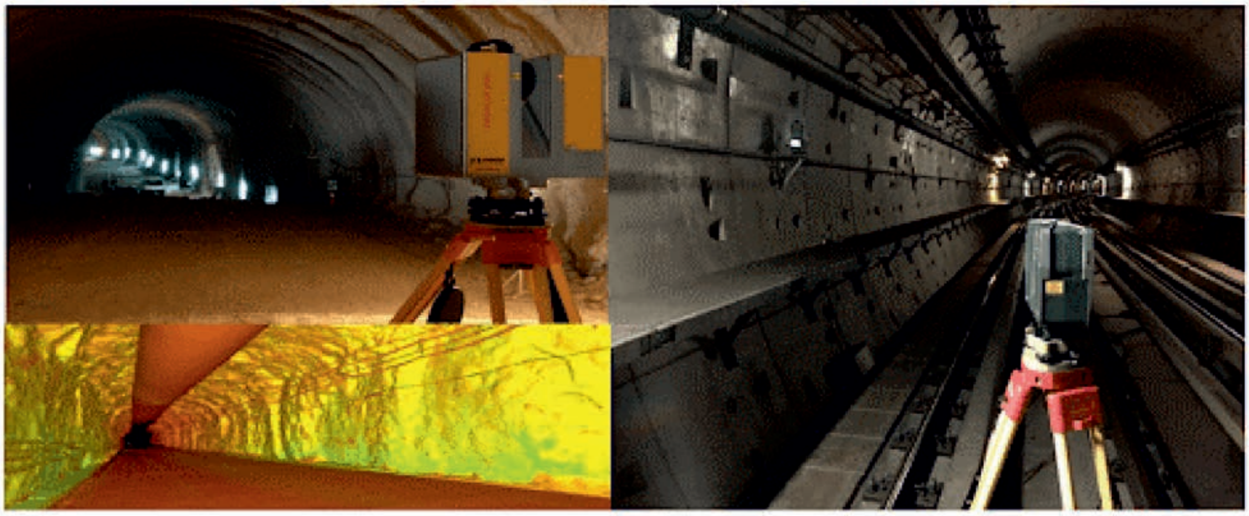

सामान्य तौर पर एक सुरंग को सड़क, रेल, मेट्रो जैसे आधुनिक बुनियादी ढांचे के एक हिस्से के रूप में डिजाइन किया गया है और लोगों के लिए तेजी से परिवहन की बढ़ती आवश्यकता के कारण वे अधिक आवश्यकता बनती जा रही है। बुनियादी ढांचे के हिस्से के रूप में उपयोग की जाने वाली सुरंगें - यानी सड़क, रेल या मेट्रो उद्देश्यों के लिए व्यापक होती जा रही हैं। वे आधुनिक बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण और एकीकृत हिस्सा हैं। अग्नि सुरक्षा उपायों के संदर्भ में सुरंगों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि उदाहरण के लिए, सुरंगों की आग इमारत की आग से अलग तरीके से व्यवहार करती है। SEM-SAFE® हाई-प्रेशर वॉटर मिस्ट सिस्टम के साथ, डैनफॉस फायर सेफ्टी ने एक वास्तविक सड़क सुरंग के अंदर पूर्ण पैमाने पर अग्नि परीक्षणों की एक श्रृंखला सफलतापूर्वक पूरी कर ली है। इन परीक्षणों से पता चला है कि SEM-SAFE® हाई-प्रेशर वॉटर मिस्ट सिस्टम द्वारा संरक्षित सुरंगों के अंदर कार, ट्रक या यहाँ तक कि एक टैंकर में आग लगने की स्थिति में मनुष्यों, फायर ब्रिगेड और संरचनाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है। सुरंग में लगी आग में वेंटिलेशन अग्नि सुरक्षा इंजीनियरिंग का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वायु-संचार का डिजाइन और संचालन आग लगने की घटना के दौरान धुएं और गर्मी को नियंत्रित करने, सुरक्षित निकासी मार्गों को सुनिश्चित करने और अग्निशमन कार्यों को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब आग और जीवन सुरक्षा उपायों की बात आती है तो सुरंगों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है क्योंकि सुरंगों में आग का व्यवहार संरचना से अलग होता है। सुरंग अग्नि सुरक्षा में दो प्राथमिक वायु-संचार रणनीतियों का उपयोग किया जाता है- अनुदैर्ध्य और अनुप्रस्थ वेंटिलेशन।

अनुदैर्ध्य वायु-संचार में सुरंग के अनुदैर्ध्य अक्ष के साथ हवा की आवाजाही शामिल होती है, आमतौर पर एक पोर्टल से दूसरे तक। इसे प्राकृतिक वेंटिलेशन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, जहाँ हवा और तापमान का अंतर वायु प्रवाह को संचालित करता है, या यांत्रिक वेंटिलेशन सिस्टम, जैसे जेट पंखे या सुरंग के साथ रणनीतिक रूप से लगाए गए अक्षीय पंखे द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। अनुदैर्ध्य वेंटिलेशन धुएं के प्रसार को नियंत्रित करने और रहने वालों के लिए एक स्पष्ट भाग निकलने का मार्ग प्रदान करने में प्रभावी है।

अनुप्रस्थ वायु-संचार में यातायात प्रवाह की दिशा के लंबवत, सुरंग के क्रॉस-सेक्शन में हवा की आवाजाही शामिल होती है। यह आम तौर पर पंखों से जुड़े वेंटिलेशन शाफ्ट के उपयोग के माध्यम से पूरा किया जाता है जो या तो हवा को सुरंग में धकेलते हैं या इसे बाहर निकालते हैं, जिससे एक क्रॉसफ्लो पैटर्न बनता है। अनुप्रस्थ वेंटिलेशन धुएं को जमा होने से रोकने में मदद करता है और सुरंग के भीतर दृश्यता में सुधार करता है।

सुरंग:

सुरंग खोदने वाली मशीनें (टीबीएमएस): आधुनिक तकनीक ने सुरंग निर्माण और प्रबंधन को काफी उन्नत कर दिया है, टीबीएम बड़ी मशीनें हैं जिनका उपयोग सटीकता और गति के साथ सुरंगों की खुदाई करने के लिए किया जाता है। वे व्यापक शारीरिक श्रम की आवश्यकता को कम करती हैं और आसपास के वातावरण में व्यवधान को कम करती हैं। सुरंगों को अधिक कुशलतापूर्वक और सटीक रूप से डिजाइन करने के लिए एआई का उपयोग किया जा सकता है। इष्टतम सुरंग डिजाइन तैयार करने के लिए एआई-संचालित डिजाइन उपकरण विभिन्न कारकों, जैसे भूवैज्ञानिक स्थितियों, मिट्टी के गुणों और संरचनात्मक अखंडता आवश्यकताओं को ध्यान में रख सकते हैं। टनल बोरिंग मशीनों (टीबीएम) को अधिक सटीक और कुशलता से निर्देशित करने के लिए एआई का उपयोग किया जा सकता है। एआई-संचालित मार्गदर्शन प्रणाली टीबीएम ऑपरेटरों को बाधाओं से बचने और ट्रैक पर बने रहने में मदद करने के लिए सेंसर से वास्तविक समय डेटा का उपयोग कर सकती है। एआई का उपयोग संभावित खतरों की पहचान और निगरानी करके सुरंग सुरक्षा में सुधार करने के लिए किया जा सकता है। एआई-संचालित सिस्टम सुरंगों में दरारें, रिसाव और अन्य समस्याओं का पता लगाने के लिए सेंसर और कैमरों से डेटा का उपयोग कर सकते हैं। सुरंगों का अधिक कुशलतापूर्वक और सटीक निरीक्षण करने के लिए एआई का उपयोग किया जा सकता है।

रिमोट मॉनिटरिंग सिस्टम: सुरंगों में लगाए गए सेंसर वास्तविक समय में तापमान, आर्द्रता, वायु गुणवत्ता और संरचनात्मक अखंडता जैसे विभिन्न मापदंडों की निगरानी करते हैं। यह डेटा किसी भी विसंगति या संभावित समस्या का तुरंत पता लगाने में मदद करता है।

फायर ऑप्टिक सेंसर: सुरंग के अस्तर में एम्बेडेड फाइबरऑप्टिक केबल वास्तविक समय में संरचनात्मक विकृतियों और तनाव का पता लगा सकते हैं, जो संभावित पतन या संरचनात्मक विफलताओं की प्रारंभिक चेतावनी प्रदान करते हैं।

आपातकालीन संचार प्रणालियाँ: दुर्घटनाओं या आपातकालीन स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए सुरंगें आपातकालीन कॉल बॉक्स, सीसीटीवी कैमरे और लाउडस्पीकर सहित आपातकालीन संचार प्रणालियों से सुसज्जित होती हैं।

लेजर स्कैनिंग: एक उन्नत तकनीक जो भू-तकनीकी और सुरंग निगरानी क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल कर रही है, वह 'लेजर स्कैनिंग' है। इसे समय, लागत और प्रयास को काफी कम करने के लिए जाना जाता है। यह जटिल आकृतियों और सतहों का बहुत स्पष्ट और सटीक विवरण प्रदान करता है। यह बदले में, मौजूदा स्थितियों का संपूर्ण ज्यामितीय दस्तावेज तैयार करने में सहायता करती है।

लेजर स्कैनिंग: लेजर स्कैनिंग उपयोगकर्ता को वस्तु के अनुसार कई विकल्प भी देती है, जिससे निगरानी या तो हवाई या स्थलीय, स्थिर या मोबाइल, स्वायत्त या अन्य मानक स्थलाकृतिक तरीकों के संयोजन में हो सकती है। हाल के विकासों ने, विशेष रूप से सॉफ्टवेयर में, इसे 3डी में सटीक सुरंग निगरानी और विरूपण के लिए एक बहुत सुविधाजनक और लागत प्रभावी उपकरण बना दिया है।

वर्गीकरण: एनएफपीए-502 के अनुसार: सड़क सुरंगों, पुलों और अन्य सीमित पहुंच राजमार्गों के लिए मानक, उन्हें 5 श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

- सुरंग-श्रेणी (X): 90 मीटर से कम लंबाई वाली सुरंगें
- सुरंग-श्रेणी (ए): वे सुरंगें जिनकी लंबाई (90 मीटर) या अधिक है
- सुरंग-श्रेणी (बी): 240 मीटर के बराबर या उससे अधिक लंबाई वाली सुरंगें
- सुरंग-श्रेणी (सी): 300 मीटर के बराबर या उससे अधिक लंबाई वाली सुरंगें

- सुरंग-श्रेणी (डी): 1000 मीटर के बराबर या उससे अधिक लंबाई वाली सुरंगें

- **सुरक्षा उपाय:**

ऐसे अनिवार्य उपाय हैं जिन्हें सुरंग डिजाइन करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए:

- संरचनात्मक अग्नि सुरक्षा प्रणाली
- जीवन सुरक्षा एवं आपातकालीन योजना
- सक्रिय अग्नि शमन प्रणाली
- फायर अलार्म सिस्टम
- वेंटिलेशन सिस्टम
- सुरंगों में यांत्रिक वेंटिलेशन प्रणाली
- सुरंग निर्माण कार्य सुरक्षा एवं स्वास्थ्य

संरचनात्मक अग्नि सुरक्षा प्रणाली:

संरचनात्मक अग्नि सुरक्षा प्रणाली निम्नलिखित बिंदुओं को सुनिश्चित करेगी:

- सुरंग की स्थिरता को प्रभावित करने वाली कोई क्षति नहीं होती है।
- संरचना में कोई स्थायी विकृति नहीं है जो सुरंग की उपयोगिता को प्रतिबंधित करती है।
- आग प्रतिरोधी सामग्रियों का एकीकरण जो आग के फैलने और उसके प्रभाव को रोकने में रुकावट सुनिश्चित करेगा।

जीवन सुरक्षा एवं आपातकालीन योजना:

सुरंगों का वास्तुशिल्प डिजाइन और इसके प्रतिबंधित मौजूदा मार्ग मुख्य चुनौतियों में से एक हैं, जिन्हें डिजाइन चरण के दौरान ध्यान में रखा जाएगा:

- सुरंगों को निकासी के लिए स्पष्ट संकेत चिह्नों से सुसज्जित किया जाएगा।
- सुरंगें स्पष्ट निकासी मार्गों से सुसज्जित होंगी।
- सुरंगों को सुरक्षित शरण क्षेत्रों और निकासी के लिए संचार प्रणालियों के साथ डिजाइन किया जाएगा।

अग्निशमन प्रणाली:

सुरंगों को अग्निशमन प्रणालियों के साथ डिजाइन किया जाएगा जो सुरंगों के अंदर आग लगने की स्थिति में लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। ये प्रणालियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

- पानी आधारित अग्निशमन प्रणाली - वेट स्प्रिंकलर फायरफाइट सिस्टम, जिसे जलप्रलय प्रणाली भी कहा जाता है, उसमें पानी का उपयोग अग्निशमन के लिए होता है । फोम स्प्रिंकलर फायरफाइट सिस्टम वह सिस्टम है जिसमें फोम का उपयोग अग्निशमन के लिए होता है, जहाँ लागू हो। सुरंगों में हाई प्रेशर वॉटर मिस्ट फायरफाइट सिस्टम, जो एक नवाचार है, वह ऐसा सिस्टम है जिसमें सुरंगों में हाई प्रेशर वाला पानी का मिस्ट उपयोग अग्निशमन के लिए होता है।
- स्टैंडपाइप प्रणाली
- अग्निशमन विभाग कनेक्शन
- आग बुझाने वाला पानी

- विभिन्न वर्गीकरण के आधार पर अग्निशामक यंत्र
- जलप्रलय प्रणाली

जांच एवं नियंत्रण प्रणाली:

इंजीनियरिंग अभ्यास के रूप में, आग दमन प्रणाली सक्रियण पहचान प्रणाली से दिए गए संकेतों से आती है, यह सुनिश्चित करने के लिए सुरंगों को एक सटीक पहचान प्रणाली के साथ डिजाइन किया जाएगा।

- एमई सिस्टम को सक्रिय करने के लिए आग का शीघ्र पता लगाना।
- आग लगने की स्थिति में निकासी के लिए अलर्ट
- सुरंग के भीतर उपयोग की जाने वाली सभी एकीकृत प्रणाली का नियंत्रण और निगरानी

वेंटिलेशन सिस्टम:

सुरंगों के अंदर होने वाली अधिकांश आग से होने वाली मौतें आग से उत्पन्न धुएं के साँस लेने के कारण होती हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए सुरंगों को सटीक वेंटिलेशन सिस्टम से सुसज्जित किया जाना चाहिए।

- सुरंगों के अंदर वायु प्रवाह को नियंत्रित करें (अनुदैर्ध्य और अनुप्रस्थ वेंटिलेशन)
- लोगों की सुरक्षितता सुनिश्चित करने के लिए, आग लगने की स्थिति में धुएं पर नियंत्रण आवश्यक है ताकि इसका संचय न हो। धुएं के प्रसार और उसके प्रत्यक्ष प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एक सीएफडी सिमुलेशन डिज़ाइन किया गया है। आग लगने की स्थिति में धुआं और गर्मी के प्रसार को रोकने के लिए वेंटिलेशन सिस्टम को सावधानीपूर्वक प्रबंधित करना चाहिए। इसमें पंखे की गति को समायोजित करना, वायु प्रवाह की दिशाओं को बदलना या धुआं निकालने वाली प्रणालियों को सक्रिय करना शामिल हो सकता है। कम्प्यूटेशनल तरल गतिकी (सीएफडी) मॉडलिंग और अग्नि सिमुलेशन का उपयोग अक्सर वेंटिलेशन रणनीतियों को अनुकूलित करने और आग लगने के दौरान धुएं और गर्मी के व्यवहार की पूर्वानुमान करने के लिए किया जाता है।

सुरंगों में यांत्रिक वेंटिलेशन प्रणाली

मैकेनिकल वेंटिलेशन सिस्टम में बिजली के पंखे, एग्जॉस्ट और ब्लोअर जैसे यांत्रिक उपकरणों का उपयोग किया जाता है जो सुरंग के भीतर निकास गैसों को हटाने का कार्य करता है और सुरंग में ताजी हवा को प्रवाहित करने में मदद करता है। अब चाहे कोई भी उपकरण लगाया जाए, वे तीन मुख्य सेवाएं प्रदान कर सकते हैं:

- फूंकना
- बहुत थकाने वाला
- उड़ान और थकान का संयोजन

तुन्नेल वेंटिलेशन प्रणाली में संगणनीय तरंजनीय तरंत्रिकता का उपयोग:

संगणनीय तरंजनीय तरंत्रिकता तकनीक का उपयोग तुन्नेल वेंटिलेशन प्रणाली के डिजाइन और प्रबंधन में किया जाता है। यह तकनीक अभियांत्रिकी और वैज्ञानिक द्वारा वायु प्रवाह के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने में मदद करती है। संगणनीय तरंजनीय तरंत्रिकता अध्ययन से यह समझा जाता है कि कैसे वेंटिलेशन प्रणाली को बेहतर बनाया जा सकता है, ताकि तुन्नेल के भीतर वायु धारा सुचारू रूप से संचारित हो सके। इससे अच्छी वेंटिलेशन, सुरक्षा, और उच्चावलोकन सुनिश्चित होता है, जिससे निकट संकेतकों की सुरक्षा बढ़ती है और अग्निशमन की सुरक्षा को भी ध्यान में रखा जा सकता है।

- मैकेनिकल वायु-संचार सिस्टम

सुरंग निर्माण कार्य सुरक्षा एवं स्वास्थ्य

सुरंग निर्माण कार्यों के दौरान सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने के लिए, ड्रिलिंग, ब्लास्टिंग, उत्खनन, शॉट निर्माण और मलकिंग के कार्यों को करते समय पूर्ण उपाय करना आवश्यक है।

सुरंग के अंदर धूल के धुएं और जहरीली गैसों को उचित वेंटिलेशन की मदद से कुशलतापूर्वक हटाया जा सकता है। टनल में काम करने वाले मजदूरों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार ने यह कदम उठाया है। इस प्रकार की संरचना का अनुभव करने वाले लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सुरंग अग्नि सुरक्षा एक अनिवार्य दृष्टिकोण है। दूसरा कारण यह है कि सुरंगों को जीवन भर के लिए डिजाइन किया गया है और इसकी लागत किसी भी संरचना की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है, और कोई भी नहीं चाहता कि पहली आग लगने पर ही क्षति हो। कुल मिलाकर,

प्रभावी सुरंग वेंटिलेशन अग्नि सुरक्षा डिजाइन का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सुरंगें रोजमर्रा के उपयोग और आपातकालीन स्थितियों दोनों के लिए सुरक्षित रहें। वेंटिलेशन तकनीक और मॉडलिंग तकनीकों में प्रगति सुरंग की आग से जुड़े जोखिमों को कम करने और जीवन और बुनियादी ढांचे की रक्षा करने की हमारी क्षमता को बढ़ा रही है।

क) वॉल्ट धंसाव और निकासी अभिसरण का मापन ख) बड़ी विकृति के कारण पतन ग) गंभीर बड़े विरूपण का खतरा घ) बड़ी विकृति को कम करने के लिए शॉटक्रीट

संदर्भ

- राष्ट्रीय अग्नि सुरक्षा संघ, 2011, एनएफपीए 502, सड़क सुरंगों, पुलों और अन्य सीमित पहुंच वाले राजमार्गों के लिए मानक। एनएफपीए।
- वू, बी., वान, वाई., जू, एस., लिन, वाई., हुआंग, वाई., लिन, एक्स. और झांग, के., 2024, राजमार्ग सुरंग निर्माण में ढहने के जोखिम के सुरक्षा मूल्यांकन पर शोध बुद्धिमान संलयन पर आधारित हेलिओन।
- वोगेल, एम. और रास्ट, एच.पी., 2000. अल्पट्रांजिट-एक चुनौती के रूप में निर्माण में सुरक्षा: बहुत गहरी सुरंग निर्माण में स्वास्थ्य और सुरक्षा पहलू, टनलिंग और भूमिगत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, 15(4), पीपी.481-484।
- ज़िंग, आर., ली, एम., दाई, सी., जू, पी., झांग, जे., वांग, एच., वांग, डब्ल्यू. और हू, जेड., 2023. गतिशील नियंत्रण प्रणाली पर अध्ययन प्रथम-क्रम विलंब और पूर्वानुमानित क्षतिपूर्ति नियंत्रण मॉडल के आधार पर सुरंग परिवर्तनीय वायु मात्रा वेंटिलेशन इंजीनियरिंग रिसर्च जर्नल।
- https://tunnelsmanual.piarc.org/en/safety

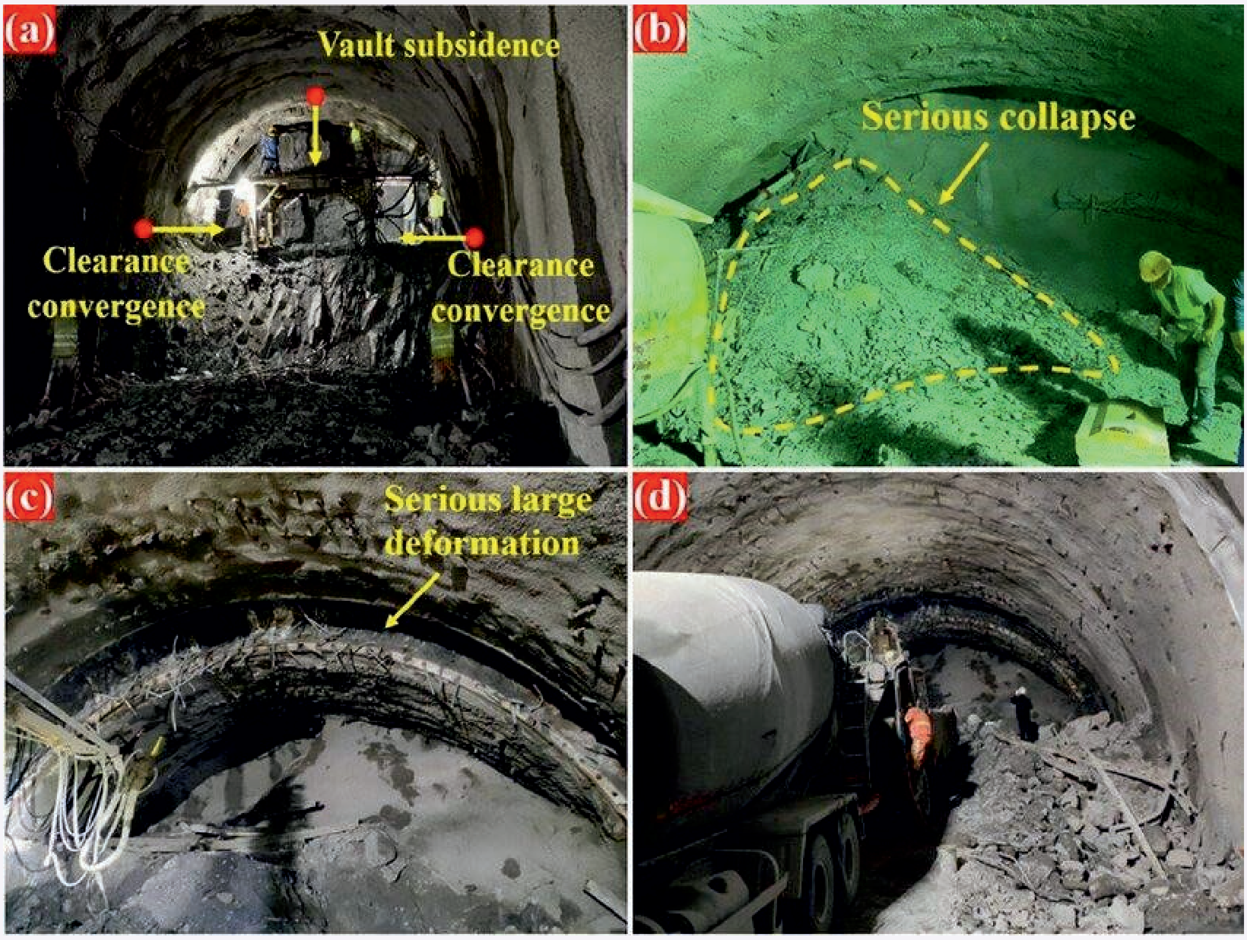

साहित्य यात्रा

पधारो म्हारे देश...
(सफर विरासत धरोहर का)

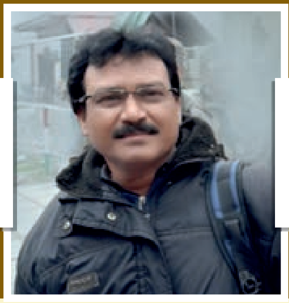

किशोर पाटील

राजस्थान भारत का एक रंगीन और ऐतिहासिक राज्य है, जो अपनी सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है।

मुझे कई दिनों से राजस्थान को जानने की उत्सुकता थी। सौभाग्य से, बीकानेर राज्य अभिलेखागार में विरासत लिपि संरक्षण नामक एक आधिकारिक परियोजना शुरू हुई और राजस्थान जाने का अवसर मिला।

मेरा काम टाइपोग्राफी से संबंधित है। मारवाड़ी लिपि के फॉन्ट का निर्माण एवं विरासत लिपि के संरक्षण से संबंधित कार्य बीकानेर राज्य अभिलेखागार में प्रारंभ हुआ। जिसमें जोधपुरी और बीकानेरी शैली के फॉन्ट निर्माण करना और उनकी विरासत को संरक्षित करना था।

इस विकास के लिए मैंने राजस्थान के विभिन्न राजाओं की लिखित पांडुलिपियों का अध्ययन और शोध किया। मारवाड़ी भाषा विशेषज्ञों से चर्चा की। इस लिपि को जानने और संशोधन के दौरान मुझे वास्तव में राजस्थान के इतिहास और सौंदर्य का अद्भुत संगम देखने और जानने को मिला।

राजस्थान को देखते ही राजस्थान की खूबसूरती आँखों में झलकती है और मन के कैनवास पर पेंटिंग की तरह छप जाती है। बस मौसम का साथ होना जरूरी है। नवंबर, दिसंबर और जनवरी के महीने में खूबसूरती दोगुनी बढ़ जाती है!

राजस्थान में वीरों की अनेक कहानियाँ हैं; राजपूतों, राणाओं के साहस और बलिदान की कहानी से मन रोमांचित हो जाता है। जब मैंने इस ऐतिहासिक भूमि पर कदम रखा तो राजस्थान मेरी कल्पना से कई गुणा अधिक भव्य था। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते समय राजस्थान के ग्रामीण दृश्य मन को मोह लेते हैं और अविस्मरणीय छाप छोड़ जाते हैं। गाँव की महिलाओं और पुरुषों को रंग-बिरंगी पहनावे और पगड़ी में खेती करते हुए देखकर आप खुद को राजस्थानी संस्कृति के बेहद करीब महसूस करते हैं।

मैं परियोजना के काम से अक्सर राजस्थान के दौरे पर जाता रहता था और जब भी समय मिलता था तो राजस्थान को जानने की कोशिश करता था। एक पेशेवर फोटोग्राफर होने के नाते मुझे ऐसे विरासत स्थलों को जानने और फोटोग्राफी करने में बहुत दिलचस्पी थी।

लेकिन परियोजना के कार्य के चलते मुझे राजस्थान को जानने का उतना समय नहीं मिलता था, फिर मैंने अपने परिवार के साथ पूरा राजस्थान घूमने की योजना बनाई और निकल पड़ा राजस्थान की सैर पर।

अपनी यात्रा के दौरान हमने राजस्थान के प्रसिद्ध स्मारकों, किलों, महलों, मंदिरों और ऐतिहासिक स्मारकों का दौरा किया।

उनमें से एक गुलाबी शहर जयपुर में अरावली शिखर पर स्थित **आमेर किला,** राजस्थान का एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। राजस्थान के ऐतिहासिक स्मारक के रूप में जाना जाने वाला यह किला अपनी स्थापत्य कला और इतिहास के लिए काफी प्रसिद्ध है। आमेर किला पर्यटकों और फोटोग्राफरों के लिए एक खूबसूरत जगह है।

जयगढ़ किला: एक बहुत ही भव्य और ऐतिहासिक रचना है। इस किले की सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें दुनिया की सबसे बड़ी तोप है और यहाँ से जयपुर शहर का आकर्षक दृश्य दिखाई देता है।

नाहरगढ़ किला: जयपुर में स्थित कई महलों और खूबसूरत ऐतिहासिक इमारतों में से यह नाजुक नक्काशी और शानदार पत्थर के काम के लिए प्रसिद्ध है। नाहरगढ़ किला एक अभेद्य किला है, जो जयपुर के रक्षक के रूप में खड़ा है।

यदि आप राजस्थान के किसी भी पर्यटन स्थल पर जाएं तो आपको एक संग्रहालय मिलेगा, जिसमें बीते युग के युद्धों के दौरान इस्तेमाल किए गए औजारों, राजाओं और रानियों के बेहतरीन कपड़े, खाद्य सामग्री, कलाकृतियाँ, पेंटिंग और शिल्प का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिलेगी।

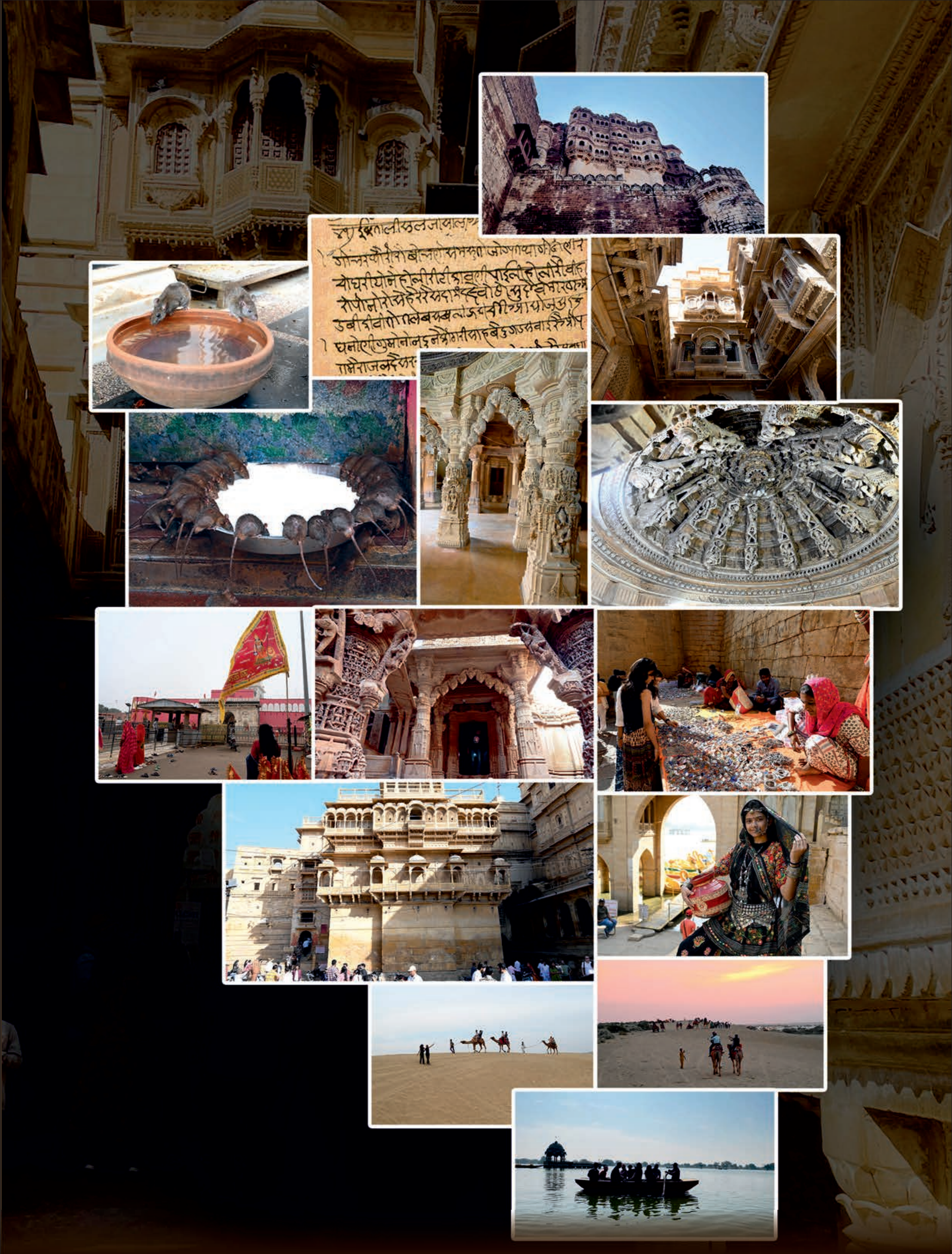

जूनागढ़ किला: जूनागढ़ किला बीकानेर में स्थित है। यह बहुत सुंदर, भव्य और शानदार संरचना है। यह बेहद आकर्षक है।

राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में से एक और आश्चर्यजनक स्थल है- करणी माता मंदिर। यह न केवल राजस्थान का प्रमुख मंदिर है बल्कि एक ऐतिहासिक स्मारक भी है, जिसका निर्माण महाराजा गंगा सिंह ने करवाया था। इस मंदिर की खासियत यह है कि यहाँ बहुत सारे काले रंग के चूहे रहते हैं, जहाँ भी देखो वहाँ चूहे ही चूहे नजर आते हैं। इस मंदिर को चूहों के मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। एक साथ इतने सारे चूहों का अस्तित्व, वो भी इंसानों के बीच, एक बड़ा रहस्य है।

जैसलमेर किला: भारत के प्रमुख किलों और प्रमुख ऐतिहासिक स्मारकों में से जैसलमेर किला भी एक है, जिसे यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल में शामिल किया गया है। यह किला दुनिया के सबसे बड़े किलों में गिना जाता है।

जैसलमेर से सिर्फ दो घंटे की दूरी पर स्थित जैसलमेर युद्ध संग्रहालय है, जहाँ "लोंगेवाल की लड़ाई" को ऑडियो विजुअल रूप में दिखाया गया है। जिसे देख कर हमें अपने देश और अपने जवानों पर गर्व महसूस होता है।

जैसलमेर में हमारी सबसे अद्भुत, रोमांचकारी और मनोरंजक यात्रा डेजर्ट सफारी थी। नवंबर, दिसंबर और जनवरी के महीने में रेगिस्तान में कैंप लगाए जाते हैं। यहाँ संध्या को पारंपरिक वेशभूषा में नृत्य किया जाता है। ऊँट की सफारी भी बहुत शानदार होती है। रेगिस्तान में ऊँट पर सफारी करना एक अलग ही अनुभव देता है। हम विशेष रूप से डेजर्ट का आनंद लेने ही आए थे, यहाँ की शाम खूबसूरत होती है, सूर्यास्त के समय सूरज की बिखरी किरणें और संध्या की लाली से आकाश अलौकिक लगता है। इसकी किरणों से रेतीले रेगिस्तान की रेत भी सुनहरी हो जाती है, मानो शाम होते ही रेगिस्तान सोने का हो गया हो। अद्भुत होता है यह दृश्य!

इस यात्रा के दौरान हमने चाँद बावड़ी, मेहरानगढ़ किला, गड़ीसर झील, उम्मेद भवन पैलेस जैसी कई जगहें देखीं। हर जगह की कहानी अपने आप में अद्भुत है। सच ही कहा गया है कि राजस्थान राजाओं की भूमि है।

आखिर भलो तो सब भलो।

अंत बुरो तो सब बुरो।

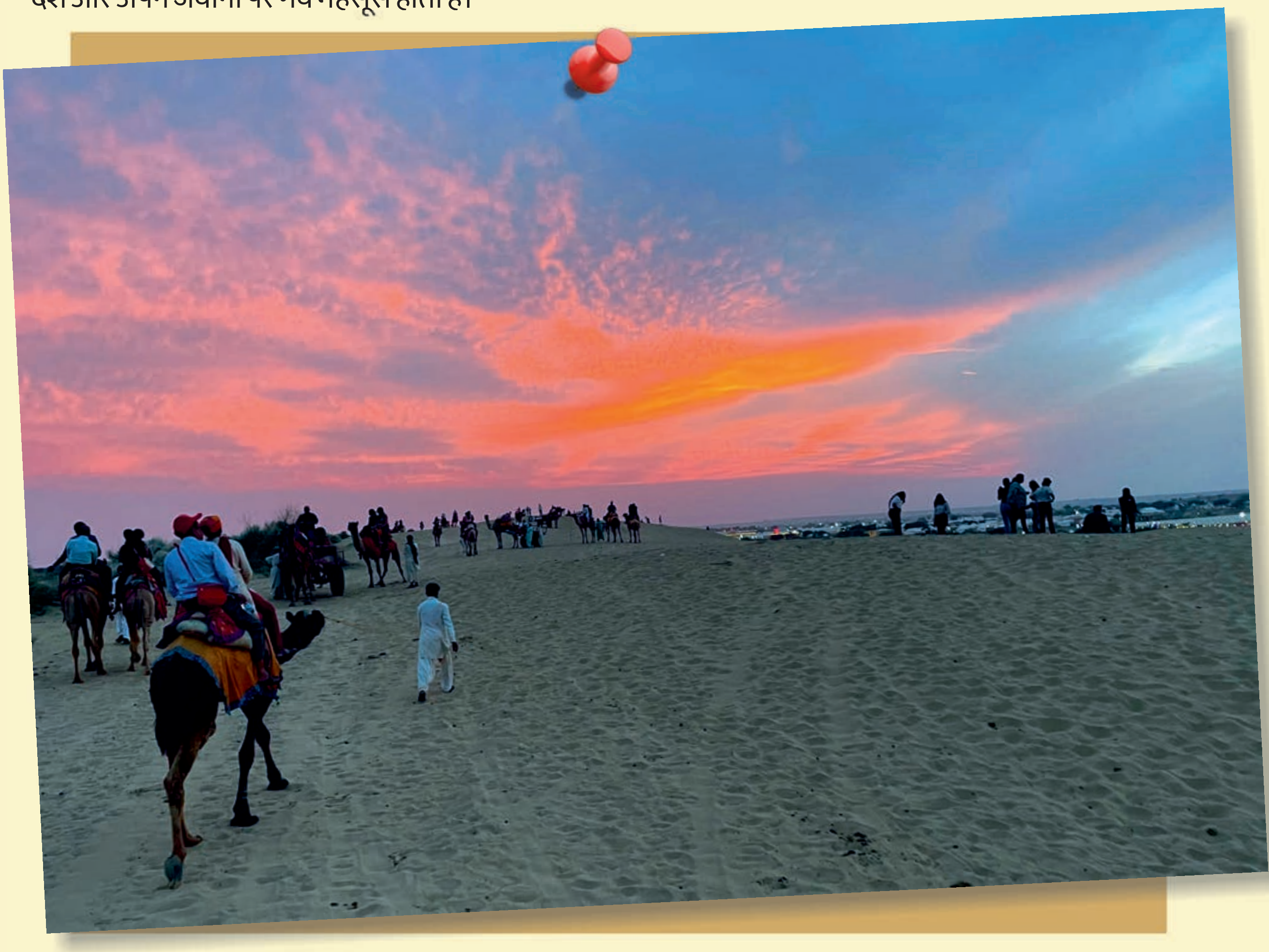

भाषा विमर्श

भाषा का अभिसरण

डॉ. अतीउर रहमान खान

पृष्ठभूमि:

भाषा का अभिसरण जिसे हम अंग्रेजी में लैंग्वेज कंवर्जेन्स कहते हैं, वह एक ऐसी भाषाई परिघटना है, जो भारतीय उपमहाद्वीप और विशेष रूप से भारत जैसे भाषाओं में विविधता वाले देशों में देखी जाती है। भाषा का अभिसरण भौगोलिक क्षेत्रों में दो या अधिक भाषाओं के संपर्क में होता है, जिसके परिणामस्वरूप समान भाषाई विशेषताओं वाली भाषाओं के समूह बनते हैं, जो प्रत्येक भाषा की प्रोटो-भाषा से विरासत में नहीं मिले थे। इन भौगोलिक और भाषाई समूहों को भाषाई क्षेत्र या 'स्प्रेचबंड' क्षेत्र कहा जाता है।

भारत वर्ष में पांच प्रमुख भाषा समूह है, जैसे: इंडो-आर्यन, द्रविड़, मुंडा, तिब्बती-बर्मी और ग्रेट अंडमान। भारत भाषाई रूप से विविधतापूर्ण देश है, जहाँ कई इंडो-आर्यन और द्रविड़ भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं के बोलने वालों के बीच घनिष्ठता और ऐतिहासिक संबंधों के कारण, ऐसी कई भाषाओं के उदाहरण हैं जिनमें इंडो-आर्यन और द्रविड़ तत्वों का मिश्रण देखने को मिलता है। इस लेख में कुछ उदाहरण दिए गए हैं, जिसमें बांग्ला भाषा और हिंदी के संदर्भ में कुछ विशेष रूप से उल्लेख किए गए हैं।

द्रविड़ और इंडो-आर्यन भाषाएं:

जैसा कि ऊपर बताया गया है, द्रविड़ और इंडो-आर्यन भाषाएँ एक-दूसरे से लंबे समय से जुड़ी होने के कारण कई समान विशेषताओं को साझा करती हैं। द्रविड़ प्रभाव के कारण भारतीय-आर्यन ध्वनिविज्ञान की प्रमुख विशेषताएँ हैं। पाली और प्राकृत में अंतः स्वर विराम व्यंजनों का उच्चरित होना या उनका कमजोर होना; व्यंजन समूहों का सरलीकरण (उदाहरण के लिए, संस्कृत अष्ट- प्राकृत अट्ठ- '8' बन गया, संस्कृत सप्त- प्राकृत सत्त- '7' बन गया, आदि)।

द्रविड़ भाषाओं में व्यापक रूप से शाब्दिक (शब्दावली) उधार लिया गया है, लेकिन इंडो-आर्यन से संरचनात्मक (या तो ध्वन्यात्मक या व्याकरणिक) उधार के कुछ लक्षण ही दिखाई देते हैं, जबकि इंडो-आर्यन द्रविड़ भाषाओं से शाब्दिक उधार की तुलना में अधिक संरचनात्मक उधार दर्शाता है।

द्रविड़ और इंडो-आर्यन भाषाओं के मिलन का इतिहास:

इस सिद्धांत पर काफी साहित्य उपलब्ध है कि भारत एक भाषाई क्षेत्र है, जहाँ विभिन्न भाषा परिवारों ने व्यापक क्षेत्रीय और सामाजिक द्विभाषिकता के माध्यम से अभिसारी संरचनाएँ विकसित की हैं। अब यह अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है कि इंडो-आर्यन और द्रविड़ भाषा परिवारों ने दूसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व तक के संपर्क के कारण ध्वनि प्रणाली (स्वर विज्ञान) और व्याकरण में अभिसारी संरचनाएँ विकसित कीं। इंडो-आर्यन की सबसे प्रारंभिक किस्में संस्कृत के रूप हैं। ऋग्वेद (1500 ईसा पूर्व) के संस्कृत पाठ में एक दर्जन से अधिक द्रविड़ ऋणशब्दों का पता लगाया जा सकता है, जिनमें उलूखल- 'ओखली', कुंड 'गड्ढा', खला- 'खलिहान', काना- 'एक आँख वाला' और मयूर 'मोर' शामिल हैं।

रेट्रोफ्लेक्स व्यंजनों (जिन्हें जीभ की नोक को कठोर तालु के मध्य में उठाने से उत्पन्न किया जाता है) का प्रचलन भी संस्कृत और द्रविड़ भाषा बोलने वालों के बीच संपर्क के कारण ही संभव हुआ है।

ऋग्वेद में द्रविड़ उधार शब्दों की मौजूदगी का अर्थ है कि इसकी रचना के समय तक द्रविड़ और आर्यन बोलने वाले महान गंगा के मैदानी इलाकों में एक भाषी समुदाय में विलीन हो गए थे, जबकि द्रविड़ बोलने वालों के स्वतंत्र समुदाय इंडो-आर्यन क्षेत्र (उत्तर-पश्चिम में

ब्राहुई, पूर्व में कुरुख-माल्टो और पूर्व और मध्य भारत में गोंडी-कुई) की परिधि में चले गए थे।

इंडो-आर्यन और मुंडा परिवार:

वर्तमान अध्ययन इंडो-आर्यन और मुंडा भाषाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, पूर्वी-मध्य भारत में, झारखंड में भाषा अभिसरण पर करीब से नजर डालता है। हालाँकि यह सर्वविदित है कि इंडो-आर्यन भाषाएँ जो इस क्षेत्र में सामान्य भाषा के रूप में कार्य करती हैं - जैसे कि सदरी, बंगाली और उड़िया- का मुंडा भाषाओं के मॉर्फोसिंटैक्स (रूप-वाक्यविन्यास) और शब्दकोष पर भारी प्रभाव पड़ा है। इस अध्ययन की तरफ मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। मेरी जानकारी के अनुसार कई अभिसरणों पर अब तक किसी का ध्यान नहीं गया है, जिनमें से कई मुंडा में उत्पन्न हुए प्रतीत होते हैं, जबकि अन्य अनिश्चित मूल के हैं।

पश्चिम बंगाल के कुछ क्षेत्रों में हिन्दी बोली पर बांग्ला भाषा का प्रभाव:

भाषा संपर्क और अभिसरण में होने वाली अनेक बातों के बीच, आइए हम दक्षिण पश्चिम बंगाल के कुछ भागों में हिंदी की एक बोली में हो रहे संपर्क - प्रेरित परिवर्तनों का मामला देखें। स्वर सामंजस्य (Vowel Harmony) बंगाली भाषा की एक अनोखी विशेषता है। भारत के पूर्वी भाग में भाषाई अभिसरण के कारण हम हावड़ा और मेदिनीपुर जिलों में छोटी हिंदी बोलियों पर बंगाली का बहुत प्रभाव पाते हैं।

इस क्षेत्र में हिंदी की बोली के कुछ उदाहरणों से हम इस परिघटना को समझेंगे।

आइए हम हिंदी बोली के ध्वन्यात्मक और रूपात्मक प्रभावों को देखें। बांग्ला के ध्वन्यात्मक और रूपात्मक प्रभावों के अलावा हम शब्दावली के संदर्भ में भाषा के अभिसरण के प्रभावों को भी देखते हैं। जिस प्रकार हम पश्चिम बंगाल के इन जिलों को देख रहे हैं, जो बिहार और झारखंड के साथ सीमा साझा करते हैं, वहीं हिंदी की बोलियों पर भाषा के विभिन्न स्तरों पर बांग्ला का प्रभाव है।

स्वर विज्ञान में, हिंदी की इस बोली में स्वर सामंजस्य से प्रभावित होते हैं। बांग्ला में इस विशिष्ट ध्वन्यात्मक विशेषता के परिणामस्वरूप हिंदी बोली में भी स्वरों का ह्रास होता है। जबकि हिंदी के इस रूप की आकृति विज्ञान में बांग्ला के अत्यधिक प्रभाव के कारण लिंग भेद समाप्त हो गया है।

उधार-शब्दों में भी (स्वर और व्यंजन के संदर्भ में) बांग्ला प्रकार का उपचार इन शब्दों के बांग्ला भाषा में उच्चारण के तरीके से काफी प्रभावित है।

भाषा संपर्क से उत्पन्न परिवर्तन:

इस लेख में हम बंगाल के इस क्षेत्र की हिंदी बोलियों को एमएचडी कह रहे हैं। एमएचडी बांग्ला की विशेषताओं वाले विभिन्न समकालिक ध्वन्यात्मक परिवर्तनों को दर्शाता है। बांग्ला में हिंदी के विपरीत ऐसे ध्वन्यात्मक अंतर एमएचडी में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी /अ/के/ऍ/ (/a/>/ae/) में बदलने का एक विशेष मामला है, जिसे बांग्ला ध्वन्यात्मकता में काम करने वाली विशिष्टताओं के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, अगर इसे वीएच के शुद्ध प्रभावों के रूप में नहीं माना जाता है।

स्वर सामंजस्य हिंदी में नहीं पाया जाता है, लेकिन हिंदी की यह बोली स्वर प्रतिस्थापन के माध्यम से अपने स्वरों पर वीएच के प्रभाव को दिखाने का एक अच्छा उदाहरण है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एमएचडी में पाए जाने वाले अधिकांश परिवर्तन इस बात की प्रतिकृति हैं कि बांग्ला अपने विशेष वातावरण में उन ध्वनियों को कैसे संभालती है। हम कुछ ध्वन्यात्मक पहलुओं पर गौर करेंगे।

बांग्ला के साथ संपर्क के ध्वन्यात्मक पहलू:

जिस प्रकार बांग्ला में धातु में 'किन', 'लिख' और 'जित' बदलकर 'केना', 'लेखा' और 'जेता' हो जाते हैं, उसी प्रकार मातृभाषा हिंदी में भी उन्हीं मूल मौखिक धातुओं में परिवर्तन देखा जाता है। इसे नीचे दिए गए उदाहरणों से समझा जा सकता है।

हिंदी का आरंभिक /ई/ परिवर्तित होने के बाद /ए/ बन जाता है (/i/ > /e/):

यह एमएचडी की एक खास विशेषता है, जहाँ सामने का उच्च स्वर सामने का मध्य स्वर बन जाता है, यानी एमएचडी में आरंभिक और मध्य स्थिति में आने वाला /i/ बदलकर /e/ हो जाता है। एमएचडी की यह खास

विशेषता बांग्ला में स्वर सामंजस्य के कारण हो सकती है।

उदाहरण (ई > ए):

हिंदी: जितना ; एमएचडी: जेत्ता; बांग्ला: जतो

हिंदी: कितना ; एमएचडी: केत्ता; बांग्ला: कतो

हिंदी: इतना ; एमएचडी: एत्ता; बांग्ला: एतो

हिंदी का प्रारंभिक /उ/ परिवर्तित होने के बाद बन जाता है /ओ/ (/u/ > /o/):

स्वर कम करने का एक और उदाहरण बांग्ला स्वर सामंजस्य से संबंधित है, सामने का उच्च स्वर सामने के मध्य स्वर में बदल गया।

उदाहरण (उ > ओ):

हिंदी: उस्ताद; एमएचडी: ओस्ताद; बांग्ला: ओस्ताद

हिंदी: चुप कर; एमएचडी: चुप कर; बांग्ला: चुप करो

बंगाल के इस क्षेत्र में बोली जाने वाली हिंदी की इस बोली में भी कुछ व्यंजनों के संदर्भ में बांग्ला का समान प्रभाव देखा जाता है। भाषा संपर्क की स्थिति के परिणामस्वरूप व्यंजनों के साथ व्यवहार करने की बांग्ला शैली निम्नलिखित तरीकों से अपनाई जाती है:

उदाहरण:

हिंदी: गुलाब; एमएचडी: गोलाप; बांग्ला: गोलाप

हिंदी: हाथ; एमएचडी: हात; बांग्ला: हात

उपसंहार:

पश्चिम बंगाल के इन जिलों में हिंदी की बोली की शब्दावली में भी भाषा के अभिसरण का एक सामान्य प्रभाव दिखाई देता है। भाषा साझा करने की सीमाओं में तथा जहाँ बोलने वाले एक दूसरे के साथ घुलते-मिलते हैं, वहाँ विभिन्न संपर्क-प्रेरित प्रभाव देखे जाते हैं। इंडो-आर्यन और द्रविड़, इंडो-आर्यन और मुंडा भाषा परिवारों के बीच एक बड़ा आदान-प्रदान देखा और दर्ज किया गया है। प्रोफेसर इमान्यु भाषा का अभिसरण के इन विशेषताओं को सूचीबद्ध करने में अग्रणी रहें हैं। यह संभव है कि इन भाषा परिवारों के बीच भाषाई तत्वों का आदान-प्रदान हुआ हो, खास तौर पर सीमावर्ती क्षेत्रों में जब एक भाषा दूसरी भाषा से मिलती है। यह आदान-प्रदान एक ही परिवार की भाषाओं के बीच और एक अलग भाषा परिवार की भाषाओं के बीच भी हो सकता है।

मराठी भाषा की उत्पत्ति, इतिहास और विकास

तेजस विलास मुर्डीव

माना जाता है कि मराठी भाषा की उत्पत्ति आर्य भाषा परिवार में हुई। लगभग 2000-1500 ईसा पूर्व, आर्य भारत आए जो कि मध्य एशियाई मैदानी चरवाहे थे और इंडो-यूरोपीय भाषाओं को लेकर उपमहाद्वीप में आए। उनकी भाषा का नाम भारत आने पर विवादित है। वैदिक काल से पहले और दौरान, वैदिक और प्राकृत भाषाएँ बोली जाती थीं। बाद में संस्कृत भाषा मुख्य हुई। माना जाता है कि मराठी भाषा संस्कृत के प्रभाव में बनाई गई प्राकृत बोली से उत्पन्न हुई। मराठी भाषा नौवीं शताब्दी से प्रचलित है। इस प्राकृत भाषा में अधिकांश मराठी शब्द पाए जाते हैं। इसलिए मराठी का निर्माण पूर्व-वैदिक भाषा, प्राकृत भाषा, पाली भाषा, संस्कृत भाषा, अपभ्रंश (अपभ्रंश अभिरण की भाषा) से हुआ होगा। इसकी अवधि को उन शिलालेखों, ताम्रपत्रों और अन्य स्रोतों के आधार पर निर्धारित करने की कोशिश की गई है, जिनमें मराठी भाषा का उल्लेख होता है। श्रवणबेलगोला में गोमटेश्वर की मूर्ति के पास मराठी में एक शिलालेख है, जिसमें लिखा है, "श्री चामुंडराये करवियले। श्री गंगाराये सुत्ताले करवियले।" यह भारत के प्राचीनतम मराठी शिलालेखों में से एक माना जाता है। श्रवणबेलगोला में शिलालेख 1116-17 ई. में बनाया गया था। रायगढ़ जिले के अक्षी गाँव में भी एक पुराना मराठी शिलालेख पाया गया है, जिसकी तारीख 934 ईसा में है, जो भारत में पहला ज्ञात शिलालेख माना जाता है। कुछ विद्वान मानते हैं कि मराठी का उल्लेख वर्ष 680 ईसा के ताम्रपत्र में "पन्ना और पृथ्वी" शब्दों से होता है, लेकिन भाषा विशेषज्ञों की इस बात से सहमति नहीं है। वर्ष 859 ईसा में प्रकाशित "धर्मोपदेशमाला" पुस्तक में भी मराठी भाषा का उल्लेख है। समग्र रूप से, मराठी का इतिहास मुख्य रूप से महाराष्ट्र और गोवा के विभिन्न कालांतरों में विकसित हुआ है। आइए, हम निम्नलिखित अवधियों के माध्यम से मराठी को देखें।

प्राचीन काल - यह काल 1200 ई. यानी ज्ञानेश्वरी लिखने के पहले का समय है। इस काल में 'विवेकसिंधु' नाम देखा जा सकता है। 'ज्ञानेश्वरी' मराठी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काव्य है, जो 13वीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर द्वारा लिखा गया था। यह ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता की मराठी में संक्षिप्त रूप से व्याख्या करता है। इसके माध्यम से मराठी भाषा का विकास और प्रसार हुआ, जिसने बाद में इस भाषा को साहित्यिक और धार्मिक क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

यादव काल - (1250 ई. - 1350 ई.) मराठी साहित्य का महत्वपूर्ण एवं विकासशील काल था। इस काल में देवगिरी यादव साम्राज्य ने मराठी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया। इस अवधि में कई कवियों और लेखकों को शाही संरक्षण प्राप्त हुआ और साहित्यिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिला। इसी काल में वारकरी पंथ का उदय हुआ, जिसमें विभिन्न जातियों के संत जैसे नामदेव, गोरा कुंभार, सवता माली, चोखा मेला, बांका महार, सेना नवी, कान्होपात्रा आदि ने भक्ति कविताओं की रचना की। महानुभाव संप्रदाय की शुरुआत भी इसी काल में हुई, जिसने मराठी साहित्य को एक नया धार्मिक और सामाजिक आयाम दिया। इस अवधि में चक्रधर स्वामी, भावे व्यास, महिंद्रा व्यास, नागदेव, महादम्बा आदि ने भी मराठी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।इसी काल में प्रतीकात्मक लिपि की उत्पत्ति भी हुई, जिसने मराठी भाषा के लेखन और साहित्यिक विकास को और भी सुगम बनाया।

बहामनी काल - बहामनी काल (1350 ई. से 1600 ई. तक) दक्षिण भारत में यादव राजवंश के समाप्त होने के बाद मुस्लिम शासनकाल का आरंभ हुआ। इस काल में

फारसी भाषा आधिकारिक भाषा थी, जिसने मराठी भाषा को अपने शब्दों से प्रभावित किया, लेकिन मराठी भाषा का विकास जारी रहा। इस युग में मराठी साहित्य में नरसिंह सरस्वती, भानुदास, जनार्दन स्वामी, एकनाथ, दसोपंत, रंगनाथ, विष्णुदास नामा, चोंभा जैसे कवियों ने भक्तिपूर्ण कविताएँ रचीं। छत्रपति शिवाजी महाराज के समय, इस अवधि (1600-1700 ई.स.) में मराठी स्वराज्य की स्थापना हुई, जिससे मराठी भाषा पर फारसी शब्दों का प्रभाव कम होने लगा। छत्रपती शिवाजी महाराज ने रघुनाथ पंडित को संस्कृत शब्दों की योजना बनाने के लिए कहा, जिससे भारतीय पद्धति में शासन को सुविधाजनक बनाया जा सके। इस समय में संत तुकाराम और समर्थ रामदास स्वामी ने लोकप्रियता हासिल की और मराठी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुक्तेश्वर और वामन पंडित ने भी मराठी कविता के विकास में योगदान दिया। इसी तरह, शिवकल्याण, रामवल्लभदास, मोरया गोसावी, संत महिपति ने चरित्र को लिखा और 'संतविजय', 'भक्तिविजय' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में अपना योगदान दिया।

पेशवा काल - (1700 ई. से 1818 ई. तक) भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण दौर रहा है, जब मराठों का शासन पश्चिमी भारत में विस्तारित हुआ था। इस काल में मोरोपंत ने मराठी भाषा में कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं, जिनसे साहित्यिक विकास हुआ। कवि श्रीधर ने अपनी कविताओं के माध्यम से गाँवों तक अपनी बात पहुँचाई, जिनमें 'हरिविजय' और 'पांडवप्रताप' शामिल हैं। इस युग में श्रृंगार और वीर रस को विशेष महत्व प्राप्त हुआ, जिससे मराठी साहित्य में 'लावणी' और 'पोवाड़ा' जैसी नई साहित्यिक विधाएँ उत्पन्न हुईं। इस अवधि में बखर लेखन की भी शुरुआत हुई, और निरंजन माधव, कृष्ण दयार्णव, रामजोशी, प्रभाकर, होनाजी बाला, सगन भाऊ जैसे कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह अवधि महाराष्ट्र के इतिहास में एक उच्चारणीय समय रही, जब साहित्यिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी यहाँ विकास की रफ्तार बढ़ी।

अंग्रेजी काल - अंग्रेजी काल (1718 ई. से प्रारंभ हुआ) मराठी साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण दौर था। इस अवधि में गद्य लेखन की शुरुआत हुई तथा कहानियाँ, पत्रिकाएँ और अन्य गद्य प्रकाशित होने लगे। मराठी भाषा के विद्वान मेजर थॉमस कैंडी ने इस अवधि में मराठी में विराम, अर्धविराम, प्रश्न चिह्नों का प्रयोग शुरू किया। भारतीय दंड संहिता और भारतीय नागरिक प्रक्रिया संहिता के मराठी अनुवाद किए, ब्रिटिश काल या अर्वाचीन युग के दौरान भारतीय समाज पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव बढ़ा और इसी के साथ शिक्षा संस्थाएं भी स्थापित हुईं। इन संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन हुआ, जिन्हें शास्त्री और पंडितों ने लिखा। मराठी साहित्य का विकास अंग्रेजी राज्य के अंतर्गत हुआ और पंडित विष्णुशास्त्री चिपकूणकर के लेखों ने इसे अपने समृद्ध रूप में निखारा। इस दौरान मराठी साहित्य नवलेखन के रूप में भी विकसित हुआ। आधुनिक काल में मराठी साहित्य ने उच्च स्थान प्राप्त किया है और यह आज भारतीय भाषाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसका सुंदर और समृद्ध साहित्य हमें विश्वास दिलाता है कि मराठी भाषा का इतिहास और समृद्ध संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान है।

मराठी भाषा की वर्णमाला

स्वरः (कुल संख्या-12) अ आ इ ई उ ऊ ऋ लृ ए ऐ ओ औ

स्वरादीः (कुल संख्या-2) अं अः

व्यंजनः (कुल संख्या-34)

क-वर्गः क ख ग घ ङ

च-वर्गः च छ ज झ ञ

ट-वर्गः ट ठ ड ढ ण

त-वर्गः त थ द ध न

प-वर्गः प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ

संयुक्त व्यंजनः (कुल संख्या-2)

क्ष ज्ञ

हिंदी : भारत की धड़कन

सविता गौड़ा

भाषा संचार का केंद्र है। जितनी अधिक भाषाएँ आप सीखते हैं, आपके लिए विभिन्न संस्कृतियों के साथ तालमेल बिठाना उतना ही आसान हो जाता है। भारत एक विविध पारिस्थितिकी तंत्र से सुसज्जित है और जैसा कि आप जानते हैं कि केवल कर्नाटक राज्य में ही अनेकानेक कन्नड बोलियाँ हैं तथा कोडवतक, तुलु, हव्यका, संकेती जैसी भाषाएँ भी हैं जो कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों के लिए पूर्ण प्रासंगिक हैं।

जब मैं पुणे आई, तो शुरू में भाषा का सामना करना मेरे लिए मुश्किल लगता था । ऐसी बात नहीं थी कि मैं हिंदी से परिचित नहीं थी। मैं आप सभी को बताना चाहती हूँ कि मैंने प्रवीण परीक्षा उत्कृष्ठता के साथ उत्तीर्ण की है, हालांकि, हम दक्षिण में अपनी मातृभाषा की जगह अंग्रेजी को अनुकरणात्मक रूप से अपनाने में हिचकिचाते नहीं हैं।हम अपने घर में भी कन्नड की तुलना में अंग्रेजी को अधिक प्रश्रय देते हुए उसी में बातचीत करते हैं और शायद यही कारण रहा है कि मुझे हिंदी बोलने में संकोच होता था तथा मैं यह भी सोचा करती थी कि धारा प्रवाह नहीं बोलने या अशुद्ध हिंदी बोलने से अच्छा है कि हिंदी बोलने से बचा जाए।

अब पुणे में एक वर्ष बिताने के बाद मुझे हिंदी की खूबसूरती समझ में आ रही है। आज मैं हिंग्लिश में साइबर सुरक्षा जागरूकता व्याख्यान देने में सक्षम हूँ। जैसे-जैसे मैंने भाषा की खोज शुरू की, मैंने जनसंचार की भाषा के रूप में हिंदी के उपयोग की सराहना करने में सक्षम हो गई हूँ।

शायद आप यह जानते होंगे कि मंदारिन, स्पेनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक है। 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने निर्णय लिया कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी उर्दू की जगह संघ की आधिकारिक भाषा बनेगी। यह निर्णय व्यौहार राजेन्द्र सिंह, हजारी प्रसाद द्विवेदी, काका कालेलकर, मैथिली शरण गुप्त और सेठ गोविंद दास जैसी प्रभावशाली हस्तियों के महत्वपूर्ण प्रयासों के बाद आया, जिन्होंने हिंदी के पक्ष में पूरे भारत में अभियान चलाया। उनकी मेहनत रंग लाई और14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया गया, और संयोग देखिए कि यह शुभ दिन व्यौहार राजेन्द्र सिंह का 50 वा जन्मदिन भी था।तभी से भारत में हर वर्ष 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

दक्षिण प्रशांत में स्थित फिजी में लगभग 300 से अधिक द्वीपसमूह शामिल हैं । आश्चर्यजनक रूप से अवधी, फिजी द्वीप समूह की आधिकारिक भाषाओं में से एक है। प्रारंभ में फिजी में यह हिंदुस्तानी के रूप में मान्यता प्राप्त थी, और बाद में इसे उनके चौथे संविधान में फिजी हिंदी का नाम दिया गया। उल्लेखनीय रूप से, फिजी हिंदी के 380,000 वक्ता हैं। दक्षिण अफ्रीका में, संविधान के अनुसार, अखिल दक्षिण अफ्रीकी भाषा बोर्ड को अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिंदी के लिए सम्मान को बढ़ावा देने और सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य किया गया है, जिससे हिंदी वहाँ एक संरक्षित भाषा बन सके। इसके अलावा, अबू धाबी अमीरात में, हिंदी तीसरी आधिकारिक भाषा होने का गौरव रखती है, जिससे संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय कर्मचारियों को अपनी मूल भाषा में शिकायत दर्ज करने की सुविधा मिलती है।

इंटरनेट के माध्यम से फैले हिंदी साहित्य, संगीत और फिल्में लोकप्रिय हैं। गूगल की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वर्ष की तुलना में हिंदी सामग्री का उपभोग करने

वाले लोगों में 94% की वृद्धि हुई थी। दिलचस्प बात यह है कि भारत में 60% इंटरनेट उपयोगकर्ता वास्तव में हिंदी में सामग्री पसंद करते हैं। हालांकि भारत में 22 आधिकारिक भाषाएँ हैं, लेकिन हिंदी सबसे व्यापक रूप से बोली जाती है। यही कारण है कि यह किसी भी व्यवसाय के लिए एक स्मार्ट कदम है, जो अपने विस्तार के लिए अपनी सामग्री को पेशेवर रूप से हिंदी में अनुवादित करके परोसते हैं।। यह सुनिश्चित करता है कि भारतीय बाजार में लोग समझें कि आप क्या कह रहे हैं।

कुल मिलाकर एक बात तो मुझे समझ में आ गई है कि हिंदी राष्ट्रीय भाषा है या नहीं, इस पर बहस और वाद-विवाद को एक तरफ रखते हुए, हमें इस भाषा की खूबसूरती को समझना होगा। हिंदी कविता और हिंदी में स्टैंडअप कॉमेडी बिल्कुल अलग स्तर की है। अब मैं बॉलीवुड के क्लासिक गानों का आनंद बेहतर तरीके से ले पाती हूँ, क्योंकि मैं उनके बोल बेहतर तरीके से समझ सकती हूँ।

अब मैं सभी भारतीयों के लिए हिंदी सीखने और बोलने की जरूरत को समझने लगी हूँ। मैं पूरे भारत में संचार माध्यम के रूप में हिंदी के प्रयोग की पुरजोर वकालत करती हूँ, क्योंकि इसके चलते किसी भाषाई बाधा के व्यापार करने में आसानी होगी। इस नारे के माध्यम से हम हिंदी के महत्व को बखूबी समझ सकते हैं, "हिंदी भाषा को समर्थन दें और इसे बढ़ाएं, यह हमारी भाषा और हमारी पहचान है, इसे बचाएं।"

इंटरनेट के माध्यम से मुझे इन खूबसूरत पंक्तियों को पढ़ने का अवसर मिला,

लिपट जाता हूँ माँ से और मौसी मुस्कुराती है,

मैं उर्दू में गजल कहता हूँ हिंदी मुस्कुराती है।

यह पढ़कर मुझे लगता है हिंदी बहुत सुंदर भाषा है। है ना? इसे जानने के लिए आप भी रोजाना अपने कार्य में इसका प्रयोग करें।

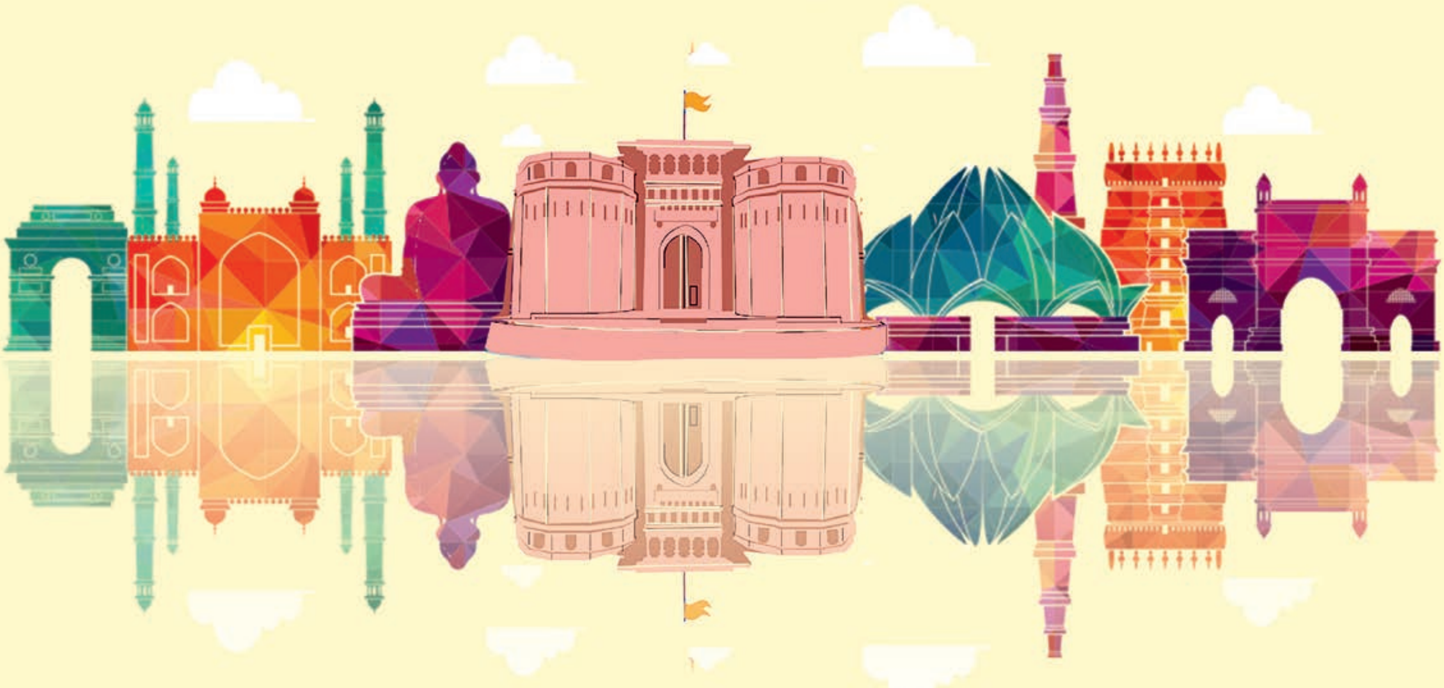

यात्रा संस्मरण

हमारी कश्मीर यात्रा

तानाजी झेंडे एवं अरुण वर्मा

कितनी खूबसूरत ये तस्वीर है,

मौसम बेमिसाल बेनजीर है,

ये कश्मीर है, ये कश्मीर है।

इस साल एलटीसी के लिए काफी बुकिंग हुई और सबसे ज्यादा बुकिंग कश्मीर के लिए हुई। फिर मन में विचार आया कि क्यों ना इस बार हम लोग भी एक समूह बनाकर कश्मीर चलें, क्योंकि जो भी कर्मचारी कश्मीर गए थे, उन्होनें आने के बाद उनसे कश्मीर की तारीफ सुनकर ऐसा उत्साह जगा दिया था कि हमें भी अब लगने लगा कि अब कश्मीर यात्रा पर जरूर जाना चाहिए।

कश्मीर की प्रकृति को निहारने, वहाँ की बर्फीली चादर में अपने को समेटने, वहाँ की स्वर्गिक मलय समीर में साँस लेने के लिए हम भी अपने परिवार और कुछ सी-डैक के सहकर्मी हित-मित्रों के साथ जून महीने में निकल पड़े थे पुणे से कश्मीर की यात्रा पर।

तो आइए, आपको भी यात्रा कराता हूँ कश्मीर की, वहाँ के वादियों की, घाटियों की, वहाँ की संस्कृति के साथ ही वहाँ की खूबसूरती की और आपको साक्षी बनाता हूँ कुछ अविस्मरणीय पलों की । एक-एक दिन की कहानी, सुनिए हमारी जुबानी।

श्रीनगर : झेलम नदी के तट पर स्थित श्रीनगर बेहद ही खूबसूरत पर्यटन स्थल है । श्रीनगर को इसके प्राकृतिक उद्यानों, मनोरम झीलों और हस्तशिल्प के लिए जाना जाता है। जहाँ एक ओर डल झील श्रीनगर की शोभा बढ़ाती है, वहीं दूसरी ओर अनेकानेक मंदिर इसकी दिव्यता को दर्शाते हैं। 1700 मीटर ऊंचाई पर बसा श्रीनगर विशेष रूप से झीलों और हाउसबोट के लिए जाना जाता है।

- **लाल चौक :** सबसे पहले हम पहुंचे लाल चौक। यहाँ हम अपने देश की आन, बान और शान यानी तिरंगे को प्रणाम करके अपनी यात्रा का शुभारंभ किया। हमें यहाँ जगह-जगह भारतीय सैनिक नजर

आए, जो हमें बता रहे थे कि हम पूरी तरह सुरक्षित हैं और बड़े आराम से धरती के इस स्वर्ग पर भ्रमण कर सकते हैं।

- **डल झील :** फिर हम पहुंचे डल झील। डल झील को 'फूलों की झील', 'कश्मीर के मुकुट का हीरा' और 'श्रीनगर का गहना' आदि उपनामों से भी जाना जाता है। यहाँ की उतंग ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ, दूर-दूर तक बर्फ से ढके पहाड़, शांति से चलते शिकारे और पूर्ण शांति के साथ स्थिर खड़े हाउसबोट हमें एक अविस्मरणीय दुनिया की सैर करा रहे थे, जो किसी स्वर्ग से कम नहीं था।
- **मुगल गार्डन :** मुगल गार्डन के क्या कहने! यहाँ के हरे-भरे सुगंधित फूल हमें सुगंधित कर रहे थे। हम एकदम तरो-ताजा महसूस कर रहे थे। ट्यूलिप गार्डन जून की महीने मे बंद रहता है, इसलिए हम उसका भ्रमण नहीं कर पाए।

पहलगाम घाटी : फिर हम पहुंचे पहलगाम घाटी। कुछ तो बात है पहाड़ की हवाओं में, तन के साथ-साथ मन को भी छू जाती हैं। पृथ्वी पर सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है पहलगाम घाटी। यह सुरम्य हिल स्टेशन हमें लुभा रहा था। यहाँ की शांति ईश्वरत्व का बोध करा रही थी। दिव्य हिमालय के बीच स्थित, यह आकर्षक शहर प्रकृति प्रेमियों और साहसिक उत्साही लोगों को एक शांतिपूर्ण विश्राम प्रदान करता है।

- **सेब के बगीचे:** यहाँ के सेब के खेत हमें लुभा रहे थे। पहलगाम अपने आश्चर्यजनक परिदृश्यों और बर्फ से ढके पहाड़ों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इसके सेब के बागीचे मनमोहक हैं। घाटी में फैले हरे-भरे बगीचे, पहले से ही मंत्रमुग्ध कर देने वाले परिवेश में जादू का स्पर्श जोड़ते हैं।
- **बेताब घाटी :** बेताब घाटी अमरनाथ यात्रा मंदिर के रास्ते में स्थित है। यहीं बेताब फिल्म की शूटिंग हुई थी। इस फिल्म की अपार सफलता के चलते इस घाटी का नाम हगन या हगून से बदलकर बेताब घाटी पड़ गया। दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले में स्थित, लुभावने दृश्यों, हरे-भरे घास के मैदानों, बर्फ से ढके पहाड़ों और बहती नदियों से भरपूर, घाटी की प्राचीन सुंदरता और शांत वातावरण ने इसे पहलगाम के आसपास के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक बना दिया है। यहाँ हमने पानी में घुड़सवारी का लुफ्त उठाया। इसका रोमांच ही कुछ और था। घोड़े बिना लगाम खींचे आपको सही जगह ले जाते हैं। इसे देखने के लिए हम कई सालों से बेताब थे।

गुलमर्ग : गुलमर्ग एक सुरम्य शहर है, जहाँ हिमालय की चोटियाँ चमकती हुई लुभाती हैं, हरे-भरे चरागाह आँखों की रोशनी बढ़ाते हैं और देवदार के पेड़ों से ढकी बर्फ की ढलानें फिसलने के लिए आतुर करती हैं।

- **गंडोला राइड :** हमने यहाँ स्कीइंग, स्नोबोर्डिंग और ट्रैकिंग का आनंद लिया। साथ ही हमने गोल्फिंग, घुड़सवारी और माउंटेन बाइकिंग का भी आनंद लिया। कश्मीर एक ऐसी जगह है, जहाँ सबसे अच्छे दोस्तों के साथ सबसे अच्छी यादें बनती हैं।

- **बर्फ और साहसिक गतिविधियाँ :** हम गंडोला राइड से घुड़सवारी करते हुए स्नो पॉइंट तक पहुंचे और वहाँ पर स्कीइंग के साथ ही स्नो एडवेंचर एक्टिविटी की। गरम-गरम चाय का आनंद लिया। दोस्तों और फैमिली का साथ और क्या चाहिए!
- **सोनमर्ग :** प्राकृतिक खूबसूरती की अद्भुत मिसाल है सोनमर्ग। जीरो प्वाइंट जोजिला दर्रा" लद्दाख के प्रवेशद्वार' के रूप में जाना जाता है। यह जीरो पॉइंट सोनमर्ग से 25 किमी दूर स्थित एक उच्च ऊंचाई वाला खूबसूरत स्थान है। यह अपने मनमोहक दृश्यों, बर्फ से ढकी चोटियों और हरे-भरे घास के मैदानों के लिए जाना जाता है।

- **स्नो बाइकिंग-** स्नो खेलों में रुचि रखने वालों के लिए यह खास जगह है। इस जगह पर आइस स्कीइंग करते हुए प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए बर्फ पर चलने वाले वाहन किराए पर लेने के विकल्प हैं। यहाँ हमने काफी आनंद उठाया।
- **ट्रेकिंग और लंबी पैदल यात्रा-** यदि आप पहाड़ प्रेमी हैं, तो आप पैदल जीरो प्वाइंट और इसके आसपास की सुंदरता का पता लगा सकते हैं। यहाँ विभिन्न ट्रैकिंग मार्ग उपलब्ध हैं। सबसे प्रसिद्ध ट्रेक थाजवास ग्लेशियर का है, जहाँ आप जीरो पॉइंट से ट्रैकिंग शुरू कर सकते हैं और ग्लेशियर तक पैदल या टट्टू से पहुंच सकते हैं।

"कश्मीर, एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रकृति की सुंदरता कभी फीकी नहीं पड़ती। कश्मीर, जहाँ हर कदम स्वर्ग की ओर बढ़ते कदम जैसा लगता है।" कश्मीर, एक ऐसी भूमि है जहाँ हर कोना फोटोग्राफरों के लिए स्वर्ग है। कश्मीर एक ऐसी जगह है, जहाँ सबसे अच्छे दोस्तों के साथ सबसे अच्छी यादें बनती हैं। कश्मीर के सफर के सुनहरे पल अपने मन में संजोकर हमने अलविदा कहा कश्मीर को और चल पड़े हमारे गाँव की तरफ।

मेरा नाम बॉण्ड है- रस्किन बॉण्ड !

लक्ष्मी पानट

भारत के उत्तर में स्थित उत्तराखंड राज्य के मसूरी नामक शहर में मई माह का मौसम बहुत खूबसूरत होता है । इस महीने में मसूरी के फूलों की सुंदरता और मनमोहक वातावरण का अद्भुत आनंद उठाया जा सकता है । वर्ष 2023 के 21 मई को यहाँ कुछ खास था- यह दिन जग-प्रसिद्ध भारतीय लेखक रस्किन बॉण्ड के 89 वे जन्मदिन का था । किसी लेखक से मिलने का यह मेरा पहला अवसर था।

पहले थोड़ा लेखक के बारे में जानते हैं - रस्किन बॉण्ड जी ने सौ से अधिक किताबें और कहानियाँ लिखी हैं। वह प्रकृति और पहाड़ों के बारे में लिखी अपनी कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं। पहाड़ों में पले-बढ़े होने के कारण उनकी कहानियों में अक्सर पहाड़, पेड़ और जानवर होते हैं । उन्होंने छोटी सी उम्र से ही लिखना आरंभ कर दिया था। उनके लिखने की शैली समझने में आसान है, इसलिए बच्चे, युवा और वृद्ध सभी उनकी किताबें पढ़ने का आनंद लेते हैं।

मसूरी में मॉल रोड पर स्थित पुराने और प्रसिद्ध केम्ब्रिज बुक स्टोर में अनोखा माहौल था। वहाँ दोपहर डेढ़ बजे से बच्चों एवं उनके अभिभावकों की लंबी कतार लगनी शुरू हो गई थी। रस्किन बॉण्ड जी को अपना "दोस्त" मानने वाले बच्चे भारत के कोने कोने से आए थे- पुणे, कोलकाता, हैदराबाद दिल्ली आदि। दोपहर की धूप के बावजूद सभी का उत्साह देखते बन रहा था। बच्चे अपने दोस्त "रस्टी" के लिए पत्र लिख कर लाए थे, कुछ बच्चे चित्र, फूल और उपहार ले कर आए थे, कुछ अपना गिटार ले कर उनके लिए गाना चाहते थे। बच्चों का यह प्रेम कह रहा था कि रस्किन बॉण्ड जी ने उनके कोमल मन को मोहित कर दिया था। सोशल मीडिया के युग में भी बच्चे इनकी कहानियों से प्रभावित थे, एवं अपने भावविश्व में रस्किन बॉण्ड जी को महत्वपूर्ण स्थान दिया था।

बुक स्टोर के बाहर असाधारण शोर था, और वहाँ चल रही चर्चा के विषय कुछ अनोखे थे। लोग एक-दूसरे के साथ रस्किन बॉण्ड जी की किताबों के बारे में चर्चा कर रहे थे। वे उनकी कविताओं और कहानियों की महिमा का वर्णन कर रहे थे । मैं भी वहाँ पहुंच कर अपने परिवार सहित कतार में खड़ी थी। आज रस्किन बॉण्ड जी अपने फैंस के साथ मिलने वाले थे। मेरी भी उम्मीद थी कि मैं भी उनसे प्रत्यक्षतः मिलूं।

बुक स्टोर में खड़े लोग रस्किन बॉण्ड जी द्वारा लिखित किताबों का अवलोकन कर रहे थे । तभी, वहाँ खलबली मची- रस्किन बॉण्ड जी वहाँ पर पधार चुके थे । हम लोगों ने उनका तालियाँ बजाकर जोरदार स्वागत किया। वे धीरे-धीरे चलते हुए बुक स्टोर में जाकर बैठ गए। एक-एक करके वे सभी प्रशंसको से मिलने लगे। मेरी भी बारी आयी- तब मै आनंद विभोर हो उठी और उन्हें प्रणाम किया। मेरे बेटे द्वारा उनके लिए बनाया गया चित्र व पत्र उसने उन्हें आदरपूर्वक दिया। उन्होंने पत्र में लिखी कुछ पंक्तियाँ पढ़ी एवं प्रेम पूर्वक बेटे के साथ धीमी आवाज में बातचीत की । उनके परिवारजनों ने सभी प्रशंसको की सुविधा के लिए रस्किन बॉण्ड जी के साथ तस्वीर खींचने की व्यवस्था की थी । सभी प्रशंसक अपने हीरो से मिलकर प्रफुल्लित थे । देहरादून के परिपेक्ष्य में लिखी उनकी कहानियाँ मानो सजीव हो उठी थीं।

बच्चे रस्किन बॉण्ड जी द्वारा लिखी किताबों से अपने पसंद की पुस्तकों का चयन कर उस पर हस्ताक्षर के लिए बॉण्ड जी से अनुरोध कर रहे थे । मेरी प्रति पर हस्ताक्षर किए जाने के कारण, यह अनुभव मेरे लिए और भी यादगार बन गया।

सभी प्रशंसकों ने मिलकर रस्किन बॉण्ड जी के जन्मदिन के अवसर पर गीत गाया एवं तत्पश्चात जलपान ग्रहण किया। मसूरी के स्कूली बच्चे भी उनको बधाई देकर मिठाइयों का आनंद ले रहे थे।

रुस्किन बॉण्ड जी के साथ मिलने का यह अनुभव मेरे लिए अत्यंत यादगार रहा । सरल स्वभाव एवं सादगी उनके व्यक्तित्व को निखार रहा था । लेखन के प्रति उनकी निष्ठा, छोटे बच्चों के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार मेरे लिए उच्च आदर्श थे । 89 वें वर्ष में पदार्पण करने के बावजूद उनकी लेखन ऊर्जा सराहनीय है- यह हम सबके लिए अत्यंत प्रेरणादायी है। जन्म दिन के अवसर पर उनकी दो नई पुस्तकों का प्रकाशन भी किया गया- द गोल्डन इयर्स: द मेनी जोइज ऑफ़ लिविंग अ गुड लौंग लाइफ, ऑल टाइम फेवरिट नेचर स्टोरीज

(The golden years: The many joys of living a good long life, All time favourite nature stories)

रुस्किन बॉण्ड जी के साथ मिलने का यह अनुभव मेरे लिए एक अविस्मरणीय क्षण बना । यह मेरे जीवन का एक नया अध्याय था, जिससे मैंने अपने स्वप्नों को पुनः ऊर्जावान किया और साहित्यिक यात्रा को और भी गहराई दी । मैं आशा करती हूँ कि आगे भी मुझे ऐसे साहित्यिक दिग्गजों से मिलने और सीखने का मौका मिलेगा । अपितु मैं यह संदेश देना चाहूँगी कि यात्राओं का आयोजन करने से पहले प्रदीर्घ काल से कार्यरत व्यक्तियों से मिलने की योजना भी बनाएं, जिससे यात्रा का आनंद हमें बौद्धिक रूप से भी समृद्ध कर सके ।

कविता

प्रियतम तुम आन मिलो

ऋचा रस्तोगी

प्रेम का प्रसंग हो, सपनों से रंग हो
अधीर मेरा मन हो, रुके-रुके क्षण हो
आकाश जब निर्मल हो, धरती जब निश्छल हो
धूप कुछ अध खिली-सी हो,
बदरी कुछ छटी-छटी सी हो

ऐसे में.... ऐसे में तुम आन मिलो,
प्रियतम तुम आन मिलो ।

फूलों को संग लिए, तोहफे कुछ चंद लिए
अधरों पर मुस्कान भरे, भाल पर दमक लिए
सांझ के छोर पर, तारों की चमक लिए

ऐसे .... ऐसे तुम आन मिलो,
प्रियतम तुम आन मिलो ।

तुम बिन सूनी-सूनी अब रैना है
मौन हूँ मैं, अब किसी से क्या कहना है
चाँदनी भी मूक सी खड़ी रही
ये सांझ भी तेरी आस में ढल गई
क्यों... क्यों ना तुम आन मिले,
प्रियतम तुम आन मिले ।

फिर भी ... फिर भी...

इस विरहा में अलग-सा रंग है
नहीं हो तुम, पर ये तो अंग संग है
तुम ना सही, तुम्हारी यादें तो आई हैं
कहीं भी मैं रहूँ, मेरे संग-संग हैं

काश.... काश तुम फिर भी आन मिलो!
प्रियतम तुम आन मिलो ।

संकल्प

अमित गुप्ता

दिमाग मिला है सबसे ज्यादा,
इस दुनिया में इंसानों को,
तो अपना हुनर दिखाओ तुम,
हुनरमंद बनो... इंसान हो तुम।

उठो तनो हुंकार भरो,
अपनी शक्ति का संचार करो,
हर मुश्किल दूर हटा दो तुम,
शक्तिमान बनो...इंसान हो तुम।

बाजू में ताकत भरकर के,
करो मुकाबला डटकर के,
खुद की हिम्मत ना आंको कम,
मजबूत बनो...इंसान हो तुम।

समय-समय पर इस जीवन में,
संकट के बादल छाएंगे,
संकट से ना घबराओ तुम,
हिम्मती बनो...इंसान हो तुम।

निराश ना हो, हताश ना हो
कमजोर हो तुम, ये अहसास ना हो,
हर दुविधा को मिटा दो तुम,
विश्वस्त बनो...इंसान हो तुम।

मुख्तसर-सी है मिली जिंदगी,
व्यर्थ ना इसे गंवाओ तुम,
करो वो...जो मिसाल बने,
कर्मशील बनो...इंसान हो तुम।

ऐसा कभी नहीं हो सकता,
संघर्ष बिना जीवन कट जाए,
हकीकत ना झुठलाओ तुम,
साहसी बनो.... इंसान हो तुम।

एक बार अगर जो ठान लो तुम,
फिर पीछे हटें ना कभी कदम,
मंजिल पा के ही लेना दम,
सफल बनो... इंसान हो तुम ।।

जग - पाहुणे

राजेश कुमार मीणा

एक दिन बीता दो दिन बीता,
बीत गया रे पूरा साल !
अब तो पधारो जग पाहुणे,
बिन तोरे वसुधा हुई बदहाल !!

उजड़न लागे बाग-बगीचे,
सहमा है हर घर-द्वार !
अब तो पधारो प्यारे पाहुणे,
बिन तोरे विकल रहा है संसार !!

ताल-तलैया सूख गए ,
सूख गई सरिता री धार !
ढोर-पखेरू प्यासे मरण लागे,
लोग हुए हाल-बेहाल !!

सुखी पड़ी कुआँ-बावरी,
धरती में पड़ी दरार !
मोर पपीहा नाचत-गावत हारे,
पाताल चली भागीरथी-धार !!

सूख गए रे रुख विरख,
बीती जाए गगरी की जल-धार !
बीत गयो रे चारा-भूसा ,
बीतो जाए धान को भंडार !!

भोर भये से तेरी बाट जोहत ,
वसुधा रो प्यारो लाल !
बेगो रे पधारों, जग-पाहुणे ,
मारण आयो रे बैरी अकाल !!

मानवता : समाज की अहम कड़ी

अक्षय फराकटे

धधक रहा था एक मुहल्ला,
कुछ समय पहले वहाँ दंगल हुई थी।

उसी मुहल्ले के एक कोने में,
मानवता असहाय पड़ी हुई थी।

कपड़े उसके फटे हुए थे,
बाल सारे बिखरे हुए थे।
घाव पड़े थे शरीर पर सारे,
आँखें आँसुओं में नम हुई थीं।

मदद की गुहार उसकी,
हर किसी ने अनसुनी की हुई थी।

हर एक की पूरी शक्ति,
दंगल बढ़ाने में लगी हुई थी।

सुना था दिए लगते थे दिवाली में वहाँ,
ईद की खीर जरूर बटती थी।

बुद्ध के विचार पूजे जाते वहाँ,
गुरुद्वारे की लंगर भी लगती थी।

एकता और बंधुता की हवा बहती थी वहाँ,
भाईचारे की मिसालें दी जाती थीं।

मुहर्रम का जुलूस हो या दुर्गा विसर्जन,
शोभायात्रा एक ही गली से निकलती थी।
कीचड़ उछाला उन्होंने द्वेष का,
दुश्मनी जिनके सिर पर चढ़ी थी।

उन्हीं हाथों के पत्थरों से,
मानवता चोट खाई पड़ी हुई थी।
धर्म-जाति में बंटा है मुहल्ला,
वर्चस्व की लड़ाई चल रही थी।

पर भूल गए थे यह सभी,
कि 'मानवता' ही समाज की
अहम कड़ी थी।

खरोंच

दिबेंदु कर्मकार

एक साल भी न हुआ उसके ब्याह को
उस लड़की की याद मुझे आज भी आती है
चारों ओर उसकी शरारतें ही शरारतें थीं
कभी यहाँ तो कभी वहाँ
हर पहर, कोई बगीचा था उसका जहाँ।

जो खिलखिलाते ससुराल को चली थी,
आज लौट आई, नोच-खरोंच से संवरी
तन में, और मन में भी।

समय, जो पलक झपकते पलट जाता है
अब वह एक साल भी बीत गया।

देखा स्वार्थ और लोभ, जो मन में छिपे रहते हैं
सुने वे शब्द जो दूसरों को तुच्छ दिखलाते हैं
देखा यह भी, कि हीनता से हानि कैसे होती है
महसूस हुआ उसे कि औरत बस एक वस्तु है
इसलिए, अब चंचलता मौन है।

न कोई बात, न किसी का साथ
बस अब सन्नाटा दिल में है
माँ अगर कुछ पूछ ले,
तो उत्तर में सिर्फ गर्दन हिला, हाँ या ना मिले
ऐसे व्यक्ति से तो कोई मूक ही खूब है।

वो लड़की कभी जब घर से निकले,
तो घिर आते हैं पुराने मूक साथी
शरीर पर आज भी उसके खरोंच लगाते हैं
पर उस हर दाग में छिपी है
एक झलक की नैसर्गिक प्यार
क्योंकि, अब उन मूक साथियों की सेवा ही
है उसके जीवन का आधार।

जिंदगी की भाग-दौड़

नीलिमा साहू

जिंदगी की भाग-दौड़ में, आगे बढ़ने की होड़ में,
छोटी-छोटी खुशियों को जीना भूल जाते हैं।

वो पहली बारिश, वो जुगनू, वो झींगुर की आवाज,
जो देती है मन को सुकून, को सुनना भूल जाते हैं

जिंदगी की भाग-दौड़ में, आगे बढ़ने की होड़ में,
रखते हैं बड़ी-बड़ी चीजें
पाने की ख्वाहिश हम हरदम,
जो है अपने पास, उसकी
कीमत करना भूल जाते हैं।

जिंदगी की भाग-दौड़ में, आगे बढ़ने की होड़ में,
सुकून नहीं मिलता, न जाने क्यों,
हसरतें पूरी हो जाएं फिर भी,
पूरी हुई जो हसरत थी,
उसकी खुशी महसूस करना भूल जाते हैं,
जिंदगी की भाग-दौड़ में,
आगे बढ़ने की होड़ में,

नहीं है वक्त कि अपनो संग,
जरा-सा हँस लें, रो लें खुलकर हम,
पड़ी है सिर्फ जल्दी ये कि
इंस्टा पर पोस्ट कर दें हम।

मरा जा रहा है इंसान,
सिर्फ झूठी दिखावटी जिंदगी पाने को,
पर असल जिंदगी जीना ही अक्सर भूल जाते हैं।
जिंदगी की भाग-दौड़ में, आगे बढ़ने की होड़ में,

काश ! हो कि कुछ ऐसा, पाएं समझ
हम सच्ची खुशियों को,
होड़ आगे बढ़ने की छोड़,
जिंदगी का दामन थाम जाते हैं,
दुखों कि पोटली कहीं रख कर चलो
अब भूल जाते हैं ।

जिंदगी की भाग-दौड़ में, आगे बढ़ने की होड़ में,
छोटी-छोटी खुशियों को जीना भूल जाते हैं।

नारी

राजेश कुमार मीणा

हे नारी !

तू ही दुर्गा , तू ही सावित्री
तू ही लक्ष्मी , तू ही गायत्री

तू ही शिव की शक्ति
तू ही कृष्ण की भक्ति

तू ही विष्णु की माया
तूने ही तो ब्रह्मांड रचाया

काली बनकर देवों की रक्षा करती
माँ बनकर हर जीव का पोषण करती

फिर भी तू चुप क्यों खड़ी है ?
क्यों तू अन्याय को सह रही है ?

कब तक अग्नि-परीक्षा देती रहोगी ?
कब तक चिर-हरण सहती रहोगी ?

कब तक 'निर्भया' बन कर मिटती रहोगी ?
कब तक दहेज की आग में जलती रहोगी ?

तेरी सहनशीलता को मैं जानता हूँ
पर अब यों चुप रहना गलत मानता हूँ

तेरा यों चुप रहना, मुझे अखरता है
तुझपर ही नहीं, तेरी शक्ति पर भी प्रश्न करता है

अब तो एक बिगुल बजा दे
सोई हुई नारी शक्ति को जगा दे

"यत्र नारीयस्ते पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"
का पाठ फिर से तू ही इस समाज को पढ़ा दे !!!

कथा कहानी

वर्क-फ्रॉम-होम एवं वर्क-फॉर-होम : मेरा अनुभव

असीमा मिश्रा

आजकल घर से दफ्तर का काम करना बहुत प्रचलित है। हम इसे वर्क-फ्रॉम-होम कहते हैं। बहुत से लोगों ने वर्क-फ्रॉम-होम का लाभ उठाने के लिए अपनी नौकरी तक बदलना पसंद किया है।

कोरोना महामारी के दौरान पहली बार मुझे घर से दफ्तर का काम करने (वर्क-फ्रॉम-होम) का अनुभव हुआ। इसका मतलब यह है कि मुझे कार्यालय जाने की जरूरत नहीं है और मैं घर पर बैठे-बैठे ही दफ्तर के सभी आधिकारिक कार्य कर सकती हूँ, वो भी अपने घर की सारी सुख सुविधाओं के साथ रहते हुए भी। प्रारंभ में मैं वर्क-फ्रॉम-होम को लेकर बहुत उत्साहित रहती थी।

आपको याद होगा कि कोरोना महामारी के दौरान घर की नौकरानियों को घर आने की अनुमति नहीं थी। हमें घर के सभी काम स्वयं करने पड़ते थे। साफ-सफाई और खाना बनाने के अलावा घर में करने के लिए कामों की एक लंबी सूची होती है। चूँकि मैं कार्यालय जाती थी, इसलिए मैं घर के सभी कामों के लिए पूरी तरह से नौकरानियों पर निर्भर थी। मुझे साफ-सफाई और खाना बनाने की आदत नहीं थी।

चूँकि मुझे कार्यालय नहीं जाना था, इसलिए मैं सुबह आलस्य करते हुए देर से उठने लगी। उसके बाद मैं वर्क-फ्रॉम-होम और वर्क-फॉर होम के बीच संघर्ष करती रहती थी। मैं समझ नहीं पा रही थी कि वर्क-फ्रॉम-होम कहाँ बंद करूं और वर्क-फॉर-होम कब और कहाँ से शुरू करूं। यह एक जटिल समस्या बनती जा रही थी।

मेरा परिवार छोटा है, लेकिन घर थोड़ा बड़ा है। घर के कामों में कोई भी हाथ बटाने को तैयार नहीं था। बड़े घर की सफाई करना बहुत ही मुश्किल का काम था। कोरोना महामारी के दौरान घर को साफ रखना भी बहुत जरूरी था। पहली बार मैं सोच रही थी कि काश! मेरा घर छोटा होता। काश! मेरे पास घर की सफाई और बर्तन साफ करने के लिए स्वचालित उपकरण होते।

कार्यस्थल पर वरिष्ठ अधिकारियों और सहकर्मियों को ऐसा लगता था कि मैं वर्क-फ्रॉम-होम में ठीक से काम नहीं कर पा रही हूँ। इस दौरान, परियोजना टीम के साथ ऑनलाइन बैठक, परियोजना से संबंधित सभी कार्यों की समीक्षा, नए प्रस्ताव तैयार करना, ऑनलाइन प्रशिक्षण आदि कुछ न कुछ कार्य दिन भर हो रहे थे। परिवार के सदस्यों की मुझसे अपेक्षाएँ धीरे-धीरे बढ़ गईं थीं क्योंकि मैं पूरा दिन घर पर रहती थी। घरवालों को लग रहा था कि मैं दफ्तर के लिए काम कर रही हूँ और दफ्तर वालों को लगता था कि मैं घर के लिए काम कर रही हूँ। सब कुछ उलझ गया था और मैं बहुत बुरे दौर से गुज़र रही थी। वैसे तो कोरोना महामारी का डर बहुत था, परंतु वर्क-फ्रॉम-होम एवं वर्क-फॉर-होम के बीच के संघर्ष ने मुझे और ज्यादा परेशान कर रखा था।

यह परिस्थिति दो से तीन सप्ताह तक बनी रही और मेरे लिए वर्क-फ्रॉम-होम एवं वर्क-फॉर-होम दोनों का प्रबंधन करना मुश्किल हो गया था। मैंने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और अपने परियोजना प्रबंधन कौशल का उपयोग करते हुए दोनों कामों को सुव्यवस्थित करने का फैसला किया। मैंने अपने परिवार के सदस्यों को अपने परियोजना समूह के सदस्यों के रूप में माना। घर के सभी कामों को सूचीबद्ध किया। सभी सदस्यों की एक बैठक बुलाई और अपनी सभी समस्याओं को समझाया तथा उनसे सहयोग करने का अनुरोध किया। मैंने उन्हें घर के

सभी कामों की सूची दिखाई तथा उन्हें वह काम चुनने का मौका दिया जो वे कर सकते थे। लेकिन मेरे परिवार के सदस्य इतने सुस्त थे कि वे कोई भी काम लेने को तैयार नहीं हो रहे थे। ना तो मैं हार मान सकती थी और न ही मैं उन्हें अकेले कर सकती थी। इसलिए एक अच्छे प्रबंधक के रूप में, मैंने अपने परिवार के सदस्यों को उनके कौशल के आधार पर विभिन्न कार्य सौंपे। प्रशिक्षण के लिए समय नहीं था। हर दिन मैं सभी सदस्यों द्वारा किए गए कार्यों की समीक्षा करती थी और उनमें छोटे-छोटे सुधार करती थी। उन्हें सुधार करने में कुछ समय लगा। मुझे दोषरहित काम की उम्मीद नहीं थी, लेकिन मेरे परिवार के सदस्यों ने बहुत अच्छा काम किया।

फिर मैंने बिना किसी परेशानी के अपना वर्क-फ्रॉम-होम किया। सुबह जल्दी उठकर और कार्यालय का समय शुरू होने से पहले अपने हिस्से के घर के काम निपटाकर अपने काम को सुव्यवस्थित किया।

इस पूरे प्रकरण ने मुझे सिखाया कि कार्यालय के काम और घर के काम दोनों के लिए सामूहिक सहयोग एवं उत्तरदायित्व बहुत जरूरी हैं।

सिक्कों की यात्रा

समीर गोडांबे

यहाँ एक व्यक्ति है जो पूरी तरह से अपने पेशे के प्रति समर्पित है, लेकिन साथ ही अपने शौक को पूरा करने में भी बेहद भावुक है।

मेरे पास 100 और 200 साल पुराने ईस्ट इंडिया कंपनी या ब्रिटिश साम्राज्य के ही सिक्के नहीं, बल्कि मेरे पास सिक्कों का एक दुर्लभ, प्राचीन और वास्तविक संग्रह है, जिनमें से कुछ ईसा पूर्व के भी हैं।

बचपन से ही मैं सिक्कों के संग्रह की ओर आकर्षित था। उस दौरान मैं सिक्के एकत्र करता था, जो प्राचीन तो थे ही, लेकिन वास्तव में उनका कोई ऐतिहासिक या प्राचीन मूल्य है, यह मैं नहीं जानता था। उस समय मेरे पास जो सिक्के थे, वे प्रत्येक सिक्का संग्राहक के पास उपलब्ध होते थे।

यही वह समय था जब संजय गोडबोले, जिन्हें मैं सिक्का संग्रह के अपने शौक में अपना गुरु मानता हूं, उन्होंने मुझे दुर्लभ और प्राचीन सिक्कों की अद्भुत दुनिया और कई मुद्राशास्त्रियों से परिचित कराया, ताकि मैं वास्तविक सामग्री प्राप्त कर सकूं। उन्होंने मुझे सिखाया कि प्राचीन सिक्कों का सही मूल्य और चयन कैसे किया जाए। मुझे ऐसे सिक्कों को इकट्ठा करने के लिए उपलब्ध विभिन्न स्रोतों के बारे में भी पता चला।

आज, मेरे पास चंद्रगुप्त मौर्य, गुप्त राजवंश और सातवाहन युग के सिक्कों का एक बड़ा संग्रह है। मेरे पास पंचमार्क (संप्रभु के 16 राज्यों के लिए 2000 साल पुरानी आम मुद्रा) भी है।

लेकिन क्या यह बहुत महँगा शौक नहीं है? "हाँ," लेकिन यह एक खजाना है जिसे मैं इकट्ठा कर रहा हूँ और खजाना कभी सस्ता नहीं मिलता।

मौर्य साम्राज्य (लगभग 322-184 ईसा पूर्व)

पंच-चिह्नित सिक्के, जिन्हें आहत सिक्कों के रूप में भी जाना जाता है, भारत के प्रारंभिक सिक्कों का एक प्रकार है, जो ईसा पूर्व छठी से दूसरी शताब्दी के बीच के हैं। ये सिक्के अनियमित आकार के हैं।

गुप्त साम्राज्य - स्कंदगुप्त
(लगभग 455-480 ई.)
धातु: चांदी

कुषाण साम्राज्य (लगभग 30-375 ई.पू.)

सातवाहन राजवंश -
100 ईसा पूर्व-दूसरी शताब्दी

दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी
(1296-1316)

मुगल सम्राट अकबर (1556-1605)
औरंगजेब (1658-1707)

मराठा साम्राज्य (1674-1818)

ब्रिटिश भारत के सिक्के

मैं कौन हूँ?

राहुल बोराडे

अंधेरे कमरे में, मैं अकेला बैठा था। चारों ओर रात की खामोशी फैली हुई थी, सिर्फ बारिश की हल्की रिमझिम सुनाई दे रही थी, जो खिड़की के शीशे पर टकरा रही थी। हवा में मिट्टी की सोंधी खुशबू घुली हुई थी, जैसे धरती खुद को धोकर ताजगी का अनुभव कर रही हो। मेरी उंगलियाँ बेचैनी से मेज पर थिरक रही थीं, मानो मेरी अंदरूनी उथल-पुथल को बाहर लाने का प्रयास कर रही हों।

कुछ ही समय पहले मैंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी की थी। और अब? अब जीवन का असली सफर शुरू होने वाला था। चारों तरफ अनगिनत रास्ते थे, लेकिन कोई भी मंजिल स्पष्ट नहीं थी। मैं एक पहेली बन चुका था, खुद के लिए भी अनजाना। आखिर मैं कौन हूँ?

क्या मैं वही जिद्दी बच्चा था, जो टूटी हुई खिलौनों को ठीक करने में घंटों लगा रहता था? या फिर वह शर्मीला लड़का जिसकी दुनिया सिर्फ किताबों में सिमटी हुई थी? या शायद वह गुस्सैल किशोर, जो हर छोटी-बड़ी बात पर बहस करने को तैयार रहता था?

यादें, जैसे किसी पुरानी फिल्म की रील की तरह, मेरी आँखों के सामने से गुजरने लगीं। हँसी के वो अनमोल पल, दुख के आँसू, प्यार की मिठास, जिंदगी के तमाम रंग-सब कुछ एक-एक कर सामने आ रहे थे। हर अनुभव ने मुझे थोड़ा गढ़ा था, जैसे हर एक अनुभव ने मुझे बनाया था, लेकिन मैं अब भी अधूरा था, जैसे कोई अधूरी कविता।

अचानक, बिजली की चमक से कमरे में रोशनी भर गई। मेरी नजरें मेज पर रखी किताब के शीर्षक पर पड़ी- "आत्मकथा।" मैंने किताब उठाई और उसे खोल दिया। ऐसा लगा, जैसे वह किताब मेरा ही इंतजार कर रही थी। उस यात्रा का मार्गदर्शन करने के लिए, जिस पर मुझे अभी निकलना था। शायद यही वह सफर था, जिसे मुझे तय करना था-खुद को जानने का सफर। तभी मुझे अहसास हुआ कि जीवन कोई पूर्वनिर्धारित रास्ता नहीं है, बल्कि अनगिनत मोड़ों से भरी एक यात्रा है।

शायद मैं अभी भी खुद को गढ़ रहा हूँ। हर नया अनुभव, हर चुनौती, हर रिश्ता मुझे एक नया रूप, एक नया आयाम दे रहा है। मैं कौन हूँ? इसका जवाब शायद मुझे जिंदगी भर मिलता रहेगा, हर कदम पर मुझे खुद को तलाशने की प्रेरणा देता रहेगा।

बाहर अब भी बारिश की बूंदें लगातार गिर रही थीं, तो अंदर मेरे मन में एक शांति, एक दृढ़ संकल्प पनप रहा था। उस रात, बारिश की रिमझिम के बीच, मैंने खुद को जानने का वादा किया। एक ऐसे सफर पर निकलने का वादा, जिसकी मंजिल खुद मैं हूँ।

चित्रकला

किशोर पाटील

नारी शक्ति

राहुल रानडे

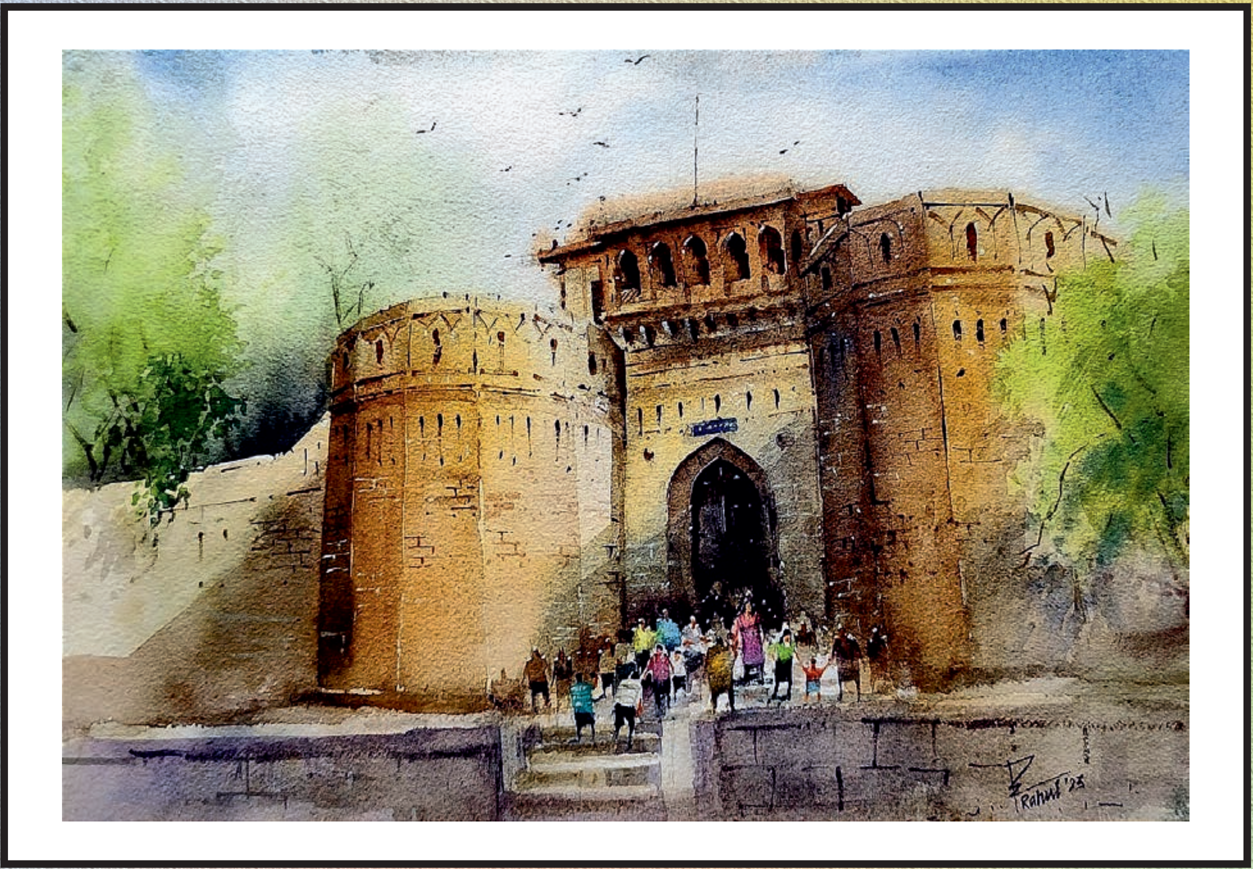

शनिवार वाड़ा

प्रशांत खैरनार

गाँव

विवेकानंद पाटील

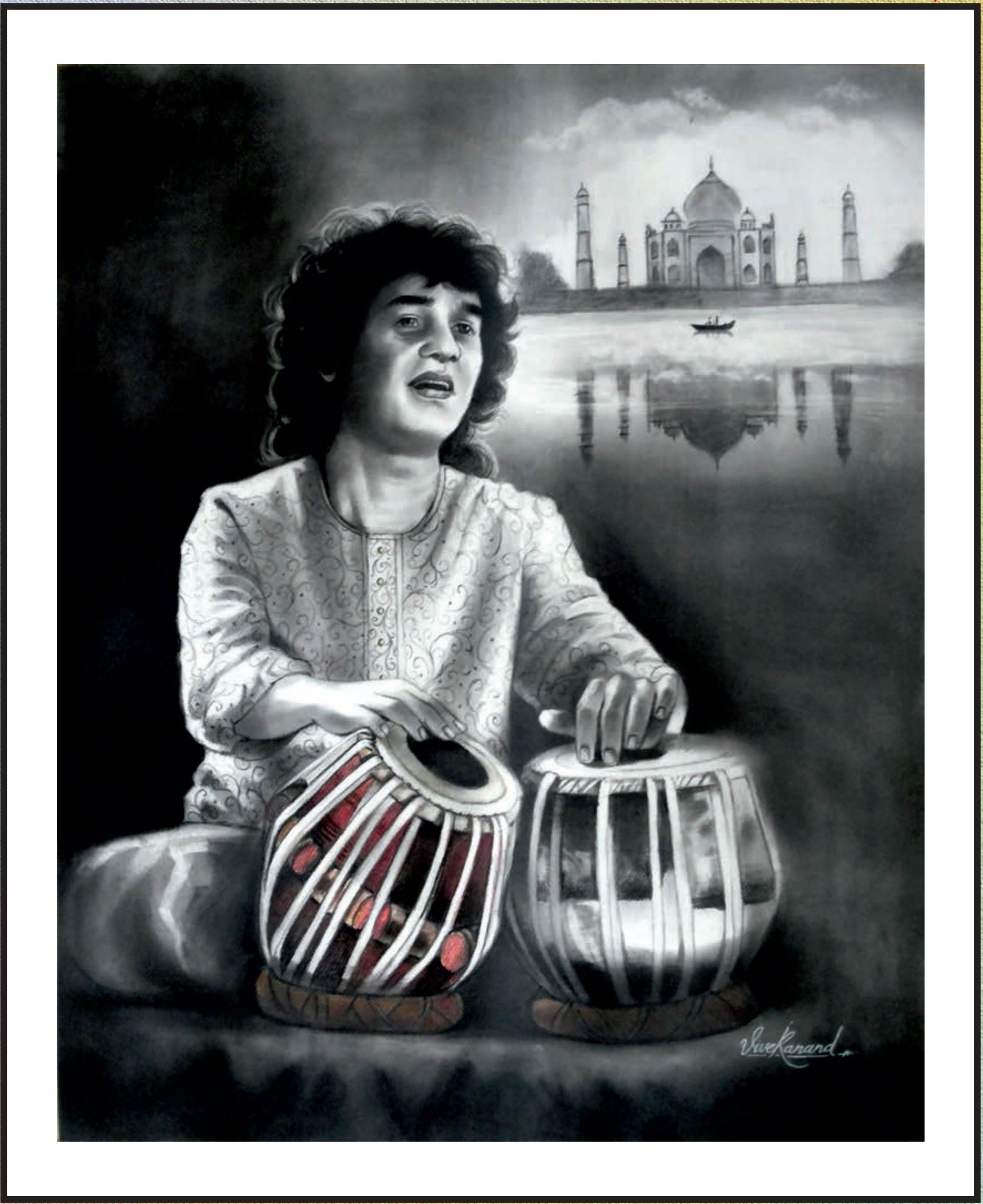

उस्ताद जाकिर हुसैन

गैर-तकनीकी लेख संकलन

मानव संसाधन प्रबंधन (एच.आर.एम.): आपके संस्थान की धड़कन

जयश्री पोकळे

साथी सहकर्मियों और जिज्ञासु पाठकों! आइए मानव संसाधन प्रबंधन (एच.आर.एम.) की दुनिया में एक मजेदार यात्रा पर चलें। एच.आर.एम. को अपने पसंदीदा व्यंजन बनाने की गुप्त विधि के रूप में कल्पना करें – जिसमें हर एक घटक अच्छी तरह से अपनी छाप छोड़ता है, भले ही आप सभी को इसका जादू न दिखे, परंतु यह सभी का स्वाद बढ़ाता है और सभी को बहुत ही पसंद आता है।

आखिर एच.आर.एम. क्या है?

मानव संसाधन प्रबंधन, या एच.आर.एम हमारे सुपरहीरो दोस्त जैसा है। यह किसी भी संगठन की सबसे मूल्यवान संपत्ति - उसके मनुष्यबल के प्रबंधन का कार्य करता है। नई प्रतिभाओं की भर्ती करने और सकारात्मक कार्य परिवेश को बढ़ावा देने से लेकर यह सुनिश्चित करने तक कि सभी को समय पर वेतन का भुगतान किया जाए और विवादों को हल किया जाए।

बस यह समझ लीजिए कि एच.आर.एम वह गोंद है, जो सब को एक साथ जोड़ कर रखता है।

आइए, अब मानव संसाधन प्रबंधन के कार्य को संक्षिप्त में समझ लिया जाए।

मानव संसाधन भर्ती: प्रतिभा को खोजने वाला पेशेवर शिकारी है मा.सं. विभाग। संस्था का कार्य अविरत चलते रहने के लिए मानव संसाधन रूपी रत्न खोजने की हर संभव कोशिश करता है यह विभाग। यह काम घास के ढेर में सुई ढूँढने जैसा है। यहाँ केवल ऐसे व्यक्ति को खोजना नहीं है, जो बस काम कर सके बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति को खोजना है, जो संस्था की संस्कृति में बिल्कुल सटीक बैठे तथा अपने साथ नई ऊर्जा और विचार ला सके।

प्रशिक्षण और विकास: आपके विकास गुरु नई प्रतिभाएं संगठन से जुड़ गईं, अब उन्हें आगे बढ़ने में मदद करने का समय आ गया! एच.आर.एम. प्रशिक्षण सत्र, कार्यशालाएँ और विकास कार्यक्रम आयोजित करने के लिए जिम्मेदार होता है। आप सभी ने तो हैरीपॉटर देखा या पढ़ा ही होगा। इसे इस हैरीपॉटर के 'हॉगवट्र्स' जाने के रूप में सोचें - सीखने के लिए हमेशा कुछ नया होता है, और मा.सं. विभाग आपका 'डंबलडोर' है, जो आपके विकास की इस जादुई यात्रा में मार्गदर्शन करता है।

कर्मचारी जुड़ाव: उत्सव आयोजक! कर्मचारियों को खुश और व्यस्त रखना एच.आर.एम. का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य है। मजेदार टीम-निर्माण गतिविधियों और त्योहारों पर पार्टी के आयोजन से लेकर, आपके स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए व्याख्यान आयोजन तक मा.सं. विभाग एक उत्सव आयोजन की भूमिका में होता है। वे जानते हैं कि एक खुश एवं संतुष्ट टीम एक उत्पादक टीम होती है!

क्षतिपूर्ति एवं लाभ: कौन समय पर अपना वेतन पाना पसंद नहीं करता? मा.सं. विभाग यह सुनिश्चित करता है कि ऐसा ही हो। लेकिन यह केवल वेतन के बारे में नहीं है। सेवानिवृत्ति फायदे या संस्था से अलग होने पर मिलने वाले लाभों का भी प्रबंधन करता है। साथ ही मा.सं. विभाग एक दिव्य परी जैसा है, जो यह सुनिश्चित करता है कि अच्छा काम करने वाले कर्मचारियों की सराहना की जाए।

अनुपालन और सुरक्षा: हर संस्था के पास पालन करने के लिए नियम और विनियम होते हैं। मा.सं. विभाग यह सुनिश्चित करता है कि हर कोई नियमानुसार काम कर रहा है और कार्यस्थल सभी के लिए सुरक्षित है। ये परदे

के पीछे काम करने वाले वे गुमनाम नायक हैं, जो कंपनी को श्रम कानूनों और भारत सरकार के नियमों के अनुरूप रखते हैं। आपने अंग्रेजी फिल्म शृंखला 'लार्ड ऑफ द रिंग्स' तो देखी ही होगी, तो मा.सं. विभाग को संस्था के गैंडाल्फ (Gandalf from Lord of the Rings) के रूप में मान लीजिए –

“आप (नियमों का पालन किए बिना) आगे नहीं बढ़ेंगे!”
“You shall not pass (without following the rules)”

इस तरह मानव संसाधन विभाग किसी भी संस्था की धड़कन है। यह भर्ती करने और प्रशिक्षण से लेकर एक खुशहाल, व्यस्त और सुरक्षित कार्यस्थल सुनिश्चित करने तक सब कुछ सुचारू रूप से चलाता है। मा. सं. विभाग के बिना, संस्था बिना कप्तान के एक ऐसे जहाज की तरह होगी, जो समुद्र में खो गई हो।

इसलिए अगली बार जब आप किसी मा.सं. अधिकारी या कार्यकारी से मिलें, तो उन्हें धन्यवाद जरूर करें। वे यह सुनिश्चित करने के लिए पर्दे के पीछे अथक परिश्रम कर रहे हैं कि सब कुछ ठीक और सुचारू रूप से चले। मा.सं. प्रबंधन सिर्फ एक विभाग नहीं है; यह आपके संगठन का दिल और आत्मा है, जो यह सुनिश्चित करता है कि हर कोई फल-फूल रहा है और संस्था नई ऊंचाइयों पर पहुंच रही है।

और यहाँ आपके पास है - मानव संसाधन प्रबंधन की दुनिया की एक मजेदार झलक ! चाहे आप एक अनुभवी कर्मचारी हो या कार्यबल में नए हों, याद रखें कि मा.सं.विभाग आपकी नौकरी रूपी यात्रा को शानदार बनाने के लिए ही यहाँ है और हर कदम पर आपसे साथ खड़ा है।

जय हिंद

किले रायगड: भारत की ऐतिहासिक धरोहर

डॉ. दामोदर मगदूम

रायगड किला महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट में स्थित एक गढ़ है, जो भारतीय इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रायगड किला महाराष्ट्र के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में से एक है, जो कि मराठा साम्राज्य के संस्थापक और महान योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के शासनकाल का प्रतीक है। यह किला महाराष्ट्र के रायगड जिले में स्थित है और यह लगभग 2700 फीट (820 मीटर) की ऊंचाई पर सह्याद्री पर्वत श्रृंखला में बसा हुआ है।

रायगड इस किले का निर्माण मूल रूप से मुरुम्बदेव नाम से राष्ट्रकूट वंश के काल में किया गया था, लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज ने इसे पुनः निर्मित करवाया और इसका नाम बदलकर रायगड रखा। छत्रपति शिवाजी महाराज ने 6 जून 1674 में इस किले को अपनी राजधानी बनाया था और उनका राज्याभिषेक समारोह यहीं संपन्न हुआ था, जिसने उन्हें छत्रपति की उपाधि दिलाई। इस किले को उन्होंने अपने प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित किया और यहाँ से मराठा साम्राज्य के विस्तार की नींव रखी गई। किले की वास्तुकला मराठा वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। इसमें विशाल दरवाजे, गुप्त मार्ग, और रणनीतिक रक्षात्मक संरचनाएँ शामिल हैं।

रायगड

महादरवाजा रायगड किले की रणनीतिक स्थिति इसे दुर्गम और अभेद्य बनाती है। यह किला न केवल एक सैन्य गढ़ था, बल्कि एक राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र भी था, जहाँ दरबार लगते और जन सभाएँ होती थीं। ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ, रायगड किला अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध है। वाघ दरवाजा राजसदर रायगड किले में कई महत्वपूर्ण स्थल हैं जैसे कि महादरवाजा, राजदरबार, रानीवास, गंगासागर तालाब, और छत्रपति शिवाजी महाराज का समाधि स्थल। रायगड किला धार्मिक गतिविधियों का भी केंद्र रहा है। किले के परिसर में विभिन्न मंदिर स्थित हैं, जैसे कि जगदीश्वर मंदिर, जो छत्रपति शिवाजी

महादरवाजा

महाराज के समय से ही पूजा का स्थल रहा है। किले में स्थित छत्रपति शिवाजी महाराज की समाधि उनके वीरता और नेतृत्व को याद करने का एक स्थान है।

जगदीश्वर मंदिर प्रवेश द्वार रायगड किला न केवल एक ऐतिहासिक धरोहर है, बल्कि यह महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतीक है। इस किले के माध्यम से छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता, रणनीति और प्रशासनिक कौशल की झलक मिलती है।

छत्रपति शिवाजी महाराज समाधि स्थल रायगड किला अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यह किला सह्याद्री पर्वतमाला की ऊंचाइयों पर स्थित होने के कारण दुर्गम और अजेय माना जाता था। इसकी विशेष स्थिति ने छत्रपति शिवाजी महाराज को आक्रमणकारियों से बचाव में मदद की और मराठा साम्राज्य की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रायगड किला इस प्रकार से महाराष्ट्र और भारतीय इतिहास में अपनी विशिष्ट स्थान बनाए रखता है और यह छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता, धार्मिकता और शासन कुशलता का प्रतीक है। यह स्थल आज भी अनेक पर्यटकों और इतिहास प्रेमियों को आकर्षित करता है और मराठा वीरता की कहानियों को जीवंत करता है।

वाघ दरवाजा

राजसदर

जगदीश्वर मंदिर प्रवेशद्वार

छत्रपति शिवाजी महाराज समाधिस्थल

एक कथा श्रीअन्न को अपनाने की

महेश मेनन

ये कथा है, एक परिवार की....मेरे परिवार की.....ये कथा हैं श्रीअन्न की, मिलेट्स की। मेरा परिवार खाने का इस कदर शौकीन है कि जिस भी शहर में हम रहे हों, उस शहर या राज्य के सभी प्रख्यात शाकाहारी व्यंजनों को हम दिल से अपने रोज के खान पान में इस तरह अपनाते हैं कि बिना हमें जानने वाले सभी चकित हो जाते हैं। हर रोज, घर हो या दफ्तर, अवसर और त्यौहार के अनुसार भोजन या नाश्ता हमारे घर में बनता है या फिर किसी प्रसिद्ध स्थल या होटल आदि जाकर हम खाने का आनंद लेते हैं। फिर एक दिन हम सभी ने स्वास्थ्य जांच(हेल्थ चेक-अप) कराई तब हमें यह बात ज्ञात हुई की हमें रोज खाई जाने वाली बहुत-सी चीजों से परहेज रखना चाहिए, जैसे कि अतिरिक्त मात्रा में चीनी, तेल, मिर्च मसाला, मैदा, तैयार मिलने वाले खाद्य पदार्थ, बेकरी पदार्थ (खासकर ब्रेड), नमक, चावल और...................... गेहूं भी!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!!

यह सुनकर मेरे बड़े बेटे का कहना था... अगर ये सब नहीं खा सकते तो क्या हवा खाएँ ? वहाँ बैठे चिकित्सक की हँसी नहीं रुक रही थी यह सुनकर, क्योंकि बात तो उसकी सही थी!!! ऊपर लिखे कई खाद्य पदार्थों का तो हमने सुना था कि यह अधिक मात्रा में खाया जाए तो हानिकारक हो सकता हैं, लेकिन गेहूं वाली बात हमें पच नहीं रही थी।

ग्लूटेन नामक एक प्रोटीन, जो गेहूं में पाया जाता है, उसका नाम लेकर चिकित्सक ने हमें गेहूं कम खाने की और साथ ही मिलेट्स का उपयोग करने की सलाह दी।

इसी दौरान, हम मेरी माँ की चिकित्सा हेतु नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ नेचुरोपैथी, पुणे गए तो हमने वहाँ के जलपान गृह(कैंटीन) में देखी कि वहाँ गेहूं और चावल का उपयोग ही नहीं होता। तथा बाकी सामग्रियों का उपयोग न के बराबर ही था। यहाँ भी यही सलाह मिली की मिलेट्स को अपनाया जाए। अधिक जांच पड़ताल करने पर यह जानकारी मिली की मिलेट्स तो बरसो से हैं, केवल लोगों के जीवनशैली में बदलाव के कारण उसका उपयोग ना के बराबर हो गया है। मिलेट्स के फायदे जानने के बाद, अब बातचीत कर, हम सभी परिवार जनों ने यह निर्णय लिया की हम मिलेट्स का सेवन करेंगे। मिलेट्स अब श्रीअन्न के नाम से प्रख्यात है। संयुक्त राष्ट्र ने भारत सरकार की सिफारिश पर साल 2023 को "मिलेट्स का अंतरराष्ट्रीय वर्ष" घोषित किया था।

कहना आसान है और करना बेहद ही मुश्किल। खाने में से गेहूं और चावल को हटाना जबकि आप उस प्रदेश से हो, जहाँ चावल का सेवन सबसे अधिक मात्रा में होता है। इडली, डोसा, अप्पम, और ऐसे अनगिनत व्यंजन जिनका चावल के बिना बनना नामुमकिन है। चूँकि बात हमारे स्वास्थ्य की है, तो हमने भी हार नहीं मानी

और बड़ी मात्रा में, अपने रोज के खाने में मिलेट्स का उपयोग करने लगे हैं।

हम सभी को यह ध्यान रखना चाहिए कि “यदि आपके पास अच्छा स्वास्थ्य नहीं, तो आपके पास सब कुछ होकर भी कुछ नहीं है।”

“स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है, यदि स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो हम जीवन का आनंद ले सकते हैं।”

परिवार में निर्णय हुआ की अब ज्यादा से ज्यादा मिलेट्स ही खाया जाएगा। मिलेट्स लेने दुकान पहुंचे, तब जाकर हमें पता चला की मिलेट मतलब सिर्फ बाजरा (Pearl Millet) नहीं होता। मिलेट्स के कई प्रकार हैं जैसे कि ज्वार (Sorghum millet), रागी (Finger millet), कोद्र (Kodo millet), कुटकी (Little millet), कंगनी (Foxtail millet), आदि।

अब हमारी आहार योजना (डाइट प्लान) में सुबह इडली, डोसा, उपमा, आदि सभी मिलेट्स (श्रीअन्न) से बनता है। दोपहर और शाम के खाने में रोटी भी श्रीअन्न से बनती है।

हमारे खाने की शैली में बदलाव को अब लगभग 8 महीने हो गए हैं। बच्चों को मनाना और श्रीअन्न से तरह तरह के व्यंजन बनाना एक चुनौती से कम नहीं था, लेकिन मेरे बच्चों, माताजी और पत्नी के सहयोग से यह मुमकिन लग रहा है।

मिक्स मिलेट थेपला

झूठ नहीं कहूँगा, जब भी परिवार के किसी सदस्य को गेहूं या चावल खाने की इच्छा होती है, तो हम मन की संतुष्टि के लिए उनसे बने व्यंजन खा लेते हैं, लेकिन कोशिश यही रहती हैं की जितना हो सके, श्रीअन्न से बना खाना ही खाएँ।

हमारे परिवार को इससे बेहद लाभ मिला है। हम सभी का वजन कम हुआ है, हृदय स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा है, मधुमेह(डायबिटीज) की शुरुआत रुक गई है और हम सभी को स्फूर्ति का अनुभव होता। सबसे महत्व की बात यह है कि बेवजह खाने की इच्छा कम हुई और पाचन शक्ति में सुधार हुआ।जैसे की पुराने जमाने से कहा जा रहा है .... खाने के लिए मत जिओ...जीने के लिए खाओ।

आप सभी से अनुरोध हैं कि आप भी श्रीअन्न को अपनायें और अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें।

यदि, मैं और मेरा परिवार कर सकता है, तो आप जरूर कर सकते हो।

कथक नृत्य : आज और कल

अस्मिता गारगोटे

कथक नृत्य, एक प्राचीन भारतीय शास्त्रीय नृत्य कला है, जो आज के समय में अपनी अनमोल भूमिका निभा रही है। इसका गहरा इतिहास, जटिल पैरों की चाल, भावुक अभिव्यक्ति और तालमयता ने इसे केवल एक सांस्कृतिक विरासत ही नहीं, बल्कि आज की दुनिया में एक महत्वपूर्ण और जीवंत कला के रूप में स्थापित करती है। यह लेख आधुनिक समय में कथक नृत्य के महत्व का विशेष वर्णन करता है, जिसमें इसका सांस्कृतिक महत्व, कलात्मक अभिव्यक्ति और शिक्षात्मक महत्व शामिल है।

कथक नृत्य भारतीय सांस्कृतिक पहचान और धरोहर का प्रतीक है। यह सदियों पुरानी परंपराओं में निहित भारतीय दर्शन, पौराणिक कथाओं और आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति है। अपनी कथाओं और भावनाओं के माध्यम से, कथक सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकताओं और परंपराओं को संरक्षित करता है और पीढ़ियों के बीच संचारित करता है। एक बढ़ती हुई वैश्वीकृत दुनिया में, जहाँ हम अपनी सांस्कृतिक पहचान भूलते जा रहे हैं, वहीं कथक एक दृढ़ एंकर के रूप में काम करता है, जो व्यक्तियों को उनकी जड़ों से जोड़ता है और उन्हें गर्व और अपनेपन का एहसास दिलाता है।

कथक नृत्य आज के समय में भारतीय सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमुख स्रोत बना हुआ है। इसकी अनगिनत गहराइयों में छिपी विविधता और समृद्धता ने इसे संस्कृति के महान प्रतीक के रूप में स्थापित किया है। यह न केवल एक नृत्य शैली है, बल्कि एक जीवंत संगीतमय कहानी भी है जिसमें प्राचीन भारतीय समाज की अद्वितीयता और सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती है। आज के समय में, जब सांस्कृतिक विविधता को महत्व दिया जा रहा है, कथक नृत्य एक ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से भारतीय संस्कृति और उसकी महानता को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

कला के क्षेत्र में, कथक नृत्य कलात्मक अभिव्यक्ति और नवीनता के लिए एक अद्वितीय मंच प्रदान करता है। अपनी शास्त्रीय नींवों का सम्मान करते हुए, कथक कलाकार आज के विभिन्न थीम्स और कथाओं का पता लगाते हैं, जो परंपरागत संगीत में नया जीवन भरते हैं। नृत्य कला की इस समर्थता के कारण, कथक आज भी गतिविधियों के अंदर एक नये आधुनिक रूप में अपनी स्थायीता बनाए रखता है, जिससे यह विभिन्न परिस्थितियों और व्यक्तिगत कथाओं को साकार करता है।

कला के अतिरिक्त, कथक नृत्य कई शिक्षात्मक और चिकित्सा लाभ भी प्रदान करता है। कथक का अध्ययन छात्रों के बीच अनुशासन, ध्यान और समर्पण को विकसित करता है, पूर्णता में सहायक होता है। यह प्रशिक्षण पहुंच, समन्वय और ध्यान को बढ़ाता है, जो मनोबल को सुधारता है। इसके अतिरिक्त, कथक की तालमयता और आवश्यक अंशों का उपयोग करके यह मानसिक फलन, याददाश्त और रचनात्मक सोच को उत्तेजित करता है, जो विभिन्न आयु समूहों में एक मूल्यवान शैक्षिक साधन के रूप में महत्वपूर्ण है।

कथक नृत्य सांस्कृतिक सीमाओं को पार करता है, जो समावेशीकरण और विविधता की भावना को अभिव्यक्त करता है। यह विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से छात्र और प्रशिक्षक को आकर्षित करता है, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझौता को बढ़ाता

है। साझा प्रदर्शनों और सांस्कृतिक पहलों के माध्यम से, कथक समुदायों के बीच आंतरिक संवाद करता है, सांस्कृतिक विविधता के लिए साझेदारी और सम्मान को बढ़ाता है। विश्व को बांधने वाली विविधताओं के बीच, कथक एक एकतामूलक शक्ति के रूप में कार्य करता है, अपने संगीत और शैली की सामान्य भाषा के माध्यम से भिन्न समुदायों के लिए सुंदरता की प्रशंसा करता है।

पारंपरिक कला में रुझान बढ़ने से कथक कलाकारों और शिक्षकों के लिए नए करियर के द्वार खुले हैं। पेशेवर कथक भारत में और अंतरराष्ट्रीय मंच पर नृत्य, नृत्यरचना, शिक्षा और सांस्कृतिक राजनीति में अवसर प्राप्त करते हैं। कथक के महोत्सवों, कार्यशालाओं, और डिजिटल मंचों के माध्यम से कथक की बढ़ती हुई लोकप्रियता के कारण, यह अपनी वैश्विक प्रतिष्ठा को सुधारता है, समर्थन और अध्ययन के लिए कला के लाभार्थियों और संबंधित उद्योगों के लिए रोजगार और राजस्व उत्पन्न करता है।

उपसंहार की बात करें तो कथक नृत्य केवल एक पुरातन कला ही नहीं है, बल्कि एक जीवंत और रंगीन कला है जो समकालीन समाज को आधुनिकता और संगीत के अनुभव के माध्यम से समृद्ध करती है। इसका महत्व इसमें निहित है कि यह समय और स्थान को पार करता है, अपनी मोहक तालमयता और अभिव्यक्ति के माध्यम से गहरे सत्य और भावनाओं को संप्रेषित करता है। जैसे हम आधुनिक दुनिया के संकटों को निगलते हैं, कथक नृत्य एक सांस्कृतिक स्थिरता, कलात्मक उत्कृष्टता और मानव संबंधों का प्रतीक बनता है। आज कथक नृत्य को अपनाने से यह सुनिश्चित होता है कि आगामी पीढ़ियां न केवल एक मूल्यवान कला रूप को अधिग्रहण करें, बल्कि इसकी तालमयता के भीतर स्थाई मूल्यों और ज्ञान को भी विरासत में प्राप्त करें।

कथक नृत्य के भविष्य को देखते हुए यह स्पष्ट है कि यह न केवल भारतीय सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा रहेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर भी अपना प्रभाव बनाए रखेगा। नृत्य कला में भारतीय परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग होने के कारण, कथक नृत्य विभिन्न भारतीय कलाओं और नृत्यों के साथ गहरी जड़ें रखता है और उन्हें बढ़ावा देता है। इसका भविष्य न केवल कला और संस्कृति के क्षेत्र में, बल्कि समाज के सभी पहलुओं में भी महत्वपूर्ण है, जो सांस्कृतिक समृद्धि, विविधता और एकता की दिशा में हमें एक सकारात्मक मार्ग दिखा सकता है।

पसायदान - विश्व प्रार्थना

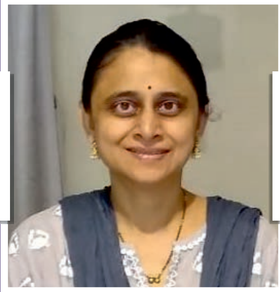

लक्ष्मी पानट

नव वर्ष के अवसर पर सी-डैक में पसायदान गायन की वर्षों से चली आ रही परंपरा है। चैत्र गुढ़ी पाड़वा, अर्थात सी-डैक के जन्मदिन पर, स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रौद्योगिकी कार्यक्रम का समापन राग भैरवी में निबद्ध पसायदान से किया जाता है । सी-डैक सदस्यों के मन में, विशेष करके गैर-मराठी सदस्यों में इसके अर्थ को जानने की जिज्ञासा अवश्य रहती है । इस दृष्टि से इस विषय पर लिखना प्रासंगिक लगा।

भारतवर्ष में संत परंपरा पुरातन काल से अविरत चली आ रही है । संतों ने अध्यात्मिक ज्ञानगंगा को सतत प्रवाहित रखा एवं अपने जीवन के माध्यम से पुरातन का जतन करते हुए, उन्हें नित-नवीनता भी प्रदान की। महाराष्ट्र राज्य की संत परंपरा के शिरोमणि संत ज्ञानेश्वर महराज जी हैं। उन्हें स्नेह से ज्ञानेश्वर माउली, ज्ञान देव भी कहा जाता है। माउली अर्थात माता – ज्ञानेश्वर जी अपने भक्तों के लिए माता समान हैं। आज भी उनके द्वारा लिखे हुए ग्रंथों का अध्ययन बड़ी श्रद्धा के साथ किया जाता है।

तेरहवीं सदी के काल खंड में संत ज्ञानेश्वर माउली ने ज्ञानेश्वरी ग्रंथ की रचना की । इस ग्रंथ को भावार्थदीपिका के नाम से भी जाना जाता है । यह श्रीमद्भगवद्गीता पर मराठी में लिखी गई टीका है। इस ग्रंथ के उपरांत उन्होंने अमृतानुभव, चांगदेव पासष्ठी और कुछ अभंगों की रचना की। इन ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने भारतीय तत्वज्ञान को सुलभ भाषा में उदाहरण देकर जन मानस तक पहुंचाया। बाहरी आक्रान्ताओं के डर से भयभीत जनता को मानो संजीवनी प्राप्त हुई।

ज्ञानेश्वरी ग्रंथ में नौ हजार ओवियों (श्लोकों) के माध्यम से श्रीमद्भगवद्गीता के तत्वज्ञान का रसपूर्ण विवरण किया गया है। इस ग्रंथ के अंत में भक्तों को सार रूप में ज्ञान देने के उद्देश्य से पसायदान की रचना की गई । पसायदान ने नौ ओवियों के माध्यम से समस्त विश्व के कल्याण का संदेश दिया है। विश्व कल्याण की भावना परिपूर्ण होने के कारण यह वैश्विक प्रार्थना है।

सर्वप्रथम भक्त ज्ञानेश्वरजी ने ज्ञानेश्वरी ग्रंथ के रूप में विस्तृत 'वाक् यज्ञ' से विश्वव्यापी ईश्वर को संतुष्ट होने का अनुरोध किया है । 'वाक् यज्ञ' अर्थात शब्द रूपी तत्वज्ञान का विवरण निष्काम भावना से करना। मात्र सोलह वर्ष के ज्ञानेश्वर माउली ने भारतीय वेद परंपरा की प्रस्थान त्रयी अर्थात उपनिषद, ब्रह्म सूत्र एवं श्रीमद्भगवद्गीता का गहन अध्ययन कर ज्ञानेश्वरीग्रंथ की रचना की। इस चिंतन की भक्ति पूर्ण अभिव्यक्ति के पश्चात उन्होंने ईश्वर से प्रसाद देने का अनुरोध किया है । यही प्रसाद पसायदान है । विश्वात्मक देव अर्थात ज्ञानेश्वरजी के गुरू निवृत्तिनाथजी । भारतीय ज्ञान साधना में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि गुरु ही शिष्य को तत्वज्ञान के गहन अर्थ से परिचित कराते हैं। वे अपने उदाहरण से उस तत्वज्ञान को अपने जीवन में उतार कर शिष्य के समक्ष श्रेष्ठतं उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

गुरू वंदन के पश्चात भक्तों के लिए तीन महत्वपूर्ण आशीर्वाद मांगे गए हैं । प्रथम दुष्ट अंत:करण वाले मनुष्यों की कुटिलता का अंत, फिर उनमें सत् कार्य करने की इच्छा की जागृति का अनुरोध किया है। सत्कार्य प्रवण व्यक्तियों के बीच मैत्रीपूर्ण भावना रहे ऐसा अंत में कहा है। हर व्यक्ति के संस्कारित उन्नयन के साथ ही वैश्विक एकता व सौहार्द की गुहार लगाई गई है।

सद्गुण एवं संस्कार के प्रसार हेतु भी तीन प्रार्थनाएँ की गई हैं। पहला अनुरोध पाप व अज्ञान रूपी अंधकार का अंत करना है, तत्पश्चात ज्ञान-सूर्य प्रकाशित हो सकता है । यहाँ स्वधर्माचरण पर बल दिया गया है, जिसमें स्वधर्म अर्थात स्व-कर्तव्य, चार आश्रमों के परिपेक्ष्य में योग्य हो । तीसरी विनती समस्त प्राणी जगत की

प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से संबंधित है । व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग करते हुए समस्त विश्व की खुशहाली के लिए स्वधर्म का पालन करने की बात की गई है । स्वकर्म एवं स्वकर्तव्य के आधार पर विश्व कल्याण की भावना व्यक्त की गई है।

स्वधर्म जागरण यह निरंतर, अविरत चलने वाली प्रक्रिया है । इस परिणाम की प्राप्ति के लिए बच्चों को आवश्यक ज्ञान व संस्कार सिखाने होंगे। इस कार्य को करने के लिए तत्वनिष्ठ, ज्ञान सम्पन्न गुरूजनों के समूह पूरे विश्व में उपलब्ध होने चाहिए । ज्ञानेश्वरजी ने तो गुरूजनों के वर्षाव की मांग की है, अर्थात बड़ी संख्या में गुरूओं की उपलब्धता की प्रार्थना की है । ये गुरूजन अविरत जन-संपर्क, प्रबोधन, चिंतन, अध्यापन का कार्य अथक परिश्रम से करते रहें। ज्येष्ठ और श्रेष्ठ गुरूजनों के मार्गदर्शन से ही उत्तम, गुण सम्पन्न समाज का निर्माण कर, उचित आदर्शों को प्रस्थापित किया जा सकता है।

भारत में चली आ रही गुरु परंपरा को ज्ञानेश्वरजी ने तीन अलंकारों से गौरवान्वित किया है — आरव अर्थात वृक्षों से सुशोभित उपवन; चिंतामणि अर्थात सर्व इच्छाओं की पूर्ति करने वाला तथा अर्णव अर्थात समुद्र । गुरु अपने अलौकिक, ज्ञानरूपी प्रकाश द्वारा भक्तों को सुसंस्कारित करते हुए सर्वत्र भ्रमण करते हैं, अर्थात वे लोगों को जोड़ते हुए सदैव चलते रहते हैं। उनका ध्येय उत्तम समाज रचना का निर्माण करना है, जहाँ हर मनुष्य सुख और शांति का अनुभव करे । कल्पतरु वृक्ष की भाँति उनकी सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है। गुरु अपने शिष्यों के लिए भक्ति रूपी अमृत का सागर हैं।

तत्पश्चात गुरु के गुणों का वर्णन किया गया है। गुरुजन पौर्णिमा सदृश के चंद्र के समान शीतलता की वर्षा तो करते हैं, परंतु उनमें चंद्र की भाँति कलंक नहीं होते । मार्तंड अर्थात सूर्य समान ज्ञानतेज से वे मंडित हैं, परंतु उनमें सूर्य की दाहकता का अभाव है । वे अक्षय एवं परिपूर्ण हैं। वे सदा तृप्त, शांत, सच्चिदानंद रूप रहते हैं। ऐसे संतों की संगति अगर हर व्यक्ति को प्राप्त होगी, तो वे भी उनके ज्ञान द्वारा लाभान्वित होंगे।

संत सज्जनों द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने पर सम्पूर्ण विश्व चिर शांति, अखंड सुख का अनुभव करेगा। मनुष्य सर्वव्यापी आदि-पुरुष अर्थात ईश्वरतत्व का भजन-पूजन करते हुए, सभी कर्तव्यों का पालन कर सन्मार्ग पर अग्रसर होगा। समाज के सभी घटक परस्पर सहयोग द्वारा मैत्रीपूर्ण संबंध रखते हुए प्रगति की राह पर चलेंगे। चरैवेति चरैवेति का मंत्र अपनाकर अखंडित आगे बढ़ते रहेंगे।

हमें ज्ञात है कि ग्रंथ अध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञानेश्वरजी यह अधोरेखित करना चाहते हैं कि ग्रंथ ही हमारा जीवन बन जाए । ग्रंथ में विषद तत्वज्ञान द्वारा मनोधैर्य बढ़ता है, सभी शंकाओं का समाधान होता है, बुद्धि 'निश्चय करने में' सक्षम बनती है । विद्वानों का मानना है कि अद्वैत तत्वज्ञान की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए । श्रीमद्भगवद्गीता और ज्ञानेश्वरी ग्रंथ इस ज्ञान के पथ प्रदर्शक हैं। इस ज्ञान द्वारा ही मनुष्य विजयी हो सकेगा, सुख दुखों का सामना कर सकेगा और आगामी संकटों का, चुनौतियों का मुकाबला करने में उसे मदद मिलेगी।

अंततः गुरु विश्वेश्वर, शिष्य ज्ञानेश्वर के ज्ञान-प्रतिपादन से प्रसन्न होकर कृपा प्रसाद देने का आश्वासन देते हैं। समस्त मानव जन, ज्ञान रूपी नींव को आधार मानते हुए बुरे मार्ग से निवृत्त होकर सत्मार्ग पर प्रवृत्त होने का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। ज्ञानेश्वर माउली वस्तु और व्यक्ति निरपेक्ष आनंद में स्थित हो जाते हैं, अर्थात उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

हिंदू : एक शब्द, धर्म या परंपरा

शुभांगनी असाटी

पूरे इतिहास में, कुछ ऐसे शब्द हैं, जो वास्तव में प्रभावशाली हैं और आपको रुकने और विचार करने पर मजबूर करते हैं। वे सिर्फ एक नाम या शब्द नहीं हैं; वे दर्शाते हैं कि हम कौन हैं ? और हम कहाँ से आए हैं ? इनमें से एक शब्द है "हिंदू" यह सिर्फ एक शब्द नहीं है, बल्कि यह ताकत, विविधता, विश्वास, मूल्यों, परंपराओं और ज्ञान का एक शक्तिशाली अनुस्मारक है। तो इससे पहले कि हम इस विषय पर आएं, आइए बात करें कि 'हिंदू' शब्द कहाँ से आया है।

बहुत समय पहले, भारत में एक बड़ी नदी थी, जिसका नाम 'सिंधु' था। इस नदी के आसपास रहने वाले लोगों को संस्कृत भाषा में 'सिंधु' कहा जाता है, वर्षों से यह शब्द बदलकर 'हिंदू' हो गया है। और यह उस क्षेत्र के लोगों और उनके जीवन यापन के तरीके का प्रतिनिधित्व करता है। "हिंदू" शब्द महज एक शब्द से कहीं अधिक है। यह विश्वासों, परंपराओं और इतिहास के एक पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करता है, जो वास्तव में लंबे समय से मौजूद हैं। इन परंपराओं ने हजारों वर्षों से दुनिया भर में बहुत से लोगों के जीवन को प्रभावित करने के साथ-साथ समाजों को भी प्रभावित किया है।

हिंदू शब्द एक बड़े, रंगीन इंद्रधनुष की तरह है, जो कई अलग-अलग रंगों से मिलकर बना है। प्रत्येक रंग एक अलग विश्वास या अभ्यास का प्रतिनिधित्व करता है, और ये सभी रंग मिलकर इस दुनिया को सुंदर और सार्थक बनाते हैं।

इस "हिंदू" शब्द के साथ हमने एक लंबा सफर तय किया है, ऋग्वेद और सामवेद से लेकर दुनिया के सबसे लंबे लिखित संविधान तक, 4000 साल पहले पुष्पक विमान के निर्माण से लेकर आज मिराज और तेजस के निर्माण तक। चंद्रमा और मंगल की पूजा से लेकर आज चंद्रयान और मंगलयान मिशन के माध्यम से चंद्रमा और मंगल पर जाने तक का सफर बहुत ही प्रशंसनीय और उत्साह से परिपूर्ण रहा है।

हम "हिंदू" कहलाने के लिए बहुत आभारी हैं, क्योंकि इससे पता चलता है कि हम कितने स्थिति-स्थापक और अनुकूलनीय हैं। हमने पिछले कुछ वर्षों में बहुत सी चुनौतियों और परिवर्तनों का सामना किया है, लेकिन हमने हमेशा अपनी परंपराओं को जीवित रखने का तरीका ढूंढा है। "हिंदू" होने का मतलब सिर्फ अतीत की ओर देखना नहीं है। यह आज की दुनिया में हमारी परंपराओं को प्रासंगिक बनाए रखने के बारे में भी है। यह हमारे ज्ञान और मूल्यों को दूसरों के साथ साझा करने और दुनिया को सभी के लिए एक बेहतर जगह बनाने के बारे में है। इसलिए, जब हम "हिंदू" शब्द के बारे में सोचें, तो उस समृद्धि और सुंदरता को याद रखें, जिसका यह प्रतिनिधित्व करता है। अपनी विरासत और परंपरा पर गर्व करें, जो हम अपने साथ लेकर चलते हैं। और अपनी परंपराओं और मूल्यों का उपयोग दूसरों को प्रेरित करने और उनका उत्थान करने के लिए करें, जैसे उन परंपराओं ने हमें इतने लंबे समय से प्रेरित किया है।

मेरे अस्तित्व के हर तंतु में, मेरे विचारों और कार्यों में, हिंदू धर्म मुझे अपने नाम की तरह परिभाषित करता है। "हिंदू" धर्म कुछ महत्वपूर्ण विचारों का प्रतिनिधित्व करता है, जो लंबे समय से मौजूद हैं। ये विचार मार्गदर्शक सितारों की तरह हैं जो लोगों को अच्छा जीवन जीने और आंतरिक शांति पाने में मदद करते हैं।

हिंदू धर्म में चार वेद हैं: - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद, ये वेद संस्कृत में लिखे गए प्राचीन पवित्र ग्रंथ हैं। इनमें जीवन के अर्थ पर गहन विचारों के साथ-साथ

विभिन्न देवताओं को समर्पित मंत्र, प्रार्थनाएं और अनुष्ठान शामिल हैं। सदियों से, हिंदू धर्म विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों से नए विचारों और प्रथाओं को अवशोषित करते हुए विकसित हुआ। उपनिषद, लगभग 800 ईसा पूर्व के दार्शनिक ग्रंथ हैं जो कि वास्तविकता, आत्मा और परमसत्य (ब्रह्म) के बारे में गहरे प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

500 ईसा पूर्व और 500 ईस्वी के बीच लिखी गई महाकाव्य, जैसे रामायण और महाभारत, हमारे देवताओं की कालजयी कहानियाँ सुनाती हैं। इनमें हिंदू पौराणिक कथाओं में पूजनीय भगवान राम और भगवान कृष्ण की शिक्षाएँ शामिल हैं। गीता की शिक्षाओं का आध्यात्मिक सार हम सभी के मन में गूंजता है। श्रीमद्भगवद्गीता का एक प्रसिद्ध श्लोक- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं, "तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करना ही है। कर्मों के फल पर तुम्हारा अधिकार नहीं है। अतः तुम निरंतर कर्म के फल पर मनन मत करो और अकर्मण्य भी मत बनो।"

इन्हीं विचारों में से एक है "धर्म"। धर्म बताता है कि क्या सही और निष्पक्ष है। और दूसरों के साथ दया और सम्मान से पेश आना। अन्य विचार "कर्म" है, जो कहता है कि अच्छे कर्मों का फल अच्छा होता है और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है।

हिंदू धर्म की कहानी पीढ़ियों से चली आ रही प्राचीन परंपराओं, विविध मान्यताओं और शाश्वत ज्ञान की कहानी है। यह सब 4,000 वर्षों से अधिक समय से शुरू होता है, सिंधु घाटी की प्राचीन सभ्यता से, जहाँ लोग सिंधु नदी के किनारे रहते थे, जो अब आधुनिक पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत है। इस प्रारंभिक सभ्यता ने उन्नत शहर और एक जटिल सामाजिक संरचना विकसित की। वे शिव और मातृ देवी हिंदू देवताओं से जुड़े प्रतीक त्रिशूल, ओम, तिलक, स्वस्तिक आदि की पूजा करते थे और उनके प्रति श्रद्धा रखते थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया, सिंधु घाटी की सभ्यता लुप्त होती गई, लेकिन इसकी सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं ने हिंदू धर्म बनने की नींव रखी। बाद में आर्य जनजातियाँ 1500 ईसा पूर्व के आसपास भारत में प्रवास कर गईं, और अपने साथ अपनी धार्मिक मान्यताएँ और रीति-रिवाज लेकर आईं, जिससे हिंदू धर्म के प्रारंभिक रूपों को जन्म मिला।

अपने पूरे इतिहास में, हिंदू धर्म ने विभिन्न राज्यों और साम्राज्यों का उत्थान और पतन देखा है। गुप्त साम्राज्य (चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी) हिंदू संस्कृति का स्वर्ण युग था, जो कला, साहित्य और दर्शन में प्रगति द्वारा चिह्नित था। मध्ययुगीन काल में, भक्ति जैसे शैववाद, वैष्णववाद और शक्तिवाद जैसे क्षेत्रों के उदय के साथ हिंदू धर्म में और अधिक परिवर्तन हुए, जिनमें से प्रत्येक एक विशेष देवता की पूजा पर केंद्रित था। भारत में औपनिवेशिक शासन, विशेष रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के तहत, हिंदू धर्म में नई चुनौतियाँ और प्रभाव आए, जिसका उद्देश्य धर्म का आधुनिकीकरण करना था।

आज, हिंदू धर्म दुनिया के सबसे पुराने और सबसे विविध धर्मों में से एक है। इसमें विश्वासों, प्रथाओं और अनुष्ठानों का एक समृद्ध खजाना शामिल है, जो दुनिया भर के लाखों लोगों की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को दर्शाता है। प्राचीन मंदिरों से लेकर जीवंत त्योहारों तक, हिंदू धर्म भारत के सांस्कृतिक ताने-बाने का एक जीवंत और अभिन्न अंग और सभी पृष्ठभूमि के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

हिंदू धर्म सिर्फ भारत के लोगों के लिए नहीं है - यह हर जगह है! इसका असर आप पूरी दुनिया में देख सकते हैं। जैसे कि न्यूयॉर्क में, जहाँ लोग स्टूडियो में योग करते हैं, या बाली में, जहाँ मंदिर हैं। यहाँ तक कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों में भी लोग हिंदू विचारों के बारे में बात करते हैं। और रोजमर्रा की जिंदगी में, आप लोगों को सचेतन अथवा ध्यान का अभ्यास करते हुए देख सकते हैं, जो हिंदू धर्म का एक हिस्सा है। इसलिए, भले ही यह एक ही स्थान से शुरू हुआ हो, आज हिंदू धर्म हर जगह फैला हुआ है और लोगों को प्रेरित कर रहा है।

आज, मैं उन खूबसूरत परंपराओं के बारे में बात करना चाहती हूँ जो भारत को अद्वितीय बनाती हैं। भारत पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही कई परंपराओं का देश है। ये परंपराएँ विशेष धागों की तरह हैं, जो हमारे समाज

को एक सूत्र में पिरोती हैं, हमें हमारे अतीत से जोड़ती हैं और भविष्य के लिए हमारा मार्गदर्शन करती हैं। हमारी परंपराओं में दिवाली, गणपति और होली जैसे रंगीन उत्सवों के साथ-साथ शादी और अंत्येष्टि जैसे महत्वपूर्ण समारोह भी शामिल हैं। ये घटनाएँ हमें एक समुदाय के रूप में करीब लाती हैं और हमें हमारे साझा मूल्यों की याद दिलाती हैं। लेकिन परंपराएँ केवल पुराने रीति-रिवाजों से कहीं अधिक हैं- वे हमारी संस्कृति के जीवंत हिस्से हैं, जो समय के साथ बदलती और बढ़ती हैं। वे हमें यह याद रखने में मदद करती हैं कि हम कहाँ से आए हैं और साथ ही आधुनिक दुनिया के साथ तालमेल भी बैठाती हैं। आज की भागदौड़ भरी दुनिया में हमारी परंपराएं हमें स्थिरता का एहसास कराती हैं। वे हमें दया और सम्मान जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों की याद दिलाती हैं। अंत में, आइए उन परंपराओं का जश्न मनाएं और संरक्षित करें, जो भारत को विशेष बनाती हैं। अपनी सांस्कृतिक विरासत को कायम रखकर हम अपने लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

मैं आपके साथ एक कविता साझा करना चाहती हूँ, जो "हिंदू" शब्द की सुंदरता और हमारी समृद्ध परंपराओं की गहराई को दर्शाती है-

मैं उस देश की नागरिक हूँ,

जहाँ छत्रपति शिवाजी जैसे महाराज और सम्राट अशोक जैसे राजा थे।

मैं उस देश की नागरिक हूँ,

जहाँ 50 मील पर रंग, रूप, पहनावा और धर्म बदल जाता है।

मैं उस देश की नागरिक हूँ,

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया पाई जाती है।

मैं उस देश की नागरिक हूँ,

जहाँ अपने भूगोल से पहले इस ब्रह्मांड के भूगोल को समझा जाता है।

श्री गणपति पूजा, परंपरा एवं पद्धति

सुश्री सायली गोडबोले

श्री गणेशजी (सौजन्य से - श्री प्रशांत खैरनार)

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

इस श्लोक मे गणेशजी का वर्णन किया है : कोटि सूर्य का प्रकाश, ज्ञान, तेज जिसके पास है, वो अगर मेरे साथ रहें, उनका आशीर्वाद मुझे मिले, तो मुझे जीवन में कोई संकट नहीं आएगा। अगर आया तो उसका निवारण स्वयं गणेशजी करेंगे। इसीलिए उनको 'विघ्नहर्ता' भी कहते हैं।

भारत में धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसमें श्री गणपति पूजा का विशेष महत्व है। गणपति, जिन्हें गणेश, विनायक, और विघ्नहर्ता के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू धर्म में प्रथम पूज्य देवता माने जाते हैं। गणपति ये बुद्धि के देवता हैं, इनकी उपासना करने से बुद्धि तेज होती है। हमारी परंपरा है कि बचपन से ही बच्चों को गणेशजी, सरस्वतीजी और गुरुजी के श्लोक पठन से पाठशाला शुरू होती है। इन श्लोकों के उच्चारण से मन में शांति और जीवन में सकारात्मकता का प्रवाह होता है।

सांस्कृतिक महत्व

श्री गणेश पुराण के अनुसार गणेशजी के बालक रूप को विनायक कहते हैं। भारत के दक्षिणी भागों में विनायक यानी गणेशजी के बाल रूप की भी पूजा होती है। पश्चिमी भागों में जैसे कि महाराष्ट्र मे गजानन की पूजा होती है। गजवदन होने के कारण गणेशजी को गजानन, गणपति ये नाम मिले। वो बुद्धि, विद्या, प्रज्ञा के देवता हैं। साथ ही गज जैसी शक्ति और ताकत उनके पास है। वो शक्तिमान हैं। इसीलिए बुद्धि और शक्ति समन्वय देवता श्री गणेशजी सर्व कार्यो मे प्रथम पूजे जाने वाले एकमेव देवता हैं।

गणपति पूजा की परंपरा का आरंभ प्राचीन काल से ही माना जाता है। पुराणों और विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में गणपति की महिमा और उनकी पूजा के महत्व का उल्लेख मिलता है। गणेश चतुर्थी का पर्व विशेष रूप से गणपति की पूजा के लिए समर्पित है, जो हर वर्ष भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी को मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार है, जो भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है। यह पर्व पूरे भारत में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी से दस दिनों का गणेश उत्सव शुरू होता है। गणेश उत्सव ने भारतीय संस्कृति में अपनी विशेष पहचान बनाई है।

गणपति पूजा की परंपरा और पद्धति का विस्तार से वर्णन करना आवश्यक है, जिससे इसके धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं को भली-भांति समझा जा सके।

गणपति पूजा की परंपरा में भगवान गणेश की मूर्ति की स्थापना की जाती है। यह मूर्ति मिट्टी, प्लास्टर ऑफ

पेरिस या अन्य धातुओं से बनाई जाती है। लोग अपने घरों, मंदिरों और सार्वजनिक पंडालों में गणपति की मूर्ति स्थापित करते हैं और पूरे विधि-विधान से पूजा करते हैं। गणपति आगमन के साथ ही घर में चैतन्य, आनंद और सकरात्मक ऊर्जा आ जाती है। इस परंपरा का प्रमुख उद्देश्य भगवान गणेश की कृपा प्राप्त करना और जीवन से सभी विघ्नों को दूर करना है।

गणपति पूजा की पद्धति अत्यंत विस्तृत और शास्त्रीय होती है। इसमें निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाता है:

मूर्ति स्थापना: पूजा के आरंभ में भगवान गणेश की मूर्ति को किसी पवित्र स्थान पर स्थापित किया जाता है। मूर्ति की स्थापना के लिए एक स्वच्छ और पवित्र स्थान का चयन किया जाता है, जिसे वस्त्र और फूलों से सजाया जाता है।

आवाहन और प्राण प्रतिष्ठा: गणपति को आवाहित करने के लिए मंत्रों का उच्चारण किया जाता है। इसके बाद प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, जिसमें मूर्ति में भगवान गणेश के प्राणों का आह्वान किया जाता है। यह क्रिया विशेष मंत्रों और हवन के साथ की जाती है।

षोडशोपचार पूजा और आरती: गणपति की पूजा 16 उपचारों के साथ की जाती है, जिन्हें षोडशोपचार कहा जाता है। इनमें आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, आरती, मंत्र पुष्पांजलि और प्रदक्षिणा शामिल हैं। पूजा के दौरान गणपति के मंत्रों का जाप किया जाता है। इनमें प्रमुख रूप से "ॐ गं गणपतये नमः" और "ॐ वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ" मंत्रों का जाप और अथर्वशीर्ष का पाठ किया जाता है।

प्रसाद वितरण: पूजा के अंत में भगवान गणेश को नैवेद्य (भोग) अर्पित किया जाता है और बाद में इस प्रसाद को भक्तों में बाटा जाता है। गणपति को विशेष रूप से मोदक, पंचखाद्य, लड्डू, फल अर्पित किए जाते हैं।

विसर्जन: गणेश चतुर्थी के दौरान गणपति की मूर्ति को एक निश्चित अवधि (जो 1.5 दिन से लेकर 11 दिन तक हो सकती है) तक पूजा के बाद जल में विसर्जित किया जाता है। लेकिन ये उर्जा सालभर घर में सकरात्मक विचार रखती है। विसर्जन के दौरान, भक्त गणपति बप्पा मोरया, अगले वर्ष तू जल्दी आ के जयकारे लगाते हैं। यह उत्सव के समापन का प्रतीक है और इसमें अगले वर्ष गणपति के पुनः आगमन की कामना की जाती है।

सामाजिक महत्व: गणपति का सामाजिक महत्व भी उल्लेखनीय है। गणेश चतुर्थी का पर्व सामूहिकता और सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है। इस पर्व के दौरान लोग मिलजुलकर पूजा-अर्चना करते हैं और सामाजिक बंधनों को मजबूत बनाते हैं। गणपति उत्सव का आयोजन विभिन्न समुदायों और वर्गों के लोगों को एक साथ लाता है, जिससे सामाजिक समरसता और एकता को बल मिलता है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गणेश चतुर्थी को एक सार्वजनिक उत्सव के रूप में स्थापित किया था, ताकि समाज में राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता संग्राम के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सके। तिलक का उद्देश्य था कि यह पर्व लोगों में देशभक्ति की भावना को जागृत करे और सामूहिकता की भावना को मजबूत बनाए।

हम हर साल **सी-डैक** में **गणेश उत्सव** खुशी और उल्हास से मनाते हैं। इस साल गणेश उत्सव में सभी कर्मचारी अथर्वशीर्ष का पाठ करने के लिए बड़े उत्साह से शामिल हुए थे।

गणपति अथर्वशीर्ष का अर्थ देखेंगे तो, थर्व का अर्थ है हिलना। अथर्व का अर्थ है ना हिलनेवाला यानी कि स्थिर। मानव का मस्तिष्क मस्तक मे होता है। अगर मस्तक ठीक तो बुद्धि स्थिर। अथर्वशीर्ष स्तोत्र पठन से बच्चों की बुद्धि स्थिर होती है। पढ़ाई अच्छी तरह से करने मे मदद मिलती है और आगे जाकर वो संस्कारित, सुजान और सुसंस्कृत नागरिक बनते हैं। ये अब विज्ञान की दृष्टि से भी मान्य है।

पर्यावरणीय पहलू

गणपति पूजा का पर्यावरणीय पहलू भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक समय में प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों के कारण जल प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है। इस समस्या के समाधान के लिए पर्यावरणवादी और समाजसेवी मिट्टी की मूर्तियों के उपयोग पर जोर दे रहे हैं। इससे न केवल जल प्रदूषण को रोका जा सकता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

संकल्प

गणपति पूजा परंपरा और पद्धति भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। यह न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। गणपति की पूजा से व्यक्ति को मानसिक शांति, समृद्धि और समस्त कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। गणपति पूजा के माध्यम से हम भारतीय परंपराओं और संस्कारों को संजोकर रखते हैं और उन्हें अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। इस परंपरा का संरक्षण और संवर्धन हमारी जिम्मेदारी है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी इन सांस्कृतिक धरोहरों से लाभान्वित हो सकें।

दस दिन आए हुए गणेशजी इतनी सकरात्मक ऊर्जा देते हैं, तो क्यों ना हम भी हमेशा हमारे साथ जुड़े हुए सब लोगों से अच्छा बर्ताव करें, अपनी बुराइयाँ निकाल दें और सबका जीवन आनंद से भरने की कोशिश करें। श्री गणेशजी से प्रार्थना है कि इस संकल्प में उनका आशीर्वाद सदैव हमारे साथ रहे और ये विश्व आनंद से भरे, हर एक जीव सुख, समाधान और शांति से जीवन बिताए।

पारिवारिक स्तंभ

मेरी माँ

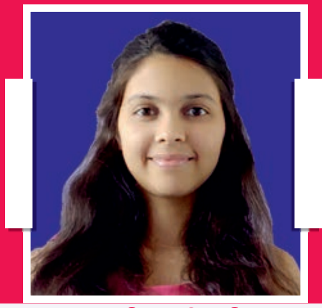

देवांशी खरे
पुत्री श्री मनोज खरे

मेरे हर सवाल का जवाब है तू माँ
मेरी हर सफलता का हिसाब है तू माँ

मेरे हर दर्द की दवा है तू माँ
मेरी अकेली परवाह करने वाली है तू माँ

तेरी हर डाँट की कदर है मुझे माँ
तेरी हर बात का आदर है मुझे माँ

दिन रात हम सबके लिए जीती है तू माँ
कितनी थकान के घूँट बिना बताए पीती है तू माँ

मेरे जीवन का सूरज चाँद है तू माँ
सुबह तुझसे शुरू रात तेरे बिना अधूरी है माँ

तेरे जैसा प्यारा कोई नहीं है माँ
तू मेरे जीवन का सहारा है माँ

मेरे गलत पेश आने पर भी प्यार जताया तूने माँ
माफी देना मुझे
बहुत सताया है तुझे ना मैंने माँ

तेरे बिना कुछ नहीं हूँ मैं माँ
मेरे लिए तुझे 100 साल रहना पड़ेगा माँ

प्यार बहुत है मुझे तुझसे माँ
बस जताना नहीं आता पर
मेरे जीने की वजह है तू माँ
मेरे जीने की वजह है तू माँ

कु. श्रुति किशोर पाटील
पुत्री श्री किशोर पाटील

चि. आयुष बोराडे
पुत्र श्री राहुल बोराडे

कु. जिया रोशन सोभनी
पुत्री सुश्री दीप्ति सोभनी

कु. पूर्वा गोडबोले
पुत्री सुश्री सायली गोडबोले

चि. यायिन सिंह
पुत्र श्री योगेश सिंह

कु. लास्या येनिशेट्टी
पुत्री सुश्री स्वप्ना येनिशेट्टी

कु. आरना गुप्ता
पुत्री श्री मनीष गुप्ता

चि. परम तांबे
पुत्र सुश्री प्रितम तांबे

सीडैक पुणे केंद्र में लागू हिंदी प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएँ

मूल रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए नकद-पुरस्कार प्रोत्साहन योजना

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 16-02-1988 के कार्यालय ज्ञापन **सं. II/12013/3/87-रा.भा.** (क-2) द्वारा केंद्र-सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रतिवर्ष उनके द्वारा हिंदी में किए गए कार्य के आधार पर नकद पुरस्कार देने की योजना लागू की गई है। कार्यकारी निदेशक महोदय ने उक्त योजना को सीडैक पुणे केंद्र में भी लागू किया है । केवल वही अधिकारी / कर्मचारी इस पुरस्कार के पात्र होंगे, जो वर्ष में कम-से-कम 20,000 (बीस हज़ार) शब्द हिंदी में लिखें / टाइप करें । इसमें मूल-टिप्पण और प्रारूपण के अलावा हिंदी में किए गए कार्य, जिनका सत्यापन किया जा सके, जैसे रजिस्टर में प्रविष्टियाँ, सूची-तैयार-करना, लेखा का काम, आदि भी शामिल किए जाएंगे । सदस्यों को प्रोत्साहन राशि निम्नानुसार दी जाएगी :-

1) प्रथम-पुरस्कार (2-पुरस्कार) :- प्रत्येक **रु. 5000/-**

2) द्वितीय-पुरस्कार (3-पुरस्कार) :- प्रत्येक **रु. 3000/-**

3) तृतीय-पुरस्कार (5-पुरस्कार) :- प्रत्येक **रु. 2000/-**

सीडैक पुणे केंद्र द्वारा वार्षिक पत्रिका 'सुधा' में प्रकाशित लेख हेतु

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए सीडैक पुणे केंद्र की ओर से 'सुधा' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर किया जाएगा। इस पत्रिका में निम्नलिखित स्तंभ होंगे-

- तकनीकी लेख संकलन
- साहित्य यात्रा
- भाषा विमर्श
- यात्रा संस्मरण
- कविता
- कथा / कहानी
- चित्रकला

प्रत्येक स्तंभ मे प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ दो लेख/रचना के लिए दो रचनाकारों को अलग अलग ₹ **1000/-** का पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

सीडैक पुणे केंद्र स्तरीय राजभाषा शील्ड पुरस्कार

➢ **हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने वाले समूह को-**

- सीडैक पुणे केंद्र का पूर्णतः हिंदी में भरे हुए कोई भी प्रपत्र (Form) पर हिंदी में टिप्पणी करके सक्षम प्राधिकारी को अग्रेसित करने पर 1 अंक प्रदान किया जाएगा।
- समूह के द्वारा प्रकाशित होने वाले प्रत्येक बैनर एवं पोस्टर के हिंदी अथवा द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) के लिए 1 अंक प्रदान किया जाएगा।
- सीडैक पुणे केंद्र का कोई भी पूर्णतः हिंदी में लिखा हुआ प्रपत्र (document) / आंतरिक टिप्पण (Internal Note) आदि जिस पर विभागाध्यक्ष स्तर पर अनुमोदन हो - 2 अंक; जिस पर कार्यकारी निदेशक स्तर पर अनुमोदन हो - 3 अंक; जिस पर महानिदेशक स्तर पर अनुमोदन हो - 4 अंक एवं जो सीडैक पुणे केंद्र से बाहर प्रेषित किया गया हो - 5 अंक प्रदान किया जाएगा।
- हिंदी प्रोत्साहन की किसी प्रतियोगिता में समूह से कम से कम एक अथवा अधिकतम सदस्य द्वारा प्रतिभागिता करने पर समूह को प्रत्येक कार्यक्रम में प्रतिभागिता के लिए 1 अंक प्रदान किया जाएगा।
- समूह के किसी सदस्य द्वारा हिंदी प्रोत्साहन की केंद्र स्तरीय या मुख्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम आने पर 4 अंक, द्वितीय आने पर 3 अंक, तृतीय आने पर 2 अंक और प्रोत्साहन पाने पर 1 अंक प्रदान किया जाएगा।
- टोली (टीम) बनाकर होने वाली प्रतियोगिताओं में सदस्य को अपने समूह (ग्रुप) की टोली के साथ ही प्रतिभागिता करनी होगी।
- छोटे समूह अर्थात जिसमें सदस्यों की संख्या 10 तक है उन्हें 50 अंक और जिसमें सदस्यों की संख्या 11 से 20 तक है उन्हें 30 अंक अतिरिक्त दिए जाएंगे।
- समूह के द्वारा इस पुरस्कार को प्राप्त करने की न्यूनतम अर्हता 400 अंक होगी। एक से अधिक समूहों द्वारा अर्हता प्राप्त करने की स्थिति में सबसे अधिक अंक पाने वाले एक समूह को यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

➢ टिप्पणी: उक्त पुरस्कार प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा प्रदान किया जाएगा।

सीडैक पुणे केंद्र स्तरीय राजभाषा शील्ड पुरस्कार

➢ **हिंदी की प्रतियोगिताओं/कार्यों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले सदस्य को-**

- हिंदी की किसी भी पत्रिका में लेख भेजने पर 4 अंक प्रदान किए जाएंगे।
- हिंदी प्रोत्साहन की किसी भी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने पर प्रत्येक प्रतिभागिता के लिए 1/2 अंक प्रदान किया जाएगा।
- सीडैक पुणे केंद्र का द्विभाषी कोई भी प्रपत्र (Form) हिंदी में भरकर हिंदी मे ही हस्ताक्षर करके सक्षम प्राधिकारी को अग्रेसित करने पर 1 अंक प्रदान किया जाएगा।
- हिंदी में लिखे गए ई-मेल की संख्या यदि कुल भेजे गए ईमेल का 25% हो तो 4 अंक, 50% हो तो 5 अंक, 75% हो तो 6 अंक और 100% हो तो 7 अंक प्रदान किए जाएंगे।
- हिंदी में लिखा हुआ दस्तावेज/आंतरिक पत्र आदि जिस पर विभागाध्यक्ष स्तर पर अनुमोदन हो, - 2 अंक; जिस पर कार्यकारी निदेशक स्तर पर अनुमोदन हो - 3 अंक; जिस पर महानिदेशक स्तर पर अनुमोदन हो - 4 अंक एवं जो सीडैक पुणे केंद्र से बाहर प्रेषित किया गया हो - 5 अंक प्रदान किया जाएगा।
- हिंदी प्रोत्साहन की केंद्र स्तरीय या मुख्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम आने पर 4 अंक; द्वितीय आने पर 3 अंक; तृतीय आने पर 2 अंक और प्रोत्साहन प्राप्त करने पर 1 अंक प्रदान किया जाएगा। इसके अंतर्गत किसी सदस्य को अधिकतम 25 अंक प्रदान किए जाएंगे। संयुक्त रूप से विजेता (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) होने की स्थिति में निर्धारित अंक विजेता सदस्यों में समान रूप से विभाजित कर दिए जाएंगे।
- इस पुरस्कार को प्राप्त करने की न्यूनतम अर्हता 75 अंक होगी। एक से अधिक सदस्यों द्वारा अर्हता प्राप्त करने की स्थिति में सबसे अधिक अंक पाने वाले 3 सदस्यों को यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

टिप्पणी: उक्त पुरस्कार प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा प्रदान किया जाएगा।

सीडैक पुणे केंद्र स्तरीय हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता परिणाम वर्ष-2023

प्रतियोगिता : स्वरचित कविता

श्री सुबोध पाण्डेय - **प्रथम**

श्री विनीत सिंह - **द्वितीय**

सुश्री नीतू वर्मा - **तृतीय**

सुश्री गीता गोसावी - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : निबंध लेखन

श्री विमल गंगराड़े - **प्रथम**

सुश्री दीपा पुसालकर - **द्वितीय**

सुश्री जयश्री पोकळे - **तृतीय**

श्री सुनील तेजराम भिसीकर- **प्रोत्साहन**

सुश्री चारुलता सावरकर - **प्रोत्साहन**

मो. अजीज मालिक - **प्रोत्साहन**

श्री नितेशकुमार हरणे - **प्रोत्साहन**

सुश्री नीतू वर्मा - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : वाद-विवाद प्रतियोगिता

श्री सुबोध पाण्डेय
एवं सुश्री नीतू वर्मा - **प्रथम**

सुश्री नीलिमा साहू
एवं श्री नितेशकुमार हरणे - **द्वितीय**

श्री चितरंजन सिंह
एवं श्री वर्धमान पारख - **तृतीय**

प्रतियोगिता : हिंदी अनुवाद सह टंकण

नितेशकुमार हरणे - **प्रथम**

सुश्री जयश्री पोकळे - **द्वितीय**

सुश्री वैशाली सतपुते - **तृतीय**

सुश्री सुनैना शर्मा - **प्रोत्साहन**

श्री अमन कुमार सक्सेना - **प्रोत्साहन**

सुश्री अंशुमा आचार्य - **प्रोत्साहन**

श्री विनीत सिंह - **प्रोत्साहन**

मो. अजीज मालिक - **प्रोत्साहन**

श्री महेश मेनन - **प्रोत्साहन**

सुश्री नीतू वर्मा - **प्रोत्साहन**

श्री वैनेतेय कोराटकार - **प्रोत्साहन**

सुश्री नीलिमा साहू - **प्रोत्साहन**

श्री योगेश सिसोदिया - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : घोष-वाक्य/ब्रीद-वाक्य

श्री नितेशकुमार हरणे - **प्रथम**

मो. अजीज मालिक - **द्वितीय**

सुश्री दीप्ती राजनकर - **तृतीय**

प्रतियोगिता : पावर प्वॉइंट प्रस्तुति (पीपीटीज)

श्री सुबोध पाण्डेय - **प्रथम**

श्री नितेशकुमार हरणे - **द्वितीय**

श्री अनिल कुमार गुप्ता - **तृतीय**

सुश्री दीप्ती राजनकर - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : श्रुतलेखन एवं सुलेख

सुश्री सायली गोडबोले - **प्रथम**

सुश्री वैशाली जैन - **द्वितीय**

सुश्री अंशुमा आचार्य - **तृतीय**

सुश्री भारती मुसले - **प्रोत्साहन**

सुश्री शीतल निमजे - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : दिए गए चित्र के आधार पर कहानी लेखन

श्री कृष्ण गोपाल गुप्ता - **प्रथम**

श्री सुबोध पाण्डेय - **द्वितीय**

श्री अक्षय विलास फराकटे - **तृतीय**

सुश्री हर्षा उगवे - **प्रोत्साहन**

सुश्री अंशुमा आचार्य - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : शब्द पहेली

सुश्री वैशाली जैन - **प्रथम**

श्री चेतन शर्मा - **द्वितीय**

सुश्री स्नेहा काळगी - **तृतीय**

श्री अमित श्रीवास्तव - **प्रोत्साहन**

श्री विमल गंगराडे - **प्रोत्साहन**

सुश्री नम्रता आयलावर - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : वीडियो प्रस्तुति (परिचर्चा/वार्ता)

श्री नितेश हरणे एवं
श्री सतीश अरभावी - **प्रथम**

सुश्री दीप्ती राजनकर - **द्वितीय**

श्री सुबोध पाण्डेय एवं
सुश्री काजल किरण - **तृतीय**

श्री नितिन कराले - **प्रोत्साहन**

श्री शशांक कुमार - **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : पत्रिका मुख्य पृष्ठ रचना

श्री किशोर पाटील

प्रतियोगिता : एक पंक्ति हिंदी में

10 सदस्य लॉटरी से चुने गए

प्रतियोगिता : अंताक्षरी

सुश्री लेनाली सिंह - **प्रथम**

श्री दया चंद मंडाड - **प्रथम**

मो. अजीज मालिक - **प्रथम**

सुश्री नीतू वर्मा- **प्रथम**

श्री नितेशकुमार हरणे - **प्रथम**

सुश्री नीलिमा साहू - **द्वितीय**

सुश्री दीप्ति राजनकर - **द्वितीय**

सुश्री ज्योति रविन्द्र चौगुले - **द्वितीय**

सुश्री संजना सालुंके - **द्वितीय**

श्री दिनेश शिम्पी - **द्वितीय**

सुश्री अर्पिता कुलकर्णी - **तृतीय**

सुश्री श्वेता पाटील - **तृतीय**

श्री पंकज भालेराव - **तृतीय**

सुश्री मेघना जोग - **तृतीय**

सुश्री सायली घिवार - **तृतीय**

सीडैक मुख्यालय स्तरीय हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता में पुणे केंद्र से विजेता

प्रतियोगिता : हिंदी अनुवाद सह टंकण

सुश्री जयश्री पोकळे- **द्वितीय**

प्रतियोगिता : घोष-वाक्य/ब्रीद-वाक्य

मो. अजीज मालिक- **द्वितीय**

प्रतियोगिता : वाद-विवाद

सुश्री नीलिमा साहू - **द्वितीय**

श्री सुबोध पाण्डेय - **द्वितीय**

प्रतियोगिता : निबंध लेखन

सुश्री जयश्री पोकळे- **तृतीय**

प्रतियोगिता : दिए गए चित्र के आधार पर कहानी लेखन

श्री अक्षय विलास फराकटे - **तृतीय**

प्रतियोगिता : वीडियो प्रस्तुति (परिचर्चा/वार्ता)

श्री शशांक कुमार- **तृतीय**

प्रतियोगिता : स्वरचित कविता

श्री सुबोध पाण्डेय- **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : हिंदी अनुवाद सह टंकण

डॉ अतिउर रहमान खान- **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : पावर प्वॉइंट प्रस्तुति

श्री नितेशकुमार हरणे- **प्रोत्साहन**

प्रतियोगिता : निबंध लेखन

श्री विमल गंगराड़े- **प्रोत्साहन**

"सफलता एक सोच है, अगर
आप चाहें, तो आप उसे
हासिल कर सकते हैं।”

-महात्मा गांधी

राजभाषा गतिविधियाँ

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा- हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

C-DAC/Media and Communications/Sudha/2024

सी-डैक
CDAC
प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
सी-डैक इनोवेशन पार्क, स. न. 34/ब/1, पंचवटी, पाषाण, पुणे - 411008, भारत
C-DAC Innovation Park, S. No. 34/B/1, Panchavati, Pashan, Pune - 411008, India
फोन/Tel: +91-20-2550 3100, फैक्स/Fax : +91-20-2550 3131 www.cdac.in

बेंगलुरू / Bengaluru । चेन्नई / Chennai । हैदराबाद / Hyderabad । कोलकाता / Kolkata । मोहाली / Mohali । मुंबई / Mumbai । नई दिल्ली / New Delhi । नॉएडा / Noida । नॉर्थ ईस्ट (सिलचर) / North East (Silchar) । पटना / Patna । पुणे / Pune । तिरुवनंतपुरम / Thiruvananthapuram